CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

गीताप्रेस, गोरखपुर

[सं० २०५८-५९, सन् २००२]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५, फोन (०५५१) ३३४७२१; फैक्स (०५५१) ३३६९९७

visit us at:www.gitapress.org | e-mail:gitapres@ndf.vsnl.net.in

१. कलकत्ता- पिन-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय १५१, महात्मा गाँधी रोड	© (०३३) २३८६८९४ फैक्स (०३३) २३८०२५१
२. दिल्ली- पिन-११०००६	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; २६०९, नयी सड़क	© (०११) ३२६९६७८ फैक्स (०११) ३२५९१४०
३. पटना- पिन-८००००४	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; अशोकराजपथ, बड़े अस्पतालके सदर फाटकके सामने	© (०६१२) ६६२८७९
४. कानपुर- पिन-२०८००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; २४/५५, बिरहाना रोड	© (०५१२) ३५२३५१ फैक्स (०५१२) ३५२३५१
५. वाराणसी- पिन-२२१००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; ५९/९, नीचीबाग	© (०५४२) ३५३५५१
६. हरिद्वार- पिन-२४९४०१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	© (०१३३) ४२२६५७
७. सूरत- पिन-३९५००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने; भटार रोड	© (०२६१) ३२३७३६२, ३२३८०६५
८. चूरू- पिन-३३१००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क (फुटकर बिक्री-केन्द्र)	© (०१५६२) ५२६७४
९. ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	© (०१३५) ४३०१२२
१०. मुनिकी रेती, ऋषिकेश (केवल फुटकर बिक्री-केन्द्र)		
११. कटक- पिन-७५३०१२	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	
१२. इन्दौर- पिन-४५२००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; जी० ५ श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	© (०७३१) ५२६५१६
१३. हैदराबाद- पिन-५०००९६	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; दूकान नं० ४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	© (०४०) ४७५८३११

स्टेशन-स्टाल [प्लेटफार्म नं० (कोष्ठ) में]

दिल्ली जंक्शन (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर [उ० प्र०] (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय जं० (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना जंक्शन (मुख्य प्रवेशद्वार); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); हावड़ा स्टेशन (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी जं० (मुसाफिरखाना) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

	सन् २००१ तक	१०,२९,०००
ग्यारहवाँ संस्करण	सन् २००२ (प्लास्टिक आवरण, रोमन)	१,००,०००
बारहवाँ संस्करण	सन् २००२ (डीलक्स संस्करण)	१,२५,०००
	योग	१२,५४,०००

मूल्य—डीलक्स संस्करण—चालीस रुपये

प्रकाशक-मुद्रक—गोबिन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् २००२ में सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

साधकका नाम दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती
काशी का पता :→ बी ३/१७५, शिवालाघाट, राजगुरु मठ
दूरभाष ३१५०१३
बक्सर का पता → श्री स्वामी सदानन्द सरस्वती-
-आश्रम
बक्सर-चौसा-राजपथ,
बक्सर-विद्युत शक्ति केन्द्र
तीरभवन से आगे

* गुरु-प्रार्थना-वंदना *

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

** भक्त-वन्दना **

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक-
व्यासाम्बरीष शुक-शौनक भीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्माङ्गदोद्धव विभीषण फाल्गुनादीन् ।
पुण्यानिमान्परम भागवतान्नतोऽस्मि ॥

* * *

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं-
आदित्य वर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वा मृत्युमेति,
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५ "धर्म क्षेत्र-कुरुक्षेत्र" शीर्षक लेख में लिखा है
मैं सहायक लेख है नागरिक "रघुनाथ काव्य कि सहित के
"मैं काव्यपाठ" बाजार या मुहल्ला पाली के टिप्पणी के व्याख्या
(1) पं० विष्णुदत्त शर्मा।
(2) काशी मिस्त्री- अमला शर्मा- गत डी अध्यापक व्यापारी
(3) श्री प्रद्युम्न दत्त सहाय- वकील- कलेक्टर
(4) शिवप्रसाद मुख्तार के आत्मज- रामनाथ मुख्तार- में सहभागी
(5) कामलक्ष्मी के पुत्र- रामचन्द्र ~~शर्मा~~- केशरी
(6) कामू- महादेव के पुत्र- विश्वनाथ केशरी।
(7) सेवकसाहु- कपड़ा- व्यापारी- के पुत्र द्वारिकासाहु- सहयोगी
उनके बड़े भाई केदार बन्धु साहु- सहयोगी (8)
(9) संतदास पटेल- और उनके उपस्थापक रामेश्वर राय "मनोज"
उत्पन्न- सहयोगी- जन्मभूमि राजपुर- रघुनाथपुर तथा नौबतपुर
युवा- अन्त में सर्वोदय कार्यकर्ता- स्वामी गंगा के निकट सहयोगी।
उनका चरित्र आदर्श सेवक का रहा- भगतजी का नाम
में पहले- एक मकान छोड़ा जो पाकिस्तान भागे किसी मुसलमान
की थी। देखकर- आगमन समय में राजपुर से आये भाइयों को।
बुलाकर मालिक को गया श्राद्ध पिण्डदान करवाया तथा कालकूट
के लोगों को भी मदद देकर नाना-नानी को पिण्डदान कराया।
और अपने आदिक लोग- समाजिक रचना- शेष के उपरान्त
के परिवारिक सदस्यों तथा सत्पुत्रों के बदले में- लौटा दिया।
(10) पं० लक्ष्मीकान्त मिश्र स्वतन्त्रता सेनानी- सहभागी पट्टी धनी जमींदार एवं
उच्च कोटि के पहलवान।
(11) महन्त पट्टी के उत्तराधिकारी बसन्त के पोखरा कपड़ा- व्यापार
भी आरम्भ किया।
(12) चन्द्रदेव राय एवं राजाराम- सहयोगी रहे
वरिष्ठ किसान एवं- आसपास के धर्म- ग्रामीण।
प्रत्येक कार्य सबके हितकी दृष्टिसे ही करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः । अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ।८।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१६

(१२) अन्तकालके वरिष्ठ सहयोगी श्री जगन्नाथ केशरी
की वाले प्रयागचौक वकील

(१३) उनके रामो भाई मातृदेवी केशरी एवं रामनरेश केशरी
उनके पुत्र महावीर केशरी जो आजीवन में काशी कॉलेज
के प्राचार्य भी रह चुके हैं। जी केशरी... के भी
सहपाठी..

(१४) सीताराम साहू वकील के उत्तराधिकारी
श्री भोलानाथ केशरी मेरे गाढ़े दिनों के सहायक
और बड़ी सम्हाले हमेशा की मददगार रहे।

(१५) मदनमोहन शर्मा, कालसर्प के वरिष्ठ भाकपाई.
उनके पुत्र रामेश्वर नाथ शर्मा मेरे सहपाठी रहे
अभी जीवित हैं इसलाईं..

(१६) राधाकृष्ण शर्मा-उर्फ- मैथिली वकील- पुत्र ...
श्री विश्वनाथ शर्मा.. अब भी वकालत के ... ।

(१७) बाबू हरिनारायण सिंह और उनके पुत्र ...
जो क्रान्तिकारी युवक थे.. अन्त में उनकी दो पुत्रियां थी
जीं.. जिन्हें उनकी नकल की गृहसंपत्ति आदि दे गये
उन्होंने संन्यासी बनने पर भी आजीवन मुझको आदर तथा
सदा भोजन खाना मदद देते रहे।

(१८) तीन भागलपुर ... जो उनकी
बस गये हैं - जहां चौधरी शम्भुनारायण, श्री हनुमान प्रसाद ...
के उनके सम्बन्धी तथा श्री खेमचन्द शर्मा ...
एवं सरयूनारायण ओझा की ...

(१९) हटियाबाजार के.. कामता सोनार जो सज्जन ...
नागरिक रहे हैं।

कर्तव्य-अकर्तव्यके विषयमें शास्त्रको सामने रखना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः। ९।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्। १०।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१७

प्रातः ७ बजे - प्रमोद कुमार दीक्षित एक वकील विपिन बिहारी शर्मा, कानपुर के साथ, बिना मुझे बताए, प्रयाग चले गये। वकील स्वयं समर्थ हैं, उनकी मातापिता भक्ति है, और भीमगवान ने सभी भाइयों के नाम खेती में भारी रकम जमा कर दी है। किन्तु मैंने तथा मठ के अन्य अधिकारी सदस्यों की परवाह किये बिना, परोपकार में गये। यह व्यवहारिकता के परे है।

रात में अरुण सिंह के अजय कुमार प्रसाद और उनके साथ नगपुर का कोई युवक था व मिठाई आये हैं।

(हम ४ गम वहीं का शोध से)

(20) अशोक शर्मा - कहीं वा जार संवाददाता सेनानी एवं प्रसिद्ध चाय विक्रेता।

(21) पद्मभूषण कवि - प्रतीवा नार।

(22) राजा आजाद जनती - नगरको० के अध्यक्ष के भेंटी, पहले भी पूर्व में उनकी और से रहीं तथा संन्यासी इसीलिए भी सकारात्मक भोजन करना - सादी भी चोटी।

(23) राजे श्रही साहु - राजस्थान - जनवासी निजली प्रकाश सरपंच के फाटक पर हैं।

(24) सुदर्शन शर्मा जी के पुत्र गे जो मोटर्स जीवन में संघर्षी रहे।

(25) पुलिस के प्रसिद्ध वकील मेरे नौकर के वकील श्री काली प्रसाद सिंह में जीते टीम...

द्वैधीभावसे आपसमें प्रेम, स्नेह नहीं होता, प्रत्युत कलह होता है।

संस्थानों पर भी आनन्द दिया। वकालत अच्छे लाइन पर... ने आपसी में नई उनके जा पानी दो...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि।११।
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्।१२।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१८ आज प्रातः श्री [illegible] [illegible] कुमार [illegible]
स्वामी [illegible] जी । मकर संक्रान्ति पर बधाई [illegible] । अपनी
प्रति [illegible] के बंडल पटेल से लोगों के बारे में उन्हें उनके संकल्प
और आश्वासन की याद दिलाया। इनसे पता चला कि [illegible]
[illegible] किसी नहीं गये हैं। [illegible] हाल में [illegible] विशेष
[illegible] सभी [illegible] संन्यासियों की स्थिति [illegible] है।

पृष्ठ ५ के आगे

२६ इसीलिए अपने [illegible] पर भी [illegible]
५ [illegible] कि कोई [illegible] संन्यासी आते हैं अतः [illegible]
[illegible] कुलीनता के स्वभाव से बुलाकर आदरपूर्वक भोजन कराएगा.
अन्त में [illegible] पर भी [illegible] के डाक्टरों
में [illegible] वस्त्र दान दक्षिणा दी।

२७ महाराज [illegible] ने भी उन्हीं डाक्टरों के [illegible]
अपनी [illegible] कोठी में बुलाकर भोजन कराया.
दूसरी बार [illegible] कोठी में [illegible] के डाक्टरों में [illegible]
[illegible] बुलाकर भोजन तथा दक्षिणा दी
तीसरी बार [illegible] अपनी कोठी [illegible]
[illegible] पर देकर बुलाकर भोजन [illegible]
किया - यही भारतीय संस्कृति है।
[illegible] [illegible] ब्रह्मचारी [illegible] के
[illegible] ने भी दुकान में बुलाकर [illegible] पक्की रसोई
बनाकर भोजन कराया।

धर्म और भगवान् नित्य हैं।

२८ [illegible] नेहरू [illegible] कांग्रेस में
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।१३।
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।१४।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

प्रतापगढ़ जिले के मनीगावर श्री राजनाथ पाण्डेय ने 'त्रिकाल-जयी' पुस्तक लिखी है जिसमें तीन महापुरुषों के जीवन की समीक्षा की है, राजाराम मोहन राय, [illegible] की लाली के रूप में चित्रित हैं, महर्षि दयानंद प्रातःकाल के विमल तेजस्वी सूर्य के रूप में चित्रित हैं तथा पूज्यपाद श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती को मध्याह्न कालीन तेजस्वी [illegible] जिनका प्रचण्ड तेज भारतीय जन जागरण के इतिहास में [illegible] प्रतिष्ठित है तथा महाप्रयाण के समय निर्वाण को प्राप्त हो गया - वे स्व० की आत्मा [illegible].

[illegible] मुजफ्फरपुर में प्रसिद्ध [illegible] श्री [illegible] शर्मा [illegible] पर [illegible] को प्राप्त हुए।

पं० राजनाथ पाण्डेय के पुत्र के पास "त्रिकालजयी" पुस्तक है, वे इस समय [illegible] में अधिवक्ता हैं। उनसे सम्पर्क करके [illegible] यह पुस्तक शीघ्र प्राप्त करनी है। यह [illegible] सिपाही के [illegible] से आग्रह करके प्राप्त की जा सकती है।

[illegible] पाण्डेय की भी सहायता ली जा सकती है।

पृष्ठ (6) का शेषांश →

इनायत खाँ हाजी - सैयद ने अपने [illegible] ब्राह्मण बुलाकर [illegible] भोजन करवाया [illegible]। यह वक्त के [illegible] की धार्मिक संस्कृति है। इसे मैं सदा याद रखता हूँ।

अन्यायी, पापी व्यक्ति कभी निर्भय और सुख-शान्तिसे नहीं रह सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।१७।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक्।१८।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२० — सफला एकादशीव्रत

** पाञ्चरात्र **

इस मत के मूलाधार नारायण हैं। स्वायंभुव-मन्वन्तर में — " सनातन विश्वात्मा नारायण से नर-नारायण, हरि और कृष्ण चार मूर्तियाँ उत्पन्न हुईं। "
नर नारायण ऋषियों ने बदरिकाश्रम में तप किया। नारद ने वहाँ जाकर उनसे प्रश्न किया। इस पर उन्होंने उसे यह पाञ्चरात्र-धर्म सुनाया है। इस धर्मका पालन करने वाला पहला पुरुष उपरिचर राजा वसु था। पहले [redacted]
इसी ने पाञ्चरात्र-विधि से नारायण की पूजा की।
चित्र शिखण्डी नाम के सप्त ऋषियों ने वेदों का निष्कर्ष निकालकर पाञ्चरात्र नामका शास्त्र तैयार किया। ये सप्तर्षि स्वायंभुव-मन्वन्तर के मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ हैं।
इस शास्त्र में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों का विवेचन है। यह ग्रंथ एक लाख श्लोकों का है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अङ्गिरा ऋषि के अथर्ववेद के आधार पर इस ग्रंथ में प्रवृत्ति और निवृत्ति के दोनों मार्ग हैं और उनका यह आधार स्तम्भ है।" **

* यह पाञ्चरात्र-मत- गीता के बाद का है और उससे कुछ भिन्न है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति। २५।
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्। आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २३ — अमावास्या

आज फरक्का देरसे बक्सर पहुंची। ८ बजे [illegible]
[illegible] एक रिक्शे से १० बजे घर को [illegible] पहुंचे।
[illegible] दो रुपये [illegible] लगे। [illegible] शर्मा [illegible]
[illegible] पूर्वक मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् । २७ ।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।
अर्जुन उवाच दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् । २८ ।

सूर्यो० ६ । ४७, सूर्या० ५ । २४ मकर-संक्रान्ति, खरमास समाप्त (दिनमें ४.३७ बजे

आज ही मेरा जन्मदिन है। [illegible] की बैठक हुई।
प्रबन्ध समिति की। उसमें श्री रामनरेश पांडे मिले।
मेरे निमंत्रण पर [illegible] गाजीपुर के [illegible] भी
आये। कई महत्वपूर्ण [illegible] कटरे के मिश्राजी की बातें
[illegible] लगे हुए। [illegible] नारायण राम भी बैठक
में आमन्त्रित थे।
बैंक में जाकर पैसा [illegible] उतारे। कुल २२०० रुपये
उठे। ६००० इकट्ठा रुपये [illegible] को
कटरे के रूप में दे दिया। एक कन्या मेरी ओर से सभी [illegible]
के लिये [illegible]। राजेन्द्र मिश्र भी आये।
प्रमोद [illegible] शेखर सोनकर भी आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।२९।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।३०।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२५ चायपान कि रुकना पड़ेगा। कलयुग में सेवा ले
होती ही है.... लाचारी है। गृहस्थ ही सब सेवा करते हैं।
कोई साधु तक मांगते तक नहीं।

गंगा स्नान भी दस बारह दिनों रुकी। पैसे अमावस्या
के बजाज कुटकर पूर्ति के लिये दे दिया।
शालकेश की मौसी तथा नजदीकी आदि के आश में आई
दिन दे गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन। अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते। ३५।
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन। पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ।३६।

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२७ आज पंजाब मेल से काशी पहुँचे। दूध जलेबी पापड़ी आदि कचौड़ी लिये ओये। ~

पदार्थको व्यक्तिगत माननेसे ही परहितके लिये उसका त्याग कठिन प्रतीत होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्। कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन। ३९।
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत। ४०।

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २८

आज सावित्री के [illegible] की तिथि बदली।
पं० गुरुशरण शर्मा यदु ता रामकथा में १०.३० से १२.३०
के बीच कथा मुहूर्त बतलाये।
कल [illegible] पानी बरसता रहा।
१८०० रुपये ... प्रमोद की तीनों बच्चियों के खाते में
जमा करूँगा।

भोक्तृत्वका नाश होनेसे कर्तृत्वका नाश स्वतः हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ।४१।
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ।४२।

सूर्यो० ६।४७, सूर्यां० ५।२९

आज मु० पा० धाईडीह - पूर्व प्रधान
श्री जगत बहादुर शर्मा को एक पत्र कार्ड - रुपयों के लिये
स्मारक के रूप में लिखा। एक पत्र सिलचीन में छिबरी
के श्री राजकेश्वर पाण्डेय को ईंट लिये.. बरसात आश्रम में
चहारदिवारी - निर्माण के लिये तथा गायत्री कार्तिक
गायों को लाने के लिये लिखा जो पता बोलिंग
बैद्यनाथ सिंह के पास रखी है।
तीसरा पत्र सहल एवं के तिलक गंज के पते श्री राजेन्द्रनाथ
को कई विचार बिन्दुओं को लेकर लिखा जिसमें
कार्यों के निर्माण आदि की भी बातें हैं।

नारायणके भजनमें तत्पर रहनेवाला पुरुष पापसे लिप्त नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः। ४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम। ४४।

सूर्यो० ६। ४६, सूर्या० ५। ३० आज कुवँर रेवती रमण सिंह, वरावं कोठी गऊघाट को एक मार्मिक अनुरोध पत्र लिखा। अपनी सहायता लेकर मठ के सत्संग भवन में लोकबन्धु राजनारायण का तैलचित्र लगवाने की मनोकामना को मूर्तिमान करना चाहता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ।४५।
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः । धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ।४६।

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।३०

आज शर्मा जी के सुबोध-ग्रंथमाला के अधिष्ठाता और उनके बड़े भाई श्री नन्ददेव शर्मा जी के दिवंगत होने पर संवेदना पत्र लिखा। उनके बहनोई श्री वासुदेव रामशर्मा का भी देहावसान हो गया है।

मैंने कुम्हिला के राजेन्द्र शर्मा के पुत्र तथा मंगलपुर के स्व. घरई श्री महादेव सिंह के भतीजे के सहसा मठ में आने से उन्हें मालूम हुआ।

एक पत्र खोपोली के वेङ्कटेश्वर शर्मा को उनकी तरफ से श्री रामकोट राय का तेलंगाना मठ के उद्घाटन में लगाने के लिए उद्बोधन रूप में लिखा।

पति और पत्नीका स्वभाव एक–सा होना चाहिये, यह गृहस्थका धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्।५।

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।३४

आज श्रीगा के राम वचनराम। आचार्य उन्होंने जो अपना 'कृष्णायन' नामक प्रबंध काव्य विश्वविद्यालय प्रकाशन से कुछ लेन देन के माध्यम से प्रकाशित करा रहे हैं। डा० गोविन्दनाथ शर्मा श्री अतः संपादक मुझे उसकी भूमिका में कुछ लिखना है।

आप का भी एक वरु मैत्रेयी हैं - जो विश्वविद्यालय हि० की प्रवेश परीक्षा का परीक्षार्थी है। वह भी आप से आया।

शाम पूर्व दर्शन किया। उन्हें गायकों - दयावती दिव्यमूर्ति भी एक प्रति आशीर्वाद दिया। मैत्रेयी के चाचा को भी एक प्रति दी गई वह भी दर्शन दिया। उन्हीं के माध्यम से आए कतीब सजातीय प्रेमी सज्जनों - कृष्णराम स्वामी अधिवक्ता, रमेश वर्मा - वर्मा जी और तथा उनके माध्यम से श्री लक्ष्मीनारायण राय अधिवक्ता पकड़ी - वृन्दावन, तथा श्री दयादयाल श्रीवास्तव अधिवक्ता आरा हरि राम के दास जिनके निवास से गया। नीचे दर्शन इसके लिये दिये। उसमें से दर्शन की लेकिन जमा आयेगा।

लोभी व्यक्तिकी तरह साधककी साध्यमें निष्ठा होनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।६।

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।३४ — पूर्णिमा, माघस्नानारम्भ

आज प्रयाग से वंशनारायण आये ... घर से उनकी माता
स्टेशन पर आई हैं। प्रयाग मेले में माघ-स्नान के लिये आई हैं)
वे हरिराम के साथ घर से स्टेशन आई हैं।
श्री वंशनारायण से स्वामी विद्यानंद का संदेश मालूम हुआ कि
मेरे शिष्य कुछ संन्यासी बड़े लगाव के प्रसंग में उन्हें
परेशान करते हैं। मैंने एक छोटी चिट्ठी स्वामी विद्यानंद को
लिख भेजा कि वहाँ के मेरे प्रवासी सर्वाधिकारी वे ही हैं,
मेरी सद्भावना-सहानुभूति उन्हीं के साथ है। अन्य संन्यासी
वेष के बाद आहूति के लिये वहां जाते हैं। मेरे शिष्य होकर
जब मेरे ऊपर संकट और शारीरिक कष्ट में जब वे साथ नहीं हैं
तो मैं ऐसे संन्यासी शिष्य वर्ग का क्या करूंगा।
मैंने एक गाथाकाव्य की प्रति भी स्वामी विद्यानंद जी
को उपहारस्वरूप भेज दी।
श्री राजकेश पाण्डेय को एक स्मारपत्र · उत्तरों के
बेडल तथा इंटरव्यू ने और अरुणकुमार शर्मा से गीता के
प्रकाशन मैगजीन के संबंध में लिखा।

मनुष्य-शरीर परम उद्देश्यकी पूर्तिके लिये ही मिला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।७।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३५

आज नरवा के श्री नर्मदेश्वर तिवारी सपत्नीक आये। ये सुसम्पन्न तथा कुशल व्यावसायिक व्यक्ति हैं। इनके बेटे दीक्षित शिक्षक भी हैं। ये २ फरवरी को कलकत्ता से हवाई जहाज से जायेंगे। अतः टिकट एक कापी में आये थे ... वे फिलिपीन्स के अधिवासी हैं। इसी संस्था के द्वारा कलकत्ता होकर दिल्ली के लिये जायेंगे। उन्होंने ५०० रुपये गुरुपूजा में दिये। मैंने उन्हें गायत्री माता की दो प्रतिमाएं दीं; क्योंकि एक व्यक्ति कोई उनके सहयोगी भी साथ थे।

मैंने १०० रुपये तत्काल प्रसीद कुमार को दे दिये।

आज मैंने चार रुपये गायों के लिये लाजवन्ती को दिये।

दस रुपये का सब्जी मंगाया - चावल और दाल पहले थे।

विषयोंमें डूबा न रहे; अपनी शक्तिके अनुसार धर्माचरण करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्।८।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३६ आज गांधी जी का निर्वाण दिवस है। उनको मैं
[illegible] तथा [illegible] की लाख कलम।
मैंने गांधी जी को एक [illegible] समर्पित किये।
[illegible] बहुत उपलब्धि का अवसर है।
भगवत् कृपा ऐसी है। [illegible] एवं उनकी धर्मपत्नी का
सर्वविध कल्याण हो, उनके सकल मनोरथ पूर्ण हों।
आज [illegible] भी [illegible] सपरिवार लौटे।
आज हिरालाल चौधरी [illegible] को फोटो [illegible]
उन्हीं के माध्यम से श्री शुकदेव ठाकुर जी,
ग्रा० पो० [illegible] सहरसा [illegible]
पुत्र श्री मुकेश ठाकुर [illegible] ठाकुर आदि को
पत्र भेजा। अपने शिक्षागुरु श्री शुकदेव ठाकुर जी
का एक फोटो चित्र मंगा कि उनका एक [illegible]
से उनका [illegible] चित्र बनवाकर [illegible]
[illegible] एक आदर्श
रहेगा तथा समाज से [illegible]।

सांसारिक सामग्री अपनी और अपने लिये है ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह। ९ ।
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः। १०।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३७ — **संकष्ट श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज बहुत दिनों के बाद अदेली-बाजार की गली में
व्याकरण के रचयिता श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी के यहाँ जाकर मिला।
वे बड़े साहसी एवं पुरुषार्थी हैं। अभी बिस्तर पर ही पड़े हैं, किन्तु
पहले जैसा रोग में कुछ सुधार है। उन्होंने "वड़व्यापक" महाकाव्य
की प्रकाशनाधीन मुद्रित प्रूफ संशोधनार्थ प्रति संचिका से
निकालकर दिखाई। 800 पृष्ठों की अर्द्ध प्रति का प्रूफ पढ़ा
जो कम्प्यूटर का मुद्रण है। काफी सुन्दर एवं उत्तम कागज पर है।
वे गैलरी के प्रूफ देखने की व्यवस्था स्वयं करेंगे। शीघ्र ही
शेष आधे ग्रंथ का प्रूफ आवेगा। सम्पूर्ण ग्रंथ डबल डिमाई
साइज में छप रहा है। उसका प्रकाशन होगा। अन्तर्राष्ट्रीय
स्तर [illegible] तथा पारिश्रमिक भी समय पर मिलेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। ११।
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्। १२।

सूर्यो० ६। ४२, सूर्या० ५। ३८

लोकमान्य तिलक के पोतों को पूना के उनके पैतृक पते ५६८, नारायणपेठ. लोकमान्य तिलक मंदिर के पते पर पत्र लिखा। सुश्री डा० कमलादत्त न्यायिक दण्डाधिकारी, सीकर राजस्थान को उनके प्रकाशित होने वाले ग्रंथ के लिये. जो उनके जीवन की अतिमहत्वपूर्ण रचना है - "ब्राह्मण निर्णय" की नवप्रकाशित रचना के लिये, उनकी माँग के अनुसार अपनी सम्मति लिख भेजा। कमलादत्त का पत्र एवं उनके उत्तर की प्रतिलिपि प्रमोदकुमार दीक्षित को देकर संचिका में सुरक्षित रखवा दिया।

कामनाओंका सर्वथा त्याग करनेपर संसारके साथ सम्बन्ध रह ही नहीं सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति। १७।
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत। १८।

सूर्यो० ६। ४१, सूर्या० ५। ४०

आज पटना के पते पर श्री कान्तिभास्कर अभियंता (वीरसिंहपुर) को पत्र लिखा लिफाफे में। एक कार्ड श्री दिनेशप्रसाद सिंह डिजाइन वैशाली-निवास, बुद्धा कॉलोनी को भी पत्र लिखा।

साधकको भगवान् और उनके मत दोनोंमें ही दोष-दृष्टि नहीं करनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते । तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि। २५।
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि। २६।

सूर्यो० ६। ३९, सूर्या० ५। ४३ — षट्तिला एकादशीव्रत

आज चार पोस्टकार्ड के पत्र क्रमशः श्री रामनरेश पाण्डेय
त्रिपाठी. प्राध्यापक अम्बल जी. [illegible] तथा
श्री कृष्णकुमार शर्मा. अधिवक्ता.. बंगारायल लॉज उन्नाव तथा
श्री डी० पी० सिंह वैशाली भवन. बुद्धा कॉलोनी. पटना
आदि को विभिन्न प्रयोजनों से लिखा।

किसी दूसरे प्राणीको उद्वेगमें न डाले और स्वयं भी किसीसे उद्विग्न न हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते। ३१।
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्। ३२।

सूर्यो० ६। ३६, सूर्या० ५। ४५

आज कामायनी एक्सप्रेस से प्रयाग स्टेशन उतरे। वर्षा हुई रही। उसी बीच डा० व्रजकिशोर पाण्डेय उनकी कार लेकर पहुँचे। उनके घर में जलपान करके उसी समय वहाँ से झूँसी... पहुँचे। स्वामी विद्यानंद गिरि के आश्रम में [illegible] मंजिल का एक नवीन के [illegible] कमरे में उनके साथ [illegible]। भोजन जलपान किया। विश्राम किया।

जो पुरुष धर्मका कभी परित्याग नहीं करता, उसका अन्तःकरण भी शुद्ध हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि।३३।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् । सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।३४।

सूर्यो० ६।३६, सूर्या० ५।४६ — **मौनी अमावास्या**

आज भी वहीं ठहरे। रातमें बैरमपुर के श्री राजेन्द्र शर्मा भी
आ पहुँचे। फिर वे अपनी गाड़ी से प्रमोद को साथ लेके. स्वामी
शिवानन्द. प्रकाशानन्द. वीरपुर के श्री जगन्नाथ राय स्वामी पटेल,
गोपाल जी (सुरेन्द्र शर्मा) प्रमोद की माता। नरेन्द्र (शंकर चौधरी)
सब ठीक आ गये।

प्रातः पुनः १० बजे... कहा कि कल बाड़ा में दर्शन दीजिये।
उनका भी कैलाश-धाम में रहे। आज दिन भर भी कथा एवं
सत्संग की सभा में प्रवचन किया। सभी सामान्य श्रोता
बड़े प्रसन्न हुए। राजेन्द्र शर्मा भी रहे।

[illegible]

नेत्रसे, मनसे और वाणीसे कहीं भी दोषदृष्टि न करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः । येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । ३५ ।
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् । ३६ ।

सूर्यो० ६ । ३५, सूर्या० ५ । ४६ आज महाराज श्री स्वामी शिवानंद गिरि के यहां
वृहद भंडारा था। परन्तु उनकी अनुमति लेकर मैं ब्रह्मदत्त पाण्डेय
की कार से स्वामी शिवानंद सरस्वती के दण्डी बाड़े में होते
हुए .. महेश्वर के घर पर पहुँचे। [illegible] नेपाली [illegible]
दंडी बाड़े में स्वामी शिवानंद, जगन्नाथ-बीरपुर, स्वामी हरि [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सभी
सभी अपने अपने मंतव्य से अधिक बोलते रहे।
१) रामदेव राजनीति [illegible] संचालक महात्माओं के [illegible]
भी सुनना मिलती। रामदेव राय की [illegible]
होगी।

मनुष्य जबतक निष्कामभावपूर्वक विहित-कर्म नहीं करता, तबतक उसका जन्म-मरण नहीं मिट सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् । तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः । ३७ ।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ । ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि । ३८ ।

सूर्यो० ६ । ३५, सूर्यां० ५ । ४७

आज भी महाराज श्री के कैलासधाम में रहे। कालीप्रसाद पाण्डेय मिले। कहा कि दरभंगा में कैलाश पर सभी भाई एकत्रित मिलेंगे। मैंने आश्वासन दिया कि आऊँगा।

अगम बहादुर शर्मा मिले। बगीचे में कुछ कागजी अड़चन थी। स्टाम्प पर कागज ले आये थे। उन्हें लिखित रूप में बगीचे का ठेका (आज्ञा) बना दिया कि मेरी ओर से प्रबन्ध देखें।

एक हरिजन ग्राम प्रधान बना है। बहादुर के हिस्से भी ... भी अपना ... बनाना चाहता है। ... मिले दुखी हो रहे हैं।

मैंने अगम बहादुर से कहा कि ... बीस हजार रुपये ... शिवालय पर खर्च करें। शेष रकम से दो वर्षों में बाग की चहारदीवारी बनवा दें।

सेवाका अभाव, उतावलापन और आत्मप्रशंसा—ये तीन विद्याके शत्रु हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु । बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।३९।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते । स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।४०।

सूर्यो० ६।३४, सूर्या० ५।४८ आज सवा दस बजे के पहले श्रीकृष्ण लाल जी नाग जी के कैलाश धाम में आकर रहे थे - गाड़ी से काशी होते - प्रभुजी के लिये प्रस्थान किया। श्री राज व रानी को उसी गाड़ी से चढ़वा कर, कृपा उन्हें प्रयागराज तक पहुँचवा दिया।

उसी समय कार्ड से ... श्री ... ।

पराके अवकाश प्राप्त आदमी उच्चाधिकारी आ गये। उनसे बातें हुईं। वे महाशिवरात्रि पर्व पर मिलेंगे।

इस और प्रमोद जी · डा० वृहस्पति पाण्डेय के दरवाजे पहुँचे। बीच में काली दास पाण्डेय गाजी अवकाश के शिविर में मिले। उन्हीं पड़ाव में सपत्नीक ठहरे थे।

वहाँ से वृहस्पति के डेरे पर · राजकुमार अग्रवाल का आगमन, प्रसाद : सभी साथ मिले बैठे भोजन किया। सबको धूप · अंगीठी कपड़े धूप आदि को भीतर ... "संकल्प-समारोह" का आयोजन' ... अच्छा है।

राजकुमार पाण्डेय महाशिवरात्रि पर ... मिलेंगे।

पुनः डा० वृहस्पति पाण्डेय अपनी कार से इलाहाबाद जंक्शन ले गये और आकाशवाणी ... पहुँचाया। (१० बजे के बाद ... पहुँचे)

जहाँ संदेह हो, वहाँ सत्पुरुषके अन्तःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन । बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।४१।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।४२।

सूर्यो० ६।३३, सूर्या० ५।४९ पहले से सन्यास लेने वाले श्री शुकदेवानन्द उदासीन एवं डिहरी से एक महात्मा जो देवानन्द के भतीजे हैं पहुँचे। वे लोग रट धूलकर कहलाते हुए सब सामान ले जाते। व्यवस्था हो रही। प्रमोदकुमार के बहुत परिश्रम से पूर्ण किया जाता।

सायंकाल देवानन्द, शिवानन्द, प्रमोदकुमारानन्द आदि आये। राजेन्द्र शर्मा भी आये हुए हैं। सबको भोजन कराया गया। खिचड़ी भोजन बनाया। श्री नारायण आदि सेवक हवन कुण्ड आदि कार्य विधिवत् सम्पन्न होते रहे।

जहाँ आसक्ति हो रही हो, वहाँ दोष देखना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।४४।

सूर्यो० ६।३२, सूर्या० ५।४९ — वसन्तपञ्चमी

रात्रि जागरण के बाद प्रातः दिन हुआ। १० बजे के बाद
अष्टकाश्राद्ध भी विधिवत् संपन्न हुआ।
३ बजे गंगा तट पर जाकर संन्यास-दीक्षा की
अंतिम [illegible] दीक्षा कार्य संपन्न किया गया।
मठ में लौटकर भोजन आदि संपन्न हुए। दण्ड प्रदान
किया। पुनः [illegible] के साथ दण्ड की प्रक्रिया बताकर
योगपट्ट प्रदान किया - स्वामी रामानंद सरस्वती

किन्तु सायंकाल स्वामी शिवानन्द-देवानंद के साथ
भी स्वामी रामानंद सरस्वती - नये संन्यासी भी तत्काल
प्रयाग चले गये कि ब्रह्मचारी [illegible] और [illegible]
और वहीं वे कल्पवास करते हैं। मुझे [illegible]
उधार लिये हैं - [illegible] तथा कपड़े [illegible]
पड़ी है।
उन्होंने कहा था महाशिवरात्रि पर वापस मिलेंगे।
किन्तु वे भी चतुर [illegible] मालूम होते हैं। राजगुरु मठ
में रहकर भजन तो [illegible] स्वाध्याय ही
होगे। ऐसे मेरे मन में शंका है।
ब्रह्मचारी [illegible] स्वामी देवानंद - जिन्हें
जो मानते हैं महावाक्य लक्ष्य "[illegible]" [illegible]
ब्रह्मचारी को। वे भी देवानंद द्वारा अपनी [illegible]
कुटिया [illegible] के लिये बनाये गये हैं।
जो जैसा होगा - वह वैसा पायेगा। [illegible]
[illegible] नहीं रहते तो [illegible]
कोई सरलता और संन्यासी नहीं करते।

वैराग्य होनेपर संसारसे सुख लेनेकी भावना समाप्त हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।४५।
यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।४६।

सूर्यो० ६।३१, सूर्या० ५।५०

आज प्रातः महामण्डल के पत्र लेकर श्री मान्
इन्द्रजीत शर्मा.. आ गये। उनके साथी भी आये। उनके साथी
कादरी रविवार को मंत्र दीक्षा ग्रहण करेंगे।
श्री इन्द्रजीत शर्मा ने कहा कि मैंने इंडियन काउंसिल के द्वारा
स्पोर्ट्स, नाटक आदि में मठ की कथा मनाने को दिया था।
पर स्वभाव से धूर्त एवं लिक्खी स्वामी चितेश्वरानन्द ने यह
बात बड़े में मिलने पर न पूर्णोदय कुमार से वसूल कर उनको
कहा। क्योंकि एक महीने में गड़बड़ी ... कर [illegible] का
या सेवा सुश्रूषा की मदद प्राप्त करेंगे।
वहां ऐसे ही लोग मठ के उत्तराधिकारी बनकर मठ की
गौरव गरिमा की रक्षा करेंगे और समाजसेवा तथा
अतिथि सत्कार करेंगे।

धनकी प्राप्ति महान् दुःख है और अकिंचनता (निर्धनता) परम सुख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।४८।

सूर्यो० ६।३०, सूर्या० ५।५० रथसप्तमी

आज प्रो० दीनानाथ राय. बहादुरगंज हाउसिंग कॉलोनी
(नालंदा मेडिकल कॉलेज के पीछे) को पत्र लिखा।
श्री जगत बहादुर शर्मा. [illegible] को वाटिका की
आश्रम में नाली-चहारदीवारी के लिये नक्शा बनवाकर
श्री [illegible] भेजने को उन्होंने इसके लिये
कम से कम तीन हजार रुपयों की मांग के साथ पत्र लिखा।
डा० चन्द्रेश्वर मिश्र को उनकी विजय के प्रसंग में
उपलक्ष में शुभकामना के साधुवाद का पत्र लिखा।
लिफाफा मंगाया ८ रुपये. सावित्री को चार रुपये।
लालबाबू ४ रुपये। गार्गी को दो रुपये. [illegible] को दो
रुपये। इन्द्रजीत शर्मा [illegible] अब रविवार को यहां
आयेंगे. उनके समधी को दीक्षा दिलानेवाले हैं।
[illegible] से [illegible] जितेन्द्र कुमार शर्मा [illegible]
दर्शन के लिये आये हैं।
श्री खड्गधारी शर्मा। कन्हपुरा - प्रबंधन-समिति के स्थायी सचिव
को आश्रम की सफाई-रंगाई पोताई आदि के प्रबंध में पत्र
लिखकर लिफाफे में डाल दिया। आयव्यय के लिये उचित
संकेत दिया।

सेवा वही कर सकता है, जो अपने लिये कभी कुछ नहीं चाहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः।४९।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।५०।

सूर्यो० ६।२९, सूर्या० ५।५१ — भीष्माष्टमी

आज कैलासपति मिश्रको पत्र लिखकर उनके मा. उत्तरप्रदेश राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री के कार्यक्रमके लिये पत्र लिखा। पत्रा विजय मिश्रजीके पत्र - प्रमोद रा० स्व० संघ के प्रान्त प्रचारक श्री नरेन्द्र जीको भी श्री कौशलेन्द्र तिवारी के साथ उस अवसर पर उपस्थित होने के लिये लिखा भेजा। डा० कमलेश मिश्रजीको तो पहले ही लिख चुका हूँ।
नरही सिद्धनाथ राय को पत्र देकर नन्दीश्वरानन्द के संबंध में पत्र भेजा कि वे कहाँ हैं? यदि हों तो भेजें।
अजौरपुर के वैद्य श्री शिवकुमार पाण्डेय को भी पत्र लिख भेजा।

भोगोंकी तृष्णा कभी भोग भोगनेसे शान्त नहीं होती।

 RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।५५।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।५६।

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।५३ जया एकादशीव्रत

आज के 'जागरण' में प्रकाशित समाचार के अनुसार यह पुस्तक मंगानी आवश्यक है:
"एस० वी० शेषगिरि - मार्टीयरडम आफ स्वयंसेवक्स (स्वयंसेवकों की शहादत) Martyrdom of Swayamsevaks" जिसकी भूमिका एस० वी० शेषाद्रि ने लिखी है। इतिहास के विद्यार्थी को पढ़ने के लिये यह एक अच्छा ग्रन्थ है। जनवरी के अन्त में इस पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने दिल्ली में किया।

यह पुस्तक दिल्ली में नेशनल पब्लिशिंग हाउस या Vivek? Publishers से प्राप्त हो सकती है।

वस्तुओंको दूसरोंकी सेवामें लगाकर दान-पुण्य नहीं करना है, प्रत्युत उनसे अपना सम्बन्ध तोड़ना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५७।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५८।

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।५४ आज महामलपुरके मकानपर इन्द्रजीत शर्माके समधी श्री रमाशङ्कर सिंह ने मंत्र दीक्षा ली। प्रमोदकुमार शर्मा के विचार से सब कार्यक्रम था। इन्द्रजीत की लड़की जो श्री सिंहकी पुत्रवधू है आयी थी। पाँच सौ पाँच रु० दक्षिणा के प्राप्त हुए। पांच "सामिग्री" का १५०० रुपये सभी मलयुगीनों [illegible] कुटी की सिलाई तथा ५०० रुपये पूजाके रूप में दिये। दो सौ रुपये प्रमोद कुमार ने शिशु-पाठशाला के "साइनबोर्ड" लिखाई के लिये दिये। इन्द्रजीत शर्मा का [illegible] श्री दर्शनानन्द "पैनटेवाज" के माध्यमसे [illegible] उन्हें ५५०० रुपये जो इन्होंने वसूल कर मठ के व्यय-रसोई-बिजली आदि के लिये दिये थे। वसूलनेके मठ को पहुँचाने गये। भिक्षा मांगकर [illegible] भी सन्यासी का उनका स्वभाव अभी बदला नहीं है। वे हमेशा प्रबन्ध कराने एवं भिक्षा [illegible] में लगे रहते हैं।
दस रुपये के चार [illegible] से पोस्टकार्ड एवं चार पोस्टकार्ड मंगाये। दो पोस्टकार्ड पत्र, एक [illegible] के पं. शास्त्री शर्मा को लिखा तथा दूसरा [illegible] के [illegible] राजेन्द्र प्रसाद [illegible] में [illegible] श्री स्वामी [illegible] सरस्वती को उनके [illegible] पते पर लिखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।५९।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।६०।

सूर्यो० ६।२६, सूर्या० ५।५५ — **सोमप्रदोष**

आज उत्तरप्रदेश चुनाव में भा०ज०पा० के हारने के गम के
भी खेद है। कल्याण सिंह, राजपूत, [illegible] अजयपाल, [illegible]
और रवीन्द्रनाथ सिंह आदि विजयी हुए।
[illegible] एवं [illegible] - [illegible]
के [illegible]। [illegible] - [illegible]। [illegible] के
[illegible] [illegible]। [illegible]
के करते [illegible]। - [illegible] के पते पर पत्र लिखने के बाद
[illegible] देखा कि उनके [illegible] एवं
[illegible] को भी समाचार के लिये पत्र
लिखा। [illegible] को पत्र
लिखकर [illegible] और
[illegible] - [illegible]
के [illegible] : उसका
प्रकाशन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।६३।
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।६४।

सूर्यो० ६।२४, सूर्या० ५।५६ — पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त

आज [illegible] की स्वदेशविहारी तिवारी जी धर्मपत्नी आपने
दर्शन स्नान करके वापस गईं।
'मदनपुर-शिवदयाल [illegible] भी [illegible] की पत्नी - आदि
स्नान में [illegible] के [illegible] में [illegible] भी एक
[illegible] भी थीं। लोग स्नान दर्शन के लिये आये हैं।
[illegible] विश्राम किया।
[illegible] के श्री सीताराम राय - [illegible] दर्शन [illegible] ✓

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते। ६५।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्। ६६।

सूर्यो० ६। २२, सूर्या० ५। ५७ — आज मैं श्री [illegible] मालवीय [illegible] जी
के साथ ठहरे [illegible] भ्रमण किया और सायंकाल - वाराणसी -
अलीगढ़ एक्सप्रेस से वापस हुए। [illegible] जी से - [illegible]
के स्वामी [illegible] एक [illegible] सूचना
भेजी तथा उनके पुत्र नवीन [illegible] को [illegible]
की जयंती के लिये लेख भेज कर छपाया।

महन्त श्री [illegible] २१० रुपये दे गये।

५०० रुपये [illegible] को [illegible]
के [illegible] में दे दिया। १०० रुपये [illegible] को [illegible]
को [illegible] दिया।

अपने घरपर कोई भी आ जाय, उसका कभी भी अपमान नहीं करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६८।

सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।५७ आज आराम से सिक्ख मैरिस पाड़े.. ट्रांसफरकर्ता
अवैरचौरी गई भी दिया राग टोकरि (कम्बाद व फाउंडेशन)
आज अयोध्या में जाने मन में आधी बोइदे रखे विचार दिनों
होता रहा। आज भाजपा ९० राव विश्व हिन्दू परिषद् की अपील
पर गोधरा-गुजरात के भीतर बड़े स्तर पर भारत बंदी एवं
नगर बंदी हड़ताल रही। रात तक भाजपा की ८ मौत गयी थी
गयी। दिया कुमार राय मौर्य के पाडे के गाथाकार
"देवा की दिव्य मूर्ति" की प्रतियां दी गईं।
भीखिया हजार की १०० रुपये के जगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।६९।

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज [illegible] को [illegible] मीमांसा- सं० श्री० [illegible] रचित
उसके नया- गोरखपुर के [illegible] लिये पैसे दिये गये।
[illegible] के [illegible] ८० [illegible]। [illegible] के लिये १५ रुपये [illegible]
८ रुपये बाकी दिये गये। कुल बकाया ५५०+२०७४ = ११३० [illegible] हुए।
कुल ५५५ रु० दिया- जो [illegible] जो लौटायें।

मँगल आया- पुस्तकें सीमार की मिलेंगी

[illegible] ईश्वरलाल [illegible] प्रकाश [illegible] के
महंत [illegible] साथ जो रुपये दे गये थे... उनमें से
किताब के पैसे दिये-

गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तुकी इच्छा करता है, वह सब उसे प्राप्त होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।७०।

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

आज अवढ़ा से सहसा संजय कुमार पाण्डेय
आये। बब्बू-प्रमुना रमणसिंह ऑफि० पर प्रमोद से भेंट न
होने से लौट गये... कुछ अनुष्ठान-पूजा आदि है।
ये विवाह के क्रम में लड़का देखने आये हुए थे बलहा
का है। उनके सम्बन्धी छावड़ा में अवकाश करते हैं।
वे भी आंजनीदेवी पर [illegible] में ले जाने के लिए

आज ही श्री जगति मठ के
सोमार [illegible] के पंजेपर ऑफिस हो गयी है।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितिका सदुपयोग कल्याण करनेवाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।७१।

सूर्यो० ६।१९, सूर्या० ५।५९

आज प्रातः प्रमोद कुमार प्रभुनारायणसिंह के लोहटिया- निवास पर गये पूजाकार्य सम्पन्न करने।

आज दिन में मेरे श्री जमोहरलाल .. स्वामी हरिहरानंद आये भोजन करके साथ।

उनके बाद वे मुझसे मिलने मारिशसनाम सकरीकाले आये। मैंने कहा कि दर्शन हुआ। उन्होंने कहा कि जयपुर से रुपया मंगाकर ले आये हैं पहुंचाने।

इसपर मैंने कहा कि इन्द्रजीत शर्माने कहा था कि आपके संकेत पर टेलीफोन आदि के लिये .. रुपयासे पालडजा[?] काम कर दिया है। इतने में स्वामी हरिहरानंद चिल्ला उठे, हम इन्द्रजीत शर्मा को क्या जानते हैं, हम अपने मंगाकर ले आये हैं। मुझे पता लगा कि उन्हीं के यहां ये ठहरे थे, उन्होंने रसीद काटकर इन्हें पैसा दिलवाया था और उन्हीं को पुल्हा[?] करते हैं, उन्हें धता बताते हैं। ऐसे इनसब के अधीन से कैसे मठ चला सकेंगा।

मूल मंतव्य है कि भविष्य में भी मालिक बनकर मठ में पूजा करूं नहीं रहूं- मौज से खाऊं पीयूं।
यही इन लोगों का सम्भाल का उद्देश्य है।

तब अपनी ओर से मैंने कहा कि इन्हें मेरे सामने से, वे उठ कर अपना सामान मध्य कक्ष में ले गये।

X X X

डायरी मुक्त से इसे पृष्ठ पर अंकित हो यदि ठीक आवश्यकीय जानी माना जाये।
मंगलवार को पृष्ठ में उसी पृष्ठ मुख्य बातें अंकित की जायेंगी।

साधकको साध्यसे भी अधिक आदर साधनको देना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।७०।

सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

आज हवड़ा से सहसा · संजयकुमार पाण्डेय
आये। बब्लू · प्रमुख लक्ष्मणसिंह आदि पर प्रमोद से भेंट न
होने से लौट गये ... कुछ अनुष्ठान-पूजा आदि हैं।
ये विवाह के क्रम में लड़का देखने आये हैं और बक्सर
का है। उनके सम्बन्धी हवड़ा में व्यवसाय करते हैं।
वे भी आंखों की दवा पर ... में ले आये हैं ...

आज ही श्री जगति मठ के
सोमार ... के पत्रिका अंकित हो गयी है।

अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितिका सदुपयोग कल्याण करनेवाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।७१।

सूर्यो० ६।१९, सूर्या० ५।५९ आज प्रातः प्रमोद कुमार - प्रभुनारायणसिंह के लौटरिया - मिवाल पर गये - पूजाकार्य सम्पन्न करने।

आज दिन में मेरे भोजनोपरान्त.. स्वामी हरिदर्शनानंद आये - भोजन करके सोये।

उठने के बाद वे मुझसे मिलने या शिष्यत्व सम्बन्धी कार्य आये। मैंने कहा कि दर्शन हुआ। उन्होंने कहा कि सबड़ा से रुपया मंगाकर ले आये हैं पहुँचाने।

इसपर मैंने कहा कि इन्द्रजीत शर्मा ने कहा था कि आपके संकेत पर टेलीफोन आदि के लिए.. रुपया सोड़ पान्डेजी ने कार किया है। इतने में स्वामी हरिदर्शनानंद बिगड़ उठे। हम इन्द्रजीत शर्मा को क्या जानते हैं, हम रुपये मंगाकर ले आये हैं। मुझे लगा कि उन्हीं के यहां ये ठहरे थे, उन्होंने रसीद काटकर इन्हें पैसा दिलवाया और उन्हीं को झूठा करते हैं, उन्हें पता चलता है। ऐसे इनलोग के अधीन से कैसे काम चलेगा।

मूल मतलब है कि भविष्य में मैं मालिकवत मठ में पूजपाठ करूँ - भोजन खाऊँ पाऊँ?

यही इन लोगों का सम्मान का उद्देश्य है।

तब अपनी ओर से मैंने कहा कि इन्हें मेरे सामने से, वे रुष्ट होकर अपना सामान मध्य कमरे में रख गये।

× × ×

डायरी मूल से इसे पृष्ठ पर अंकित हो यदि ठीक आजही की डायरी मान जाय।

मंगलवार को पृष्ठ में उसी पृष्ठ में मुख्य बातें अंकित की जायेंगी।

साधकको साध्यसे भी अधिक आदर साधनको देना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।७२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः।२।

सूर्यो० ६।१८, सूर्या० ५।५९

[illegible]

आज प्रातः स्वामी हरिहरानन्द कुछ देर उनके साथ में टहल कर चले गये।
श्री प्रमोद कुमार मुझे ही दीक्षा बनाते [illegible] तथा बड़ी बातें कहते हैं कि प्रमोद मंगल है।
आज [illegible] -अभियन्ता को [illegible] निमंत्रण पत्र भेजा। आज कृष्णकुमार शर्मा अधिवक्ता द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण राय वरिष्ठ अधिवक्ता, श्री देवी दयाल [illegible] वरिष्ठ अधिवक्ता तथा प्रधानाचार्य [illegible] एवं [illegible] शर्मा, शिवानन्द शर्मा, रमता शर्मा आदि को - राम चन्द्र शर्मा आदि को भी निमंत्रण भेजा।
[illegible] के [illegible] नरेन्द्र जी एवं [illegible] स्वामी [illegible] तिवारी आदि को भी निमंत्रण भेजा।
[illegible] के [illegible] आदि के द्वारा सिक्किम के स्वामी [illegible] भक्त देवकी को भी निमंत्रण भेजा - आश्रम के [illegible] से रंगधारी शर्मा आदि को भी सूचना निमंत्रण भेजा। [illegible] कुमार को भी निमंत्रण भेजा।
वीरेन्द्र - रामदयाल [illegible] मधुसूदन शर्मा, [illegible] राधाकृष्ण [illegible] को भी [illegible] निमंत्रण पत्र भेज दिया।
हरिहरानन्द कुछ देर [illegible] श्री प्रमोद कुमार को दे गये।

[illegible] आदि को भी निमंत्रण गया

शिखा रखनेसे आत्मशक्ति प्रबल बनी रहती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज पुनः मधुपर्क के श्रीतेन्द्र अपनी पत्नी सहित आश्रम के कार्य के प्रसंग में आये। मेरी पुस्तकों का प्रश्न सामने ही था इत नहीं [illegible] परिश्रम से कतराते हैं।

दिन में कुछ पढ़ते लिखते रहे। भारत के एक उपदेशक [illegible] से मेरी पुस्तक "शासक क्षत्रिय एवं धर्माचार्य ब्राह्मण" को लिये उनको मैंने उत्तर लिख भेजा कि पुस्तक मुद्रण में प्रेस में पड़ी है, आने पर भेजा जा सकता है।

स्वामी हरिहरानन्द मधुपर्क के अहंकार दम्भपूर्ण मुद्रण की बातें मैंने श्रीतेन्द्र से कहीं।

हरेराम शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, मा. [illegible]-मोतीलाल आदि पुस्तक-प्रतिष्ठानों से, परिश्रम करके प्रकाश कुछ पुस्तकें नहीं पा सके। पटना लक्ष्मणपुर-शुक्लपुर के आगे के स्वामी [illegible] सेवाश्रम जी आदि का शर्मा का पत्र मिला। वे पुनः स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती जी की पुस्तकें प्राप्त करना चाहते हैं। पास में सिद्धाश्रम है पर आश्रम के संचालक स्वामी- केदारसिंह आदि के अनुचित व्यवहार एवं कुप्रबंध तथा स्वार्थ प्रवृत्ति से आश्रम का विकास एवं उनकी कीर्ति का प्रचार प्रसार नहीं हो रहा है। एक वह जमाना था जहाँ पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री [illegible]. इन्दुलाल याज्ञिक. पं० [illegible] शास्त्री, पं० [illegible] शर्मा. देवधर [illegible] गंगाधर [illegible] सिंह [illegible] सदेरणसिंह. [illegible] सिंह, रामचन्द्र शर्मा. आदि का जमघट लगा रहता था - आज वह संकुचित हो अपने भाग्य को रो रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् । ३ ।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति । ४ ।

सूर्यो० ६ । १६, सूर्या० ६ । ०० — श्री जयप्रकाश खुराना [illegible] आदि कार्यकर्ता
जो स्वतन्त्रता आंदोलन में भारत भूषण आदि कार्यों में सक्रिय
थे के पत्र का उत्तर लिखा।

मनुष्यका खास काम है—परधर्मसे विमुख होना और स्वधर्मके सम्मुख होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ६।१

आज मुद्रिका शर्मा तथा चक्रपाणिपुर के एकाउन्ट-ऑफीसर को उपेन्द्र कुमार शर्मा आदि के पत्रों का उत्तर लिख-छोड़ा। एक टिकट दो लिफाफों के लिये, ८ रुपये। दो नईकालोनी वाली १० ११ ०० ... आठ रुपये भी मंगाया। दो रुपये ... को दिया।

गोरखपुर के प्रशंसक मित्रों :- यमुना प्रसाद, उमेश राय अध्यक्ष, श्री गोपाल राय, जितेन्द्र शर्मा, भूपेन्द्र चौधरी, महेन्द्र चौधरी, श्री जगन्नाथ-ब्रजनाथ राय, पं० सीताराम शर्मा शास्त्री, पं० हनुमान शर्मा, श्री शिवपूजन राय आदि को जयंती के छपे निमंत्रण भेजा। लिफाफे में आदि की डा० श्याम बिहारी राय प्राध्यापक सहित औरों को भी नारायणपुर के वैद्य लिफाफे में पत्र भेजा। "महाभारत-मीमांसा" पुस्तक के पते के बारे में भी लिखा कि नवीन लेखक ए. अग्रवाल या कृष्णकान्त परशुराम को कहां से प्राप्त हुई। मंजारपुर के श्री शिवकुमार पाण्डेय, राजकुमार पाण्डेय, ब्रजकिशोर पाण्डेय एवं पं० रामवृक्ष शर्मा, पं० परमानन्द पाण्डेय आदि को जयन्ती का निमंत्रणपत्र मुद्रित भेजा। लिफाफा टिकट आदि आठ रुपये का। गोंदनामी पाँच रुपये पहले गार्गी को। दो-दो रुपये के दो टिकट एवं छः पोस्टकार्ड मंगाकर पास रखा।

जो दूसरोंके मर्मस्थानोंपर चोट करते हैं, ऐसे वचन विद्वान् पुरुष दूसरोंके प्रति कभी न कहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर। ९।
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्। १०।

सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ६।२

आज तिनसुकिया-एक्सप्रेस.. आसनसोल से - बक्सर उतरकर कृतपुरा पहुँचे.. भोजन विश्राम किया।
प्रमोद कुमार बक्सर-आश्रम पर चले गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः । परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः । तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ।१२।

सूर्यो० ६।११, सूर्या० ६।३ — सोमप्रदोष

आज बैंक से दो महीने की स० सेनानी पेंशन प्राप्त किया।
एक हजार... खाते में जमा कर दिया। बनारस आश्रम पर
लौटकर कालपुरा चले गये। वहाँ सुविधा रहती है... आराम से रहते हैं।
आज ईश्वरदत्त के उत्तराधिकारी.. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय के पौत्र सर्वेश्वर कान्त का
मंत्र-दीक्षा का कार्यक्रम किया गया। पुनः आश्रम पर वापस हुए... यहाँ
कोलहटी के.. कमला कान्त शर्मा नातेदार संबंधी विशेष का दीक्षा करना
था.. ओंकारपुर के भी चाकघटा वाले के किसी व्यक्ति की दीक्षा
का कार्य सम्पन्न करना था। कोलहटी एवं ओंकारपुर के भक्तजनों का दीक्षा कार्य
सम्पन्न हुआ।। वस्त्र आदि सहित दान दक्षिणा प्राप्त हुए।
सुविधा के विचार से कालपुरा वापस हो गये।
श्री त्रिलोकनाथ जी.. आज ही... बाहर.. यहाँ पधारे। थोड़ी देर तक
ठहर कर.. पुनः पदरा श्री कृष्णबिहारी शर्मा.. शिक्षक लल्लन के
निवास पर चले गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् । १३ ।
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः । १४ ।

सूर्यो० ६ । १०, सूर्या० ६ । ३ — **महाशिवरात्रिव्रत**

आज आश्रम पर पूज्यपाद श्री लक्ष्मी सहजावन्द सरस्वती जी की जयन्ती का समारोह भव्यता के साथ संपन्न हुआ। डा० श्यामसुन्दर तिवारी जी उद्घाटन कर्ता · कुमायूं से चलकर आए थे। अध्यक्ष डा० दर्शन मिश्र जी कार्य अध्यक्ष रहे। आचार्य · श्री देवी प्रसाद ... अध्यक्ष, श्री लक्ष्मीनारायण पाण्डेय विशिष्ट अध्यक्षता, प्राध्यापक ... आदि प्रमुख रूप से आये थे। गोरखपुर के ... विधायक श्री देवकुमार शर्मा विशिष्ट अतिथि या समागत रहे। ... भी ... जयन्ती में भी ... श्री आओ उपस्थित हुए। ... लब्ध प्रतिष्ठ सज्जन आये। जयन्ती का कार्यक्रम पूर्ण विधि विधान से संपन्न हुआ। बाहर के सज्जन ... में साधु संतों एवं विशिष्ट सज्जनों की ... तथा ... के लिये ... आश्रम में ही रहा।

पं० ... पाण्डेय ... सबको ... वापस ... कल ... पुनः ... से · यहं आकर मिलेंगे। वे ... श्री ... अध्यक्ष ... जायेंगे।

... वापस में रहा .. बड़ा कष्ट हुआ। देर रात तक ... तिवारी जी · डा० ... मिश्र आदि का ... रहा। मैं ... जाना चाहता था .. पर कोई ... नहीं मिला। ... श्री ... पुत्र · ... अपनी मोटरसाइकिल से मुझे ... पहुंचाया। ... रात्रि ... हुआ ... मन्दिर ...

नीच पुरुषोंका साथ करनेसे मनुष्योंकी बुद्धि नष्ट होती है।

... में ... तथा ... आदि ... रात्रि ... आ गये थे। ... हुआ। ... को ...

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्। १५।
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। १६।

सूर्यो० ६।१, सूर्या० ६।४ — **अमावास्या**

कल ही काशी अक्षर की कठिनाइयों एवं विद्यार्थियों के नाम
प्रान्तीय एवं लोकल सरकार के पत्र प्राप्त किया। १५०० रुपये भक्तिवादी को
देने में स्वीकृति के लिये दे गये हैं।
तीसरा दिन भी। २००० दो हजार की एक-बारह सौ रुपये की रसीद
८०+९० की दिये। कुल मिलाकर ३८८० रुपये प्राप्त हुए।
आश्रम में पं० रवि शंकर जी विश्वनाथ के शिष्यों
द्वारा उत्सव होता रहा।
आज दो और हिरपाल अश्रुपूर्ण गये। जाकिर घाट पे। उठे
गये। पूजा के प्राप्त पत्र तथा ... एक हजार रुपये...
श्री प्रेमवती शर्मा को आउसौरण तथा संगमरमर और जाति
जानेवाले कठिनाइयों की मजदूरी देने के लिये दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते । १७ ।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः । १८ ।

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ६।४ | अमावास्या, खरमासारम्भ (रात्रिमें १०.३४ बजेसे)

आज सतपुरा पुनः वापस हो गये। शरीर को यह आराम हो रहे।
चिन्ता में नींद नहीं [illegible] कभी रात को दो बजे तीन बजे उठ जाता। ८ बजे
.. [illegible] टिकट लिया। फतुहा आश्रम पर आये।
श्री प्रेमचन्द जी ने कहा कि [illegible] .. फरक्का एक्सप्रेस
से चले जायें। फरक्का आयी और १ बजे उसने बनारस कैंट
पर उतार दिया। हम लोग ३ बजे मठ में पहुँचे। श्री [illegible]लाल जी
[illegible] मेरे [illegible] साथ ... प्रतीक्षा करते रहे। और आज घर तक गये।
[illegible] .. [illegible] कहा। [illegible] हुआ।

धनकी प्यास कभी बुझती नहीं है, अतः संतोष ही परम सुख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।१९।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।२०।

सूर्यो० ६।७, सूर्या० ६।५

मैं रामजी के प्रतापगढ़ से चलकर आज पर श्री प्रमोदकुमार ने कहा कि गाड़ी आसनसोल पहुँचने से पहले [illegible] जाय। वैसा ही हुआ। पर पहुँचकर पता चला कि [illegible] गाड़ी... स्थगित हो गई है। अतः प्लेटफार्म पर डेढ़ घंटे रुकना पड़ा। [illegible] आधा घंटे विलंब से आई। उसमें सवार होकर तब तक जोधपुर-हावड़ा एक्सप्रेस से आ गये।

पुनः देहरादून एक्स० से उतरकर... जोधपुर एक्सप्रेस से सवार होकर चल पड़े।

सहसा दूर स्टेशन पर उतरे। श्री राजेन्द्र [illegible].. वकील साहब के साथ स्टेशन पर उपस्थित थे। रिक्शा पर सवार होकर हम सभी लोग [illegible] श्री राजेन्द्र जी के निवास स्थान पर पहुँच गये। भोजन विश्राम किया।

जिस–जिस उपायसे धर्मका आचरण हो सके, उसके करनेमें निन्दाकी कोई बात नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।२१।
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।२२।

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ६।५

आज ९ बजे मठ से सच्चरवं के लिये प्रस्थान किया।
बैरोनी से चलने का कार्यक्रम डा. प्रमोदकुमार मिश्र तथा
वहाँ [illegible] [illegible] पी.आर. [illegible] सलामपुर से
चलकर सहसराव स्टेशन पर उतरे। श्री राजनाथ [illegible]
[illegible] के साथ उपस्थित थे। [illegible] से सीधे [illegible]
श्री राजनीति [illegible] गृह निवास पर पहुँचे।

जो मनुष्य आलस्यके वशमें पड़कर सोता रहता है, उसे दरिद्रता प्राप्त होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः। २३।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः। २४।

सूर्यो० ६।५, सूर्यां० ६।६ आज सहसराव नगर निगम के सभागार में
श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती की जयंती का समारोह
बड़ी धूमधाम एवं सजधज से संपन्न हुआ। राजनीति राम के अथक परिश्रम
के कारण सहसराव में अपने महापुरुषों का संगठन किया है।
कल्पनातीत श्रद्धा भक्तिपूर्वक विराट कार्यक्रम संपन्न होते देखा।
नवीन उपत्र- शिक्षित जन-समुदाय उत्साही नवयुवक तथा
पत्नापुर के एक प्रभाव धार्मिक प्रवृत्ति के युवक नरेश
प्रत्याशी राजनीति राम के सहयोगी रहे। अन्य अन्य वर्ग के लोग भी
सहानुभूति में सम्मिलित हुए। श्री आनन्द चौधरी भी उप
उपस्थित हुए थे... उनका भाषण सर्वोपरि उत्साहवर्धक था।
श्री चन्द्रमणि तिवारी ने भी महत्वपूर्ण योगदान देकर
समारोह को सफल बनाया। सभा के बाद स्वयं आठ
सात बजे श्री राजनीति राम के खिरमांग के घर-आँगन
पर बहुत लोग जमा होकर के आज के धार्मिक सामाजिक
बातें पूछते रहे। मैंने डेढ़ दो घंटे तक इतिहास दर्शन एवं
विभिन्न प्रसंगों में संस्कार प्रदान करने वाली बातें
कहीं और लोगों में उत्साह जगाया। विधायक के प्रतिनिधि
श्री शिवमूर्ति राम भी आ उपस्थित हुए थे।
सभा में गाय के प्रति मनोविज्ञान धर्म के रूप
वर्तमान में गाय के जीवन भी खतरे में उपस्थित है।
समाचार के लिए और आगे मिल... नगर निगम
में धांधली होने की बात से अवगत कराया।
कोई पत्रिका भी एक महत्वपूर्ण प्रकाशित और रहस्य उद्घाटन
के साथ शीघ्र ही निकलेंगे।

भगवत्स्मरण रखते हुए ही संसारके कार्योंको करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम्। २५।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्। जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्। २६।

सूर्यो० ६। ३, सूर्या० ६। ६

आज भी सब्सराव में से श्री राजनैतिराय के
खिड़नगंज- कृष्ण निवासपर ठहेरे रहे। पुरुषोत्तम एक्सप्रेस से लौटने की
सलाह थी.. पर लोग आते-जाते रहे। प्रमोदकुमार राजनैतिराय के साथ नगर में
टहलने घूमने गये.. मैंने पचास रुपये देकर एक किलो तिलकुट,
एक किलो गुड़ का बताशा एक लाल कलम मंगाया। पं० रामसेवक जी
त्रिपाठी के पत्र का भेजकर.. इंगित के लिये तकादा किया।
श्रीराजनैतिराय.. बलिया से कोई उपकार्य के उपलक्ष्य में काशी आये हैं।
गेहूं साथ लाये हैं। एक पीताम्बर साथ आया।
श्री शिवकुमार राय दिल्ली से आये। वे समारोह में नहीं पहुंच सके थे।
उन्होंने प्रकाशित पुस्तक मांगी। "देवकी दिव्य-विभूति" गायत्रीकाव्य
और ये प्रतियां ले गये। विद्यानन्द को कोमल अवस्था में लाये। उनके
के बारे को चर्चा करते रहे।- शाम को जमा भी कुछ, परीक्षा आदि
जलपान किया.. गाय का दूध। श्री राजनैति राय.. गाय पालते हैं।
परिवार को दही दूध की सुविधा रहती है। प्रमोदकुमार के लिये
नया बैग-सामान के लिये ३०० रुपये में खरीदा गया। पैसे मैंने बच्चों
के पैसों में से दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।२७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

सूर्यो० ६।२, सूर्या० ६।७

आज प्रातः स्नानादि से निवृत्त... स्टेशन आये। देहरादून एक्सप्रेस पकड़कर काशी पहुंचे। वैनीपुर के राजेन्द्र शर्मा के लड़के अपनी परीक्षा देने के लिये आकर ठहरे हुए हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में परीक्षा होती है।

सुश्री अन्नपूर्णा से पता चला कि डा० उदयनारायण तिवारी के पौत्र [illegible] - मनोविज्ञान डा० लक्ष्मीनारायण पाण्डेय [illegible] ब्रह्मलीन हो गये हैं। ग्यारह को मणिकर्णिकाघाट पर उनकी दाहक्रिया हुई। इलाहाबाद से उनके लड़के ने मुझे याद किया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् । २९ ।
मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः । ३० ।

सूर्यो० ६ । १, सूर्या० ६ । ७

आज १० बजे रिक्शा से डा० लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी के अंधी नाला स्थित उनके गृहनिवास पर गये। आज एकादशाह की प्रक्रिया [illegible] थी। सभी पारिवारिक सदस्य बनारस [illegible] गई शायद [illegible] रह [illegible] गये थे। पर कुछ ही क्षणों में लौट [illegible]। मुख्य सड़क पर उनके ज्येष्ठ पुत्र जो प्राध्यापक हैं, मिले। वे मुझे देखते ही [illegible] हो गये मुझे भी करुणा हो आयी.. पारिवारिक स्नेह संबंध की तरह चला आ रहा है।

उन्होंने २२ तां. को ब्राह्मण-आशीर्वाद भोज० में आकर भाग लेने के लिये मुझसे सप्रेम अनुरोध किया। मैंने आने का वचन दिया। लौटकर भोजन व [illegible] पर भोजन किया। तीन रोटी सब्जी.. टमाटर की चटनी। लड़कों के लिये... कुछ फल फूलादि ले आये।

श्री राजेन्द्र शर्मा के यहाँ सायंकाल गया.. उनकी परीक्षा २६ ता. को होने को है अतः २५ ता की शाम को मठ में पधारेंगे। मैंने सिंधी के [illegible] शर्मा... स्वामी नन्दी [illegible] का पता लगाने का संदेश भेजा।

बड़े परिश्रम से श्री राम स्वरूप सिंह - ग्रा. पो० सिलाव - जिला नालन्दा बिहार को पत्र लिखकर आमंत्रित की बुलाया.. उनसे सहायता लेकर मठ में भगवान् तथागत की दो फुट की संगमरमर की प्रतिमा प्रतिष्ठित करने का विचार है। इसी माध्यम से विश्व [illegible] से संबंध जुड़ने पर मठ का विकास होगा और इसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त होगी। बौद्ध साहित्य के कुछ प्रमुख ग्रंथ.. मठ के श्री स्वामी सहजानंद शोध संस्थान के लिये प्राप्त होंगे। पता चला कि गाथा काण्ड के ५८० [illegible] [illegible] को मिल गये हैं; वे बनते नहीं।

[illegible] कुछ दिनों पूर्व [illegible]-व्याकरण अपनी पत्रिका निकालेंगे पर मेरी समझ में यह [illegible] होगी। आजकल विकट आर्थिक परिस्थिति

भोगकी आशावाला मनुष्य कर्मयोगी नहीं होता।

में पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन बहुत कठिन कार्य है। जो इच्छा है वे करते हैं, [illegible].. रोकता कौन है? [illegible] के। वे आजकल [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः। श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः। ३१।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्। सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः। ३२।

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ६।८ — होलाष्टकारम्भ

(हाशिये पर: बाद ही अदलीबाजार गये थे)

आज अदलीबाजार उपलक्ष्मीनारायण त्रिपाठीजी के स्वर्गीय। गत १० मार्च को वे ब्रह्मलीन हो गये थे। उनके पौत्र का १५ या १६ ता० को फोनसे समाचार मठ में मिला था। उनके कनिष्ठ जो बिजौली में संस्कृत-पाली के प्राध्यापक हैं मिले। डा० त्रिपाठी की धर्मपत्नी तथा अन्य संबंधी भी मिले। पुरन रिक्शा से वापस होगये। रास्ते में त्रिपाठीजी के गोरखपुर के दामाद मिले जो मिश्र [illegible] उसी [illegible] हैं। चार सौ रुपये [illegible] के मठ के उपलक्ष [illegible] को वेद-भाष्यों के लिये दिया था। पता नहीं कि कब मिलेगा - आज पता लगा कि दिल्ली [illegible] है। [illegible] भाग में ऋग्वेद, [illegible] में अथर्ववेद, दो भाग में यजुर्वेद के भाष्य हैं।

ऋग्वेद भाष्य १००० [illegible] यजुर्वेद भाष्य दो सौ रुपये का। [illegible] रुपये लौटा रहे हैं - मैं [illegible] उनके [illegible]। पैसे [illegible]। [illegible] व [illegible] में [illegible] नहीं रह सकते।

आज रामजी [illegible] का [illegible] पत्र [illegible] में छोड़ गया। × × ×

[illegible] शर्माको [illegible] पत्र लिखा। [illegible] तथा [illegible] की प्रबंध-व्यवस्था आदि के संबंध में [illegible] किया। [illegible] में पत्र लिखा और [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति । ३३ ।
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ । ३४ ।

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८ — आज डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी की अन्त्येष्टि की तेरही- ब्राह्मण-अतिथि भोजन में सम्मिलित होने अर्दली बाजार (उनके निवास स्थान-घर पर) गये। उनके तीनों पुत्र एवं धर्मपत्नी बड़े [illegible] सद्भावसे भोजनो-परान्त उसी रिक्शे से वापस आ गये।

* * *

२५ ता० को अपने मठ में शान्तिचारी के श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने का कार्यक्रम बनाकर निमन्त्रण [illegible] जिसमें संस्कृत-विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों- संस्कृत-पालि भाषा आदि के मनीषी भाग लेंगे।

प्रमोदकुमार जवाहिर यादव- जगदेवपुर [illegible] मठ में भवन टूट-फूट आवश्यक स्थलों की मरम्मत करा रहे हैं।

सत् और असत्‌को ठीक तरहसे न जानना ही मोह है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।३९।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ६।१०

आमलकी एकादशीव्रत
(भद्रा दिनमें ९.२५ बजेतक)

आज राजगुरुमठ के शिवालाघाट स्थित संन्यासी मठ में श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-शोध-संस्थान में वरिष्ठ प्राध्यापक श्री डा० लक्ष्मी नारायण तिवारी की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता संस्था के संरक्षक स्वामी विमलानंद सरस्वती ने किया।

सभा में वक्ताओं की कड़ी में बी० एच० यू० के डा० कमलेश जैन ने कहा कि स्वामी विमलानन्द सरस्वती द्वारा रचित "लउआयन" महाकाव्य भोजपुरी भाषा में बौद्ध-साहित्य का इतिहास में एक मानक ग्रंथ है। ३१ सर्गों में लिखित महाकाव्य इतिहास, काव्य एवं दर्शन की त्रिवेणी है। इसके मु. पृष्ठ में प्रो० तिवारी का [illegible] बहुमूल्य योगदान रहा। प्रो० तिवारी एक चलते-फिरते पुस्तकालय थे। प्रो० तिवारी का बहुमूल्य कार्य त्रिपिटक का हिन्दी अनुवाद था। उनके कठिन परिश्रम के बाद भी पालीसाहित्य के क्षेत्र में उनका कार्य अधूरा रह गया।

प्रो० तिवारी ने संस्कृत-विश्वविद्यालय में शिक्षक से लेकर कुल-सचिव एवं कुलपति तक के पद को सुशोभित किया।

संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो० डा० राधेश्याम द्विवेदी ने कहा कि प्रो० तिवारी ने हिन्दी के पाली व्याकरण का प्रकाशन कराया था। वे जहाँ जाते, अपनी छाप छोड़ देते, उनमें जड़ता नहीं थी। उनका नियम पालन एवं अदम्य उत्साह अनुकरणीय था। बी० एच० यू० के प्रोफेसर कोमल जैन ने कहा कि तिवारी जी के पास अदम्य उत्साह था। रिटायर होने के बाद भी वे अपने पठन-पाठन के कार्य में लगे रहते थे। प्रो० तिवारी के अभिन्न मित्र केन्द्रीय-शिक्षण संस्थान के निदेशक ज्योतिषी राम सिंह पाण्डेय ने कहा कि तिवारी जी संस्कृत विश्वविद्यालय के एक ऐसे कार्यकर्ता थे जो प्रतिकूल परिस्थिति में भी समभाव रखते थे। वे सभी विद्यार्थियों [illegible]

परिश्रमसे उपार्जित धनका दान ही शुद्ध दान है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहस करते थे। उनके संरक्षण भाव के कारण विद्यार्थी भावनात्मक रूप से उनसे जुड़ जाते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्।४१।
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।४२।

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ६।११ — भौमप्रदोष

वे संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी और अंग्रेजी आदि कई
भाषाओं के विद्वान थे। बी०एच०यू० के पाली-विभाग के
पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० एन०एच० समतानी ने कहा कि मैंने
अपने जीवन में ऐसा दूसरा व्यक्ति नहीं देखा। तिवारी जी
बहुमुखी मेधा के धनी थे। पाली-साहित्य के प्रति उनका
योगदान अविस्मरणीय है। यदि तिवारी जी के कार्यों की चर्चा
की जाय तो तीन घंटे के इस कार्यक्रम के बदले तीन दिन के कार्यक्रम में
भी पूरा नहीं कहा जा सकता। संस्कृत-विश्वविद्यालय में साहित्य विभाग
के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० रमापति त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृत-
विश्वविद्यालय जिस उद्देश्य के लिये बना था जी दूर्ति के लिये,
बना था उसको पूरा करने में प्रो० तिवारी सदा लगे रहते
थे। विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर विधि, बी०एड० आदि
आधुनिक विभागों के वे विरोधी थे। उनका कहना था कि
आधुनिक विषयों का प्रचार-प्रसार तो और विश्वविद्यालयों
में हो सकता है। यदि व्याकरण, सांख्य, मीमांसा आदि की
पढ़ाई यहां नहीं हुई तो कहीं नहीं हो सकती। वैदिक वाङ्मय का
प्रचार-प्रसार तो केवल यहीं संभव है।
उनकी अभिव्यक्ति की यह कला थी कि वे अपनी बात
प्रत्येक को भी समझा सकते थे। विनोदिता उनमें कूट-कूट कर
भरी थी।

इससे पूर्व शोध-संस्थान में गोष्ठी

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन स्वामी विमलानंद सरस्वती ने कहा कि
प्रो० तिवारी जी की स्मृति में शोध-संस्थान में उनकी एक प्रतिमा
संस्थापित की जानी चाहिए एवं गुरु पूर्णिमा पर प्रो० तिवारी जी की स्मृति में
एक स्मारिका प्रकाशित की जानी चाहिए। सभा का संचालन करते हुए

परिश्रमसे उपार्जित किये हुए धनका शुद्ध हृदयसे दान करना अत्यन्त दुष्कर है।

श्री . . . . ने कहा कि प्रो० तिवारी . . . . . के
विश्वविद्यालय . . . . के
. . . .।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः।३।

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११ — भद्रा रातमें २.३७ बजेसे

आज सहसा बक्सर से श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम से
नाते संन्यासी दण्डीस्वामी रामानन्द सरस्वती जी पहुँचे। [illegible]
बाद [illegible] करने से स्वामी [illegible] पहले से भी [illegible]
पहुँचे। [illegible] के [illegible] [illegible] उनकी सेवा सभी
लोगों ने [illegible] से आज तक उपस्थित होकर [illegible] करते रहे।
[illegible] होती थी [illegible] दोनों
पति पत्नी मेरी [illegible] के लिये प्रयत्नशील हैं [illegible]।
[illegible] देकर [illegible] पर दूसरे दिन के लिये [illegible]
दूध-[illegible] कर लिया। [illegible]
कि उसमें बीच से एक आलु [illegible] था। [illegible] देखकर
रोटी-सब्जी छोड़ दिया। [illegible] नहीं [illegible] है।

आज इनाम बुलाकर [illegible]। [illegible] के लिये
चावल आदि तथा [illegible] दिये गये।

श्रेष्ठ पुरुष नीच पुरुषोंद्वारा कही गयी कड़वी बातोंका कभी उत्तर नहीं देते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप।२।

सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ६।११ — पूर्णिमा (भद्रा दिनमें १ बजेतक), होलिकादाह (प्रदोषकालमें)

आज मनोरमा रूपरक्षा - गार्गी-साक्षी सहित ११ बजे आ गयी। मेरे लिये दवा-पुड़ी काजल ले आई हैं। दो दिनों के भोजन का। दोनों महात्माओं को भी भोजन कराया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

८८ दिन]	चैत्र कृष्ण १, सं० २०५८, शुक्रवार, MARCH 29. 2002	[गीता

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।३।

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।४।

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ६।१२ — वसन्तोत्सव, होली

आज स्वर्गीय हरिहरनाथ त्रिपाठी [illegible]
ने आगत महात्माओं को भोजनालय कार्यक्रम
के दौरे समय उनकी इच्छा के अनुसार भोजन
बनाते हैं। जानकारी मिली है वर्तमान समय के दौर
पर वे लोग अपनी इच्छा रखते हैं तत्काल
भोजन जलपान करते हैं। इच्छा होने पर [illegible]
मैंने [illegible] संकेत किया कि इच्छानुसार भोजन बनाना चाहिये।
भोजन भी करने का प्रयास करें। आगे वाली [illegible]।

प्राण भले ही चले जायँ, किन्तु अपने प्रणको नहीं छोड़ना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।५।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।६।

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ६।१२

आज भी भोजन बना दिन सब दोनों-शाम।
मैं प्रतिदिन चार-चार पूवा दोनों पुत्रों को जलपान के लिए देता रहा। यह सद्गुरुदेव की भेंट समझता हूँ।
वे लोग स्वयं भी गोइठा जलाकर बाटी-चोखा बनाते खाते तथा भोजन करते रहे। इसी तरह दिन भी व्यतीत हो रहे हैं।

साधु पुरुषका सङ्ग कभी निष्फल नहीं होता; अतः सदा सत्पुरुषोंके ही समीप रहना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।७।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।८।

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ६।१३ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज प्रमोद कुमार जी सपरिवार ६ बजे ही आ पहुँचे। सायं में केशनारायण जी भी। सायंकाल हरिराम जी कटे से आ गये।

बाद में लालू के आने की प्रतीक्षा होती रही। बच्चे-बच्चियां आ गये। थोड़ी राहत मिली।

महाराजपुर से इन्द्रजीत शर्मा ने दो धोती भेजी आज रु भी जो दिये गये।

विषयभोगका प्रेमी तो संसारका एक छुद्र कीड़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन। ९ ।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।१०।

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३ आज शारदाप्रसादराय कृष्ण डि० डि० आ पहुँचे।
वे कन्याके विवाह के प्रसंगमें रह कबूल रहे हैं। प्रयत्न
कर रहे हैं। प्रातः लालजी भी आ गये। कृष्णदेव बाद
पिताके भी विमलचन्द्र राम: उनके संबंधी जहानाबाद के
पंडुई ग्रामकी लगनकन्याके चिकित्सार्थ आ पहुँचे।
मझलालोग कुछ कष्टसे सम्भवतः संकुचित थे..
अतः सबने व्यवस्थित पहुँचे और जानेकी जिनको
थे कि विवाह में सम्भवतः मिलेंगे।
मेरी सेवा-सहायता कौन भलाई।

सौहार्दसे ही समस्त प्राणियोंका एक-दूसरेके प्रति विश्वास उत्पन्न होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।११।
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः। क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।१२।

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ६।१४ आज श्री रामरेश पाण्डेय · [illegible] को एक
पत्र लिफाफे में लिखा। दूसरा पत्र लिफाफे में
नालंदा जिले के गोपालधाम आश्रम · [illegible] [illegible]
को लिखकर गौरांगकृष्ण की मूर्ति और मठ में स्थापित
करने के संबंध में लिखकर प्रेषित किया।
डा. [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] लिखा
और दूसरा - बाबू गोपालजी · [illegible] [illegible]
को लिखकर - मठ के [illegible] के [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
के संबंध में लिखा जो आज तीनको [illegible] में [illegible]
उनके लिए [illegible] [illegible]।
उनसे कहते हैं कि बहुत बोलते हैं - वह अलग होकर
मठ में रहकर कुछ काम नहीं [illegible] या देहात
की तरह [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] [illegible] में नहीं आता। कैसे [illegible] होगी,
कैसे शरीर की रक्षा होगी।
मैं तो सब तरह से लाचार हूँ। भगवान की ऐसी
लीला - [illegible] तो भोगना ही पड़ेगा।
साधुओं के। समझाकर [illegible] के प्रसंग में
भगवान के अभिन्न [illegible] [illegible] को भी [illegible] [illegible]
जो [illegible] [illegible] में [illegible] हैं वे [illegible] [illegible] [illegible]
आश्रम के पास [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्। १३।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा। इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते। १४।

सूर्यो० ५। ४६, सूर्या० ६। १४

आज बाबा श्री सुरेन्द्रनाथ रायको एक पत्र
अंतर्देशीय लिफाफेमें लिखा। दूसरा पत्र इसी अन्तर्देशीय लिफाफे
में श्री सुबोधगिरि माला कार्यालय, शाहीद नगर कुटीके आचार्य
श्री कृष्णबिहारी शर्मा को भी पुस्तक के अर्पण के संबंध में
लिखा। तीसरा पत्र पोस्टकार्डपर बाबाके स्नेहभाजन -
पोस्टमास्टर, उनके शिष्य के पुत्र - वीरेन्द्रकुमार रायको उनके
बाबाके पौत्र पद दिलवाया। श्री सच्चिदानंद तिवारी - बड़े पुत्र के भाई
कार्यकर्ता के श्री अधिकारी - श्री डॉ. रामनाथ त्रिपाठी का - उनके मित्र
श्री सच्चिदानंद त्रिपाठी का ही तीन वर्षों से समाचार न पाकर
व्याकुलता से उनके संबंध में जानकारी के लिए कह दिया।
श्री राजेन्द्रसिंह राय चिकित्सार्थ आनेवाले थे नहीं आये। अतः बाबा ने
उनकी परिस्थिति - कुशलमंगल जानने के लिए उन्हें भी कार्ड पर पत्र
लिख कर शीघ्र काशी पहुंच दर्शन देने को कह दिया।
श्री राजेन्द्र पाण्डे सफल ... में समाज ... गाज़ी
ऐसा लिखा। ऐसे लोग ही हैं सच्चे पारिवारिक व्यक्ति हैं।
उनके आश्रम बाबा आश्रम का कार्य बनाने के संबंध में लिखा होगा।
शिवगुरु धर्मनिष्ठ श्री ... विधानंद दो दिनों से
मठ में आ रहे हैं। उनके आने से मठ में नवजीवन आ जाता है,
रौनक हो जाती है।

क्रोध प्रयत्नशील साधकोंके अत्यन्त दुःखसे उपार्जित धर्मका नाश कर देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः। कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।१५।
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः। तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।१६।
सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ६।१५

आज रात को विष्णुचन्द गोरखपुर चले गये... उनके अस्पताल पर न जाने में। दो तीन दिनों में... वहां रह कर [illegible] कराएंगे। मगर वे है, प्रोफेसर वहां रोग [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible]। इनके [illegible] के क्या है, दवा से नहीं है।

यह कलिकाल पापोंका भंडार होनेपर भी आत्मोद्धारमें परम सहायक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः। अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः। १७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्। १८।

सूर्यो० ५। ४४, सूर्या० ६। १५ — **श्रीशीतलाष्टमीव्रत**

आज नरदं के कृष्णबिहारी शर्मा-शिक्षक जो बक्सर (बी) में भाग ले कर रहते हैं तथा सुजानपुर के लैमो कृपाल सिंह के परिजनों एवं मित्र उनमें एक मित्र के साथ देखने को आये। भोजन करके आये थे।
प्रातः उनकी अपनी दीक्षा करवाकर टी०एन० वाजपेयी दे गया।
रात को सबको के साथ भी सत्संग की बातें करते रहे।
वे लोग ५१रु ५१०० पूजा के दे गये।
बाद में रेवतीपुर के एक सज्जन जो दामोदर राय के नातेदार हैं- श्री कमलेश्वर राय की पुत्री का विवाह है, वे गाजीपुर में दवाई का कारबार कर बनाकर रहते हैं। वे भी प्रणामी दे गये।

स्त्रियोंका अपने भाई-बन्धुओंके यहाँ अधिक दिनोंतक रहना अच्छा नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः। ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः। १९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः। कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः। २०।

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ६।१६ आज मुहम्मदपुर के पं० दयाशङ्कर सिंह जी मेरे
शिष्य हैं तथा जो महापालिका में कार्यरत हैं [illegible] पहले
[illegible] में आये। [illegible] कराकर [illegible]
बनाने के प्रसंग में विचार विमर्श हुआ। [illegible]
मैंने उन्हें गायत्री [illegible] दिव्यानुभूति [illegible]
भेंट की। [illegible] आदि [illegible]
मंगाया। [illegible]
[illegible]
के प्रसंग में [illegible] के लिये दिया।
[illegible] के लिये
दिया [illegible]
[illegible]
उठ रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। २३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना। २४।

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१७ — पापमोचनी एकादशीव्रत

आज [illegible] श्री सिद्धनाथ राय को लिफाफे में अपने [illegible]
विस्तृत पत्र लिख भेजा। इसकी प्रति [illegible] श्री [illegible]
एक पत्र डा० [illegible] पाण्डेय, [illegible]
[illegible] पाण्डेय को पत्र लिखा कि वे [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति। २५। श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति। २६।

सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।१७

आज सहसा धौडुडीह के जगन्नाथ ठाकुर शर्मा
पूर्व प्रधान आ पहुँचे। समाचार उन्हें नरहरदेव से मिला था। किसी
न किसी वहाँ अभियोग के लिये बाबा की भूमि हथियाना चाहते हैं।
पूर्व प्रधान- एक पार्टी के नेता पारसी सदानन्द कहते हैं कि
स्वामीजी और सभी कागज पत्र फर्जी हैं। स्वामी शिवानन्द है नहीं
मरे हैं। यद्यपि डाक्टर सोनी प्रमाण दे दिया। इनके पक्ष में ही।
उसकी पहल पर मुझे एक दिन ११ अप्रैल के लिये धौडुडीह
जाकर उपस्थित होना पड़ेगा। मैं किसकी स्वयं प्रेस से
भी ब्रह्मदीन पाण्डेय के किनारे [illegible] पं० [illegible] उपस्थित पहुँचूँगा।
वहाँ से उनकी गाड़ी से के घर के लिये धौडुडीह पहुँचकर
साक्षात्कार करेगा। इससे समर्थन में सजीवन [illegible]
कारी श्री ब्रह्मदीन पाण्डेय को भी साक्षी रूप से पेश
कर दिया जाएगा। प्रमोद कुमार दीक्षित मेरे साथ वहाँ
जायेंगे और साथ ही पढ़ना। [illegible] सामाजिक गाड़ी से
वापस लौटेंगे- ऐसी योजना है।
वहीं श्री सिद्धनाथ त्रिपाठी के पते पर सोनी के वहाँ गयी
जमावड़े पर एक मार्गदर्शक पत्र लिखा जहाँ देवानन्द,
स्वामी शिवानन्द, नवीनानन्द तथा देवी रामानन्द सरस्वती आनन्द
जुटे हैं। ये लोग समाज की मर्यादा भंग करके तथा तृष्णा में
व्यर्थ उदरपोषण में लगे हैं। मैं सबका गुरु हूँ। मुझे कोई एक लोटा
जल नहीं देता। मेरे जबलपुर के शिवानन्द पाल - उन्हें कहते हैं
कि स्वामीजी बहुत

विनाशकाल उपस्थित होनेपर बुद्धि नष्ट हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते । २७ ।
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः । २८ ।

सूर्यो० ५ । ३९, सूर्या० ६ । १८ — **प्रदोषव्रत**

आज श्री रामस्वरूप सिंह को एक पत्र पोस्टकार्ड लिखा. और बुद्ध-प्रतिमा आदि की चर्चा किया। पत्र कहीं जा सका.. और इलाहाबाद- [illegible] [illegible] सिविल वगैरह को उलझन को लेकर [illegible] [illegible] [illegible] के वगैरह को उलझन, [illegible] के लिये चलकर [illegible] [illegible] पहुँचे। [illegible] शाम.. [illegible] स्टेशन पर अपनी कन्या को लेने के लिये अपनी मोटरसाइकिल लेकर आये.. अपने [illegible] गये। उन्हें दूसरे दिन मोटर में [illegible] चलने का कार्यक्रम बना। भोजन विश्राम किया। [illegible] [illegible] आदि ए.मी आकर [illegible] के [illegible] [illegible] हैं। इस परिवार की [illegible] बहुत [illegible] स्वामी सिद्धेश्वरानन्द के तप-त्याग एवं सच्चाई-कड़ाई का आपका सुपरिणाम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः। २९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः। ३०।

सूर्यो० ५। ३८, सूर्या० ६। १८ प्रातः अपने किसी मित्र की गाड़ी लेकर कैन्ट-
[illegible] गये। शाम को १० बजे पर मीरपुर [illegible]
पर पहुँचे। वहाँ कुछ देर रुककर . गंगा जी तीर आ पहुँचे। मधुसूदन जी भी
पुनः [illegible] भी गये .. वहाँ दरोगा जी मौजूद थे। पुनः वकील
गये वहाँ से लौटकर [illegible] भी गये। [illegible] के पास भी गाड़ी
[illegible] गई .. क्योंकि कोर्ट में विलम्ब थी। [illegible] .. [illegible] को
[illegible] नहीं मिला। बाद में भोजन हुआ।
दरोगा जी [illegible] फटकार। पहले तो उनसे कहा कि आप
कहते थे मैंने [illegible]। आप स्वामी [illegible] को दे
भी नहीं होंगे। [illegible] आज से [illegible]
[illegible] इस [illegible] होंगे।
[illegible] राजपुर में जब [illegible] के यहाँ बच्चा का मुण्डन-
के [illegible] स्वामी श्री [illegible]
कहते थे क्योंकि उन्हें [illegible] थी .. [illegible]
इलाहाबाद [illegible] .. [illegible]
[illegible] .. बाद में कहा कि भूल हो गई .. मैंने आपको
देखा पहचाना नहीं था .. आदि। [illegible]
[illegible] से मामला [illegible] हुआ। [illegible] प्राइवेट [illegible]
[illegible] वहीं हैं [illegible]
[illegible] आ पहुँचे। [illegible] सहसा [illegible]
[illegible] से [illegible] आ गये थे .. [illegible]
हुई। बाद में [illegible] आ पहुँचे। [illegible]
[illegible] के संशोधन के लिये [illegible]
[illegible] के लिये [illegible]
[illegible] अध्यापक [illegible]
[illegible] हैं। उन्होंने [illegible] के साथ फलफूल [illegible]
[illegible] दिये।

कर्ममेंसे बुराई निकालनेका एक ही उपाय है—'भगवत्-समर्पण बुद्धि।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम। ३१।
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे। कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे। ३२।

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१९ **अमावास्या**

आज भी दुबी रह ११.३० बजे तक मा० महाराज के पास उनके निवास
पर बैठा रहे। कुछ अत्याचार [illegible] बातें आदि श्रवण किया।
डा० द्विवेदी [illegible] मेरे डाक्टर [illegible] के [illegible] के लिये
[illegible] कुछ दवा दिया तथा कहा कि [illegible] ठीक है। [illegible]
[illegible] नहीं। [illegible] के शिष्य
आदि भक्त शिष्य गण स्वागत सम्मान [illegible]
डा० [illegible] द्विवेदी ने रामबाग [illegible] उनकी उपस्थिति
[illegible] के बाद [illegible]। कुछ [illegible] में [illegible] आये।
[illegible] कोई [illegible] उसे कुछ [illegible]
[illegible] बाद में [illegible]। पास में [illegible] बैठे
[illegible] भी [illegible] में [illegible]
ठीक [illegible] नहीं किया। [illegible] रहकर
[illegible] में पहुँचे। रोटी-दही [illegible] भोजन किया [illegible]
कुछ विश्राम किया। [illegible] को [illegible]
का [illegible] दिया [illegible] लिखा [illegible]। बाद [illegible]
[illegible] दिया। [illegible] में [illegible]
[illegible] भी [illegible]
को [illegible] के लिये [illegible]।
[illegible] कभी [illegible] और [illegible] अपनी [illegible]
[illegible] भी नहीं किया। [illegible]
[illegible] में [illegible] तक [illegible] रहा।

कोरा तर्क या कुतर्क करनेवालोंसे विशेष बातें नहीं करनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।३४।

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९ — चैत्र नवरात्रारम्भ, 'मन्मथनाम' संवत्सर

आज ही मढ़ी से श्री स्वामी नन्दीश्वरानंद परमहंस
का भेजा पोस्टकार्ड प्राप्त हुआ। मैंने उनको उत्तर भेज
दिया और उनसे पत्रवाहक कार्यों शिवालाघाट में आकर
सेवा धर्म निभाकर अपनी मदद के लिये आग्रह किया।
इसके पश्चात महामृत्युंजय के पंडित श्री इन्द्रजीत शर्मा के
लोगों की मदद से उन्हें आगे राजगुरुमठ की प्रबन्धक-
समिति के नये निर्वाचन दस्तावेज में - संशोधन कर आवश्यक
पुनः दूसरे संशोधन के लिये लिख भेजा।
संशोधनपत्र पिछले कई महीने से प्रबन्धक-समिति
की बैठक में चलता है और विचार होकर कागजों की
प्रक्रिया में ही रुका पड़ा है। इसलिये न्यायालय के पूर्व
फैसले के आधार पर कोई कदम नहीं उठा सकते।
इस समय मठ की कोई प्रबन्धक-समिति नहीं होने से इसका
कोई रजिस्ट्री दस्तावेज भी नहीं।

सबके सामने या दूसरोंकी आँख बचाकर कोई बुराई न करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव। येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि। ३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि। ३६।

सूर्यो० ५। ३४, सूर्या० ६। २० – वैशाखी, मेष-संक्रान्ति, खरमास समाप्त (प्रातः ६.३३ बजे)

आज आधा किलो सत्तू १५ रुपये में खरीदकर मंगाया। मैंने
सत्तू गुड़ खाया क्योंकि रविवार था। पुनः प्रमोद के कलाहन में
से कुछ खाना आलू-बादाम नमकीन है एवं दिया था।
अपराह्न कुछ लोग आते जाते रहे।...
कुछ पढ़ता-लिखता रहा। भजन-चिन्तन यही जीवन है जो भगवान
संसार है जीव के साथ लगा रहता है वही आने जाने कहलाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२० श्रीमत्स्य-जयन्ती, गणगोर

आज भी विद्यार्थी जी आये तथा अपराह्न भी विन्ध्याचल राय- कानपुर- यहाँ बैजनाथ भिवानी आये। मंगलव-चीचन के इतिहास लिखने पर बरहत्तर इसके ग्राम्य चिन्तन करते रहे। उसमें शैव-शक्त एवं बौद्ध संस्कृति के संबंध के कुछ ग्रंथों को देखना तथा उत्तर क्षेत्रीय राजाओं की मान्यतायें एवं गीत-विधियों का जानना और उनके योगदान की भी चर्चा करनी पड़ेगी।

इसलिये कलकत्ता इन्द्रजीत शर्मा को पत्र लिखकर वहाँ से कुछ पुस्तकें मगाऊँगा।

(१) Hindu caste and sects. K.C. Yogendra Bhattachary.
(२) Indo Aryan races. Ram Prasad Chanda.
(३) मेघनाद-वध महाकाव्य १७ सर्गों का बंगला एवं हिन्दी जिसे माइकेल मधुसूदन दत्त ने बहुत पहले लिखा था। मैंने भागलपुर के कॉलेज काल में - यह पुस्तक १० वर्ष में पढ़ी थी।

x, x. x.

जो आपत्तिकालमें भी धर्मको धारण करता है, वही धर्मात्माओंमें श्रेष्ठ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।३९।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति। नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।४०।

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२१ आज श्री इन्द्रजीत शर्मा का पत्र लिखवाया
और उसमें एक [illegible] तथा कुछ सूचीफलसहित
पुस्तकों के लिये लिखा। श्री गीताप्रसाद पाण्डेय का समाचार
सुनाते [illegible] के साथ इस पत्र में [illegible]
थी (ज्ञानेन्द्र शेखर पाण्डेय आयकर [illegible] है उनसे सहयोग प्राप्त
करने की ओर ध्यान किया।

'संदेह का स्रोत' - इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित
अरविंद कुमार [illegible] प्राध्यापक स्नातकोत्तर महाविद्यालय
की उत्कृष्ट पुस्तक (पुरस्कार प्राप्त [illegible]) पुस्तक का नाम
'भारतीय साक्ष्य-अधिनियम' है उसे मठ की
पुस्तकालय के लिये मंगाना है।
पुस्तक के रचयिता - हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
वाराणसी के प्राध्यापक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।४१।
तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।४२।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसन्न्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२१

नवरात्र में प्रमोद कुमार अपनी [illegible] पूजा के साथ [illegible] और [illegible] की भी पूजा करते हैं।

हरेराम के यहां [illegible] के [illegible] में गया हूं पर [illegible] विशेष मूल्य कीमत नहीं है। अतः कुछ और [illegible]।

[illegible] में प्रायः [illegible] की तरह [illegible] रहता हूं। दिन में पढ़ना लिखना हूं।

अमितकुमार [illegible] सहसा पटना से आ पहुंचे। वे [illegible] डाक्टरों से [illegible] में उनका [illegible] और वे [illegible] .. अतः उनका वहां [illegible] आये। वहां के [illegible] और [illegible] के सम्बन्ध में कुछ विचारविमर्श हुआ।

[illegible] जीवन के इतिहास लेखन के सम्बन्ध में भी कुछ विचारविमर्श होता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

श्रीभगवानुवाच

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२२ मैथिली एवं गार्गी की परीक्षा हो रही है।
[illegible] प्रयोग शिक्षिका आती हैं।
कल कहते है [illegible] गर्मी का और उमस कि समस्या के
कारण की पूजा पाठ दें.. गृहप्रवेश का कार्य गर्मी को देखते
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। ३।
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्। ४।

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२२ प्रमोद [illegible] हूँ। सिर में चक्कर
हाथ की झुनझुनी आदि। पहले लिखते - बहराते आदते।
प्रमोद अपनी पूजा के साथ और किसी की पूजा करते हैं।
∴ गाड़ी पैसों के अभाव में रुक रुक कर चलती है।

ऊपरसे मनुष्य जैसा दिखायी दे, उससे कहीं अच्छा मनमें होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।५।
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।६।

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।२३

आज ईस्टर. अपने पुत्र मदु उपाध्याय के साथ
नवनी मार्ग जा जैन गये।

वे स्वेच्छ का व्यवसाय करते माँग पत्री धँसका कुछ पाते
प्रायः दो हजार इस तरह और लगभग दो हजार प्रत्येक
पत्र से प्राप्त करते हैं।

जो भी हो, इन लोगों के रहने से अभी विश्वास
है विश्लेषण से गाड़ी नहीं चलेगी।
संस्कृत में न कुछ करते हैं न सहयोग ही
देते हैं...

अपने लिये दवा का उचित प्रबंध नहीं है अतः
स्वास्थ्य लड़खड़ाता जाता है। डा० प्रसाद कि जारहे थे
कुछ दवाएं दी थी.. वही कभी कभी चल रही है,
जैसे भी आवश्यकता नहीं रहती।

दातव्य का चीज घर पहुंचा गया लाल कपड़ा.
सर्दियों का बिस्तर बच्चों के लिये।
दो पोस्टकार्ड व लिफाफे भी मंगवाया।

कल्याणकी उत्कट अभिलाषा जाग्रत् होते ही कर्म, पदार्थ और परिवारसे अरुचि होने लगती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।७।
नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्।८।

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।२४ — श्रीरामनवमीव्रत

आज प्रमोद कुमार - अपनी औपचारिक पूजा के बाद
[illegible] अर्दली बाजार - श्री इन्द्रजीत शर्मा की पूजा करके
चले गये। मुझे बहुत कष्ट है। सिर में चक्कर
दोनों पाँवों में कमजोरी आदि हैं। क्या जानें कब आयेंगे? यह कष्ट
अखरता है, वे सामने रहते हैं तो संतोष रहता है।

मनुष्य कर्म किये बिना नहीं रह सकता, चाहे वह ज्ञानी हो या अज्ञानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्। ९ ।
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा। १०।

सूर्यो० ५। २७, सूर्या० ६। २४ आज दतिया के [illegible] [illegible] तथा
उनके [illegible] मझियारी के यहां आये और गंगास्नान और
श्री विश्वनाथ जी का दर्शन करके [illegible] पटना वापस लौट गये।
[illegible] दे गये। पत्रिका सम्पादक को। शेष एक सौ रुपये
श्री हरिराम शर्मा को दिया.. पहले से उनके पास [illegible] था..
उन्हें [illegible] राधाकुमुद मुखर्जी की Ancient Indian
Education - मंगाया। [illegible] रु० वापस दिया ...
पुस्तक ४२० की में मिली। ५० [illegible] पर [illegible]
५० रु० चौबे जी को दिया।

वशमें की हुई इन्द्रियोंके द्वारा ही कर्मयोगका आचरण होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि। योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये। ११। युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते। १२।

सूर्यो० ५। २६, सूर्या० ६। २५ — कामदा एकादशीव्रत

आज एकादशी व्रत है.. सिंघाड़ा तथा आलूकी
मुंगिया... आलू गर्म करता है.. पर खाना ही है।
साधु संतों को जो मैं दीक्षित किया है. वृन्दावन से विकल
पेट पोषणा है। कलकत्ते वाले लोग मठ के लिये सिद्ध
बनेंगे। अपराह्न.. कलकत्ता से सिकटी होते कैलाश पाण्डेय
आये.. वे अपनी कन्या के मामले की पेशी में आये हैं।
वे श्री इन्द्रजीत शर्मा के दामाद को वकील रखे हैं.. और
मिलने गये.. और लौटकर मठ में विश्राम किया।
कल से ही चिन्मयानन्द विधान चन्द्र शर्मा आये हैं वे इनके
गोरखपुर जा रहे। ~~[illegible]~~ उनके दामाद में कुछ रहते है.
कुछ बच्चियां मिल रहे हैं. कुछ आवास चल रहा
है। वे बड़े भक्त एवं उदार सहायक हैं।
संगम समीप से प्रमोद कुमार जो भी शिक्षित करते एवं
उदारता की प्रेरणा देते हैं तथा मठ की सेवा तथा मेरी
सेवा से सर्वाधिक जोड़ बनाते हैं।

तत्परतासे अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।१३।
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।१४।

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।२५ — प्रदोषव्रत

आज [illegible] राजेन्द्र [illegible] आया हुआ और परीक्षा देकर अपने [illegible] चला गया।

मैंने उनसे श्री राजेन्द्र शर्मा को सन्देश भेजकर [illegible] के लिये [illegible] तथा [illegible] अपने [illegible] के लिये माँगा।

सायंकाल ५ बजे [illegible] के श्री [illegible] शर्मा अपने मित्र श्री [illegible] P.W.D. [illegible] के साथ विन्ध्यवासिनी देवी का दर्शन करके लौटे। भोजन विश्राम किया।

मैं तो प्रमोदकुमार दीक्षित के नहीं रहने से बहुत खिन्न एवं चिन्तित हूँ।

वे सात्त्विक भक्त हैं। लोग उनमें श्रद्धा रखते हैं। पर मेरा निश्चित धारणा है कि वे [illegible] बड़ी [illegible] उनकी मर्यादा भी नहीं बढ़ने देंगे।
मेरे लिये तो वे लोग मार्ग [illegible] हैं।

सेवा-धर्ममें क्रियाकी अपेक्षा भावकी प्रधानता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः। अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।१५।
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः। तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्।१६।

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।२६ — श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)

आज प्रातः कैलाशपाण्डेय मिश्रा गये और वे अपने किसी पारिवारिक सहयोगी को लेकर लड़की के विवाह के प्रसंग में दिल्ली गये हैं। लड़का डाक्टर बना हुआ है और वहीं आसिरत है। पाण्डेय अवश्य मुझे फोन [illegible] के [illegible] देंगे। पत्नी घर से काम में नहीं भोजन [illegible]। अतः मैंने पत्नी सहित सावित्री-गार्गी आदि को पार्वती के लिये दिया। शेष दो सौ रुपये की पुस्तक भी इतिहास [illegible] मोतीलाल बनारसीदास से मंगाया है/ The University of Nalanda.
H.D. Sankalia या Huentsang का यात्रा वृत्तान्त दोनों का मूल्य प्रायः समान है।

छोटा-से-छोटा तथा बड़ा-से-बड़ा जो भी कर्म किया जाय, उसमें साधकको सावधान रहना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः। गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः। १७।
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः। १८।

सूर्यो० ५। २३, सूर्यां० ६। २७ — व्रत-पूर्णिमा

दो पुस्तकें University of Nalanda . Sankalia
तथा Hiuen Tsang. का जीवन चरित्र - मात्र पुस्तकें - Beal नहीं
मिलती हैं। Buddhism in Afghanistan [illegible] के बाद
मिलेंगी तथा 2500 years of Buddhism. भी . Bapat . [illegible]
[illegible] पन्द्रह दिनों में उपलब्ध होगी।
श्री प्रमोद आज भी नहीं आये। [illegible] अस्वस्थ होता जा रहा है।
दवा [illegible] का कोई प्रबन्ध नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः । निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः । १९ ।
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः । २० ।

सूर्यो० ५ । २२, सूर्या० ६ । २७ पूर्णिमा, श्रीहनुमज्जयन्ती, वैशाख-स्नानारम्भ

आज श्री प्रमोद कुमार नेही आये। न्यूजीलैण्ड प्रवास में [illegible] -श्री
और नरसी में श्री [illegible] के डेरे पर [illegible] रहे हैं।
वे साधु दृष्टि के व्यवहार वाले मिलकर आनन्द। साधु वेष लेकर
स्वतः भोजन एवं [illegible] तथा आत्मसम्मान लिये ही जाते हैं।
दिखाने में [illegible] के लिये, साधु संतों के लिये अब भी आदर है।
अतः घूम-फिरकर वहीं कहीं आश्रय पा लेते हैं।
आज अचानक वेणीपुर से श्री राजेन्द्र शर्मा आ पहुँचे।
मेरे लिये पत्रा का लड्डू तथा थोड़ी अच्छी दही ले आये।
प्रातः वापस चले गये। इन्हें अपनी गतिविधि एवं परिस्थिति से
अवगत कराया। पं० रामरक्षा जी शर्मा का दलदलपुर (?) मीरजापुर
से पोस्टकार्ड मिला। जिसमें आज भी ही [illegible] परिवार की व्यवस्था करने के कारण
की उपेक्षा [illegible] की व्यथा - मिला। वे ईश्वरपुर तथा [illegible]
या काशी में भोजन [illegible] मिलना चाहते हैं।

× × ×

आज श्री सुरेश चन्द्र शर्मा पंडित - [illegible] से आप को
लेकर आये। जो विश्वविद्यालय में संस्कृत लगाने के लिये हैं
वे व्याख्यान [illegible] के लिये स्वीकार [illegible] के लिये एक पत्र प्राप्त
करना चाहते हैं। मेरे यहाँ कोई गुंजाइश नहीं है। प्रमोद कुमार भी
[illegible] के लिये कुछ मांग रहे हैं पर मुझे स्वीकार नहीं है।

जो किसी पुरुषको सुहृद्के पदपर स्थापित करके फिर स्वयं ही उसपर दोषारोपण करता है, वह मूर्ख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् । स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते । २१ ।
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते । आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः । २२ ।

सूर्यो० ५ । २२, सूर्या० ६ । २८

आज श्री राजकेश पाण्डेय जी को पत्र लिखकर
ईंट [illegible], कमलकुमार शर्मा सांसद हैं गीता के [illegible]
उनके सहयोगी हैं तथा अन्य कई नामों के लिये पत्र भेजा।
दूसरा पत्र पं० कैलाशपति मिश्र जी राजा [illegible]
को [illegible] स्टोर के पास श्री गंगाप्रसाद [illegible] शर्मा के [illegible]
गुरुपूर्णिमा पर आशीर्वाद से नव प्रकाशित [illegible] के लोकार्पण
तथा संगोष्ठी की अध्यक्षता के [illegible] के सान्निध्य में
उपस्थित होने के लिये आग्रह किया। फोटोस्टेट प्रति
श्री मिश्र जी के पत्र की रजिस्टर्ड से भेजा।
दूरभाष से श्री इन्द्रजीत शर्मा के कलकत्ते से - [illegible] के
उनके [illegible] की सूचना प्राप्त हुई है।
वे तो प्रमोद कुमार जी तलाश में हैं कि उनके [illegible]
पूजा हो! किन्तु मैं प्रायः कुछ [illegible] रहता हूँ।
आज काशी राधाकुमुद मुकर्जी की Ancient education पढ़ रहा हूँ।
[illegible] का नवीन प्राप्त ग्रन्थ पढ़ रहा हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ।२३।
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः । स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ।२४।

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।२८ आज भी प्रमोदकुमार नहीं आये।

सुश्री अन्नपूर्णा द्वारा शारदा के पुत्र के मठ में आने से पता लगा कि प्रमोदकुमार ५ मई को आयेंगे। ६ मई को उनकी कोई परीक्षा है। और २२ तारीख को ही से मैं भार समझ लेता। मुझे लगता है मैं उसकी जिन्दगी क्या करूँ? मेरे अन्तःकरण की भावना है कि दौड़-धूप करके उनकी परीक्षाओं के लिये कुछ उत्कंठा से बैंक लोन के [illegible] भावी पीढ़ियों के नाम जमा कर देते तो मुझे कुछ शान्ति मिलती। प्रमोद की अक्ल का अजीर्ण है। वे किसकी पूजा करते हैं, मुझे समझ में नहीं आता।

x. सायंकाल आरती के पश्चात् भी फर्श को झाड़ते नहाते रहे। थोड़ा कष्ट हुआ। रात को तीन रोटियां मेथुआ की तरकारी खाया। दूध पीने की इच्छा नहीं हुई।

इन्दौर से रामस्वरूप शर्मा का पुनः दूसरा पत्र मिला। वे भी परिवार के स्वास्थ्य वातावरण से सुखी हैं। विद्यालय एवं रेलवे के प्रचार, शिक्षा आदि भी उन्होंने पत्र में परिणत हुए कृतज्ञता ज्ञापन व्यक्त किया है।

अन्यायसे पराजित होनेवाला कोई भी पुरुष अपनी उस पराजयके लिये दुःखी नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।२६।

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।२९ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज [illegible] किया। [illegible]
[illegible] किया। [illegible] नहीं है। [illegible]
[illegible] का डर है।

[illegible] - रात में [illegible]
[illegible]

[illegible] है। मैंने उन्हें [illegible] कहा। कोई [illegible]
नहीं किया। [illegible]
[illegible] से [illegible] होगा।
वे [illegible] को [illegible] उज्ज्वल [illegible]
चाहते हैं किन्तु [illegible] होकर
[illegible] हैं। [illegible]
[illegible] हूँ।
[illegible] में [illegible] कहीं नहीं है।
यही मेरी [illegible] है।

[illegible] हूँ।
[illegible] के साथ जो [illegible] आते हैं
वे [illegible] के साथ आये। [illegible]
[illegible] कहा [illegible]
भी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] की बात कहा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुधार करना है तो अपना सुधार करनेमें लग जाना चाहिये।

[illegible] संन्यासी [illegible] हैं [illegible]
उन्हें [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ । २७ ।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः । २८ ।

सूर्यो० ५ । १९, सूर्या० ६ । २९ आज पुनः मन बहुत व्यग्र है। बारबार प्रलोभनकारकों को याद करके अपनी आसक्ति त्रुटियों को ढूंढ़ता हूँ तथा भगवान से विनम्र करता हूँ कि वे इस अज्ञानान्धकार से हटाने के लिए हाथ पकड़ें। बड़ी बड़ी कठिनाइयां पार किया. बहुत दुर्गति भोगा. समय समय पर कुछ भूलें होती रहीं. गलत कदम उठे. फलतः प्रायश्चित्त करता हूँ. वैराग्य करता हूँ. देखें नाव कैसे किनारे लगती है।

उपनिषद् वाक्य :—
"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति।" का मनन करता हूँ।

श्री प्रमोदकुमार दीक्षित - शाँत भाव की तरह ही रहे हैं अनेक अभाव में मन सदा विक्षिप्त रहता है, कोई काम नहीं कर पाते।

श्री पं० गुणेश्वर शर्मा को दुर्भाग्य से बुलाकर कुछ शांति प्राप्त करूँगा तथा उनके माध्यम से प्रमोद शान्त करें। आश्वस्त तथा प्रसन्न करना चाहूँगा उनके विनम्र सहयोग के अतिरिक्त दिन बहुत कष्ट में वे अभी भी पीते हैं.
अतः उनकी आलोचना या बेरुखी मनसा वाचा कर्मणा ही है।

आत्मचिन्तन अनुशासन या अनुशासन के सहारे से आंतरिक जीवन शान्तिमय बिताने की इच्छा है।

विपत्तिमें हार तभीतक होती है जबतक मनुष्य उससे डरता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२९।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३० प्रमोद कुमार दीक्षित गढ़वा झारखंड आज परीक्षा देने
गये।.. टैक्सी राजू के [illegible] शर्मा [illegible]) यहां है तो [illegible] विश्वविद्यालय
जाकर [illegible] भी।
पं० कमलापति मिश्र को लिखित पत्र डाक में डालने के बाद. पत्रिका
फोटोकापी [illegible] को दिया।
श्री राजेन्द्र [illegible] को निवेदन पत्र भी प्रतिलिपि सुरक्षित रखकर
अतः उन्हें प्रेषित किया जायेगा।
श्री ईश्वर राज शर्मा को [illegible] उपलब्ध दिये हैं. अंग्रेजी हिन्दी
शब्दकोश व [illegible] के लिये।
उन्होंने पन्द्रह रुपये की हिन्दी [illegible] टिकट के रखा।
सहकर्मी से दूरभाष से सूचना मिली किसी राजनैतिक [illegible]
कुछ विरोधात्मक स्वरूप हो गये थे। [illegible] सुधार है।
श्री राजेन्द्र [illegible] को भी [illegible] उद्बोधक पत्र लिखा कि मेरे
प्रति [illegible] हितैषी एवं सहयोगी हैं।

जो सेवा लेना चाहता है और करना नहीं चाहता उसे मंदभागी समझो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।१।
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन।२।

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३० आज राजनैतिक के लिये पत्र की प्रतिलिपि करने में मुझे तीन घंटे लगे। पर ३० मध्याह्न लिखने हेतु ३ बजे अपराह्न तक लिखा। इसमें सम्भव में श्रद्धि और नैतिक संरक्षण में तथा अभ्युदय में मदद मिलेगी। वे काशी में भी अध्ययन केन्द्र खोल कर वहाँ पर एवं सम्भवतः पुष्कर धार्मिक की संस्था में जीवन व्यतीत करने की इच्छा है ऐसा कह रहे हैं।

पता चला कि श्री इन्द्रजीत शर्मा के गृहप्रवेश समारोह में भाग लेने के लिये उन्हें भी संभवतः महायज्ञ प्रस्थान पड़े।

आज पं० जी की भार्गव भूषण प्रेस से प्रकाशित 'भार्गव भूषण स्टैण्डर्ड इलस्ट्रेटेड डिक्शनरी' आयी। बीस रुपये वापस मिले।

इधौंज कलिका से पं० रामस्वरूप शर्मा का एक लम्बा अंतर्देशीय पत्र प्राप्त हुआ। उसमें पेंशन प्राप्ति के संबंध में जिला शिक्षा कार्यालय काशी के प्रशासनिक की भांपकारी विवाद नहीं है किन्तु मैं उस संबंध में कौन सी मदद कर सकता हूँ। काशी में उक्त संबंधित कार्यालय से मेरा कोई सम्पर्क नहीं है न उनसे सम्बन्धी संबंध ही जानते हैं।

उन्हें उद्बोधक पत्र भेजकर समझाना आवश्यक पत्र होगा।

'आरतं कोऽपि न रक्षन् चेतु पुनि पुनि जलं आये हैं॥'

श्री प्रमोद कुमार जी प्रोफेसर विश्वविद्यालय के पदोन्नति की बावत उनके अवकाश की सूचना, काशी की वार्ता के नवीन अंक से प्राप्त हुई।

श्री प्रभु नारायण सिंह ब्रह्मपुर के विशेष अनुरोध पर उन्हें भी पत्र भेजो वे मेरे उनसे गोष्ठी विचार पर रखना चाहते हैं यह सुखद है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते। योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते।३।
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते। सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी योगारूढस्तदोच्यते।४।

सूर्यो० ५। १७, सूर्या० ६। ३१ आज प० [illegible] [illegible] [illegible] बच्चों के
लिये स्पर्धा किया. तीनों बच्चियों को एक-एक रुपये प्रोत्साहन दिये गये।
[illegible] पर्दे करने के साथ.. [illegible] के राज होते थे. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] जो मेला के कुछ के [illegible] में रखे थे
के बाद उन लोगों का [illegible] [illegible] [illegible] देते थे..
और साथ लोगों को बहुत परिश्रम [illegible] १.१५ पर वापस [illegible]
[illegible] हो गये मालूम होता था कि हृदय गति बंद हो जा रही।
इसी तरह [illegible] के बाद पधारे। रात [illegible] [illegible]
दूध भी पीने की हिम्मत नहीं हुई। [illegible] तकलीफ का
अनुभव होता था। रात को नींद नहीं आयी। कहीं [illegible]
गिरे.. [illegible] लगी. साथ..

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।५।
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।६।

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।३१ आज भी वही कब्जियत रही। पता चला कि हेडमा-
स्टर गये हैं। रातको रघ्घू महाराज अपने एक पार्टी के एक व्यक्ति
सकाल के प्रेक्षक के साथ आये। कुछ रसगुल्ला आदि दे आये।
मैं मुश्किल से एक रसगुल्ला आनन्द से खा सका। बीड़ू का गाना
५ पैसे लेनेवालों के द्वारा नहीं मिल सका। आज भी इलाज
नहीं आ सका। मनमाना - आरामपसन्द है। कुछ पढ़ता लिखता
रहा।.. मठकी मर्यादा तथा सन्तोंकी गौरव-गरिमा के लिये
कुछ करना पड़ता है। हेडमास्टर के मद्दे भी लेकर घर जाने की
बात आया। कुछ लोग पैसे भी कुछ न कुछ सहयोग तो
करते ही हैं। साधुवेशधारी लोग कुछ नहीं करते. मठमें
टिककर केवल भोजन मठ में रहना चाहते हैं।
बिना कुछ किये गाड़ी कैसे चलेगी? धर्मशील कार्य से..
कार्य करने से ही धर्मका सृजन होता है - यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः
धर्मः - प्रेरणात्मक योग जितने करणाः उन्नति का गड्ढा..
निःश्रेयस तक पहुँचा जा सके।

मनुष्य अभिमानको छोड़ दे तो दुनियाभरको अपने पक्षमें ला सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।७।
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः। युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।८।

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।३१

आज ८ बजे श्री इन्द्रजीत शर्मा आ पहुँचे।
साथ में उनका भ्रातृज था। साथ भोजन किया। प्रमोद को लेकर
दूजा जनकी लेकर गये - [illegible] भौरवीर में [illegible] उनके घर का
गृहप्रवेश है। जनसों वहाँ जाना होगा।
आज डा० आजनेय का [illegible] तथा भोजपुरी की खुली चिट्ठी
सुनीति बाबू के नाम की फोटोस्टेट प्रति उन्हीं ने कही [illegible]
भेजा। यह उनकी बड़ी कृपा है। पं० [illegible] का
भोजपुरी-व्याकरण देखा। उसमें इसका [illegible] भोजपुरी भाषी
जनपद के इतिहास की एक झलक [illegible] मिलती है।
दोनों [illegible] मिलाकर - भोजपुरी चिट्ठी का पुस्तकाकार
[illegible] प्रकाशित करना होगा।
इन्हीं से मातृभाषा भोजपुरी की उन्नति [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः। नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्। ११।
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः। उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये। १२।

सूर्यो० ५। १४, सूर्या० ६। ३२ — **वरूथिनी एकादशीव्रत, श्रीवल्लभाचार्य-जयन्ती**

आज मैं [illegible] श्री इन्दु जीत शर्मा, महामल्लपुर के
यहाँ उनके गृहप्रवेश समारोह में गया। उनको गर्मी आई थी।
प्रेमचन्द्र - उनकी धर्मपत्नी सब बच्चियाँ भी थीं। पूजा हवन आदि
करने में दो घंटे लगे। मकान सुन्दर बना है। अगल बगल
लगा है। आज एकादशी को दही का शर्बत भी लिया। बाद में
खिचड़ी का भी शर्बत पीकर तृषा शान्त किया। पुनः आदि
[illegible] वालों और दो वस्त्रों के संबन्धी की मिली गाड़ी से
सायंकाल मठ में आये। पता लगा कि स्वामी हरिहरानन्द
भी गाजीपुर से - आज [illegible] किसी काम में [illegible] मेरे
नाम लेने ही आये। अच्छा ही हुआ।
गोस्वामी [illegible] शर्मा सभी सम्प्रदाय वालों ने स्वागत सत्कार किया।
मैंने [illegible] इन्द्रजीत शर्मा के पॉकेट में [illegible] दिये और
मंत्र [illegible] आदि के लिये दे दिया।

यथार्थ सत्संग होनेपर परमात्मामें मन न लगे, यह संभव नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः। सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्। १३।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः। १४।

सूर्यो० ५। १३, सूर्या० ६। ३३ — प्रदोषव्रत

आज विमल चन्द्र जी गोयल से 2500 years of Buddhism पुस्तक प्रकाशन विभाग भारत सरकार का प्रकाशन है देखा उनसे रुपये में यह पुस्तक मिली। बौद्धों का यह अच्छा संकलन है। General editor P. V. Bapat हैं Foreword Dr. S. Radhakrishnan ने लिखा है। अच्छी पुस्तक है, संग्रहणीय है।

दम, त्याग और अप्रमाद—इन तीन गुणोंमें अमृतका वास है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः । शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति । १५ ।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः । न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन । १६ ।

सूर्यो० ५ । १२, सूर्या० ६ । ३३ — पिछले ३ तीन दिनों से ओंकार [illegible]
का [illegible] तीन [illegible] कर रहे हैं।
पं० [illegible] शर्मा। क्योंकि डा० राजजी पाण्डेय के [illegible]
की [illegible] पाण्डेय।
प्रबन्ध व्यवस्था अच्छी है। [illegible]
प्रधान [illegible] हैं उनके [illegible]
का कार्य करते हैं। [illegible] में उनका [illegible] है किन्तु [illegible]
में [illegible] करते हैं।

प्रतिक्षण सक्रिय और जागरूक रहना चाहिये, अपनेको कल्याणकारी कार्योंसे जोड़ देना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा । १७ ।
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा । १८ ।

सूर्यो० ५ । ११, सूर्या० ६ । ३४ आज ईश्वर शर्मा द्वारा गीताप्रेस की
प्रधान दुकान - गोविन्द भवन में कल्याण के लिये १३५ रुपये
जमा करवा दिया। विद्यार्थियों के नोटिस बोर्ड के साथ साथ
उन्होंने तकनीक दी और अंक मिले।
दिन में कई पुस्तकें बारी-बारी से पढ़ता हूँ।
कभी Ancient Indian education जो कवीन्द्र ...
खरीदने के बाद ४२० रुपये में प्राप्त हुई।

भीगे पैर भोजन करनेवाला मनुष्य सौ वर्षोंतक जीवन धारण करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।२१। यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।२२।

सूर्यो० ५।१०; सूर्या० ६।३६

आज भार्गव भूषण प्रेस से डिक्शनरी भार्गव इलस्ट्रेटेड स्टैण्डर्ड डिक्शनरी. अंग्रेजी से हिन्दी, मंगाया १२० रुपये में प्राप्त हुई। शेष पैसे दूध वाले को दिये दिये।

मोतीलालजी के यहाँ से "प्राचीन भारत". आर. सी. मजूमदार हिन्दी संस्करण - श्री विशुद्धानंद पाठक एवं डा० लल्लनजी गोपाल कृत - अनुवाद मंगाया और अभिलेख संग्रह भी 30 रुपये में प्राप्त किया. मूल्य ३५ रु है. ५ रुपये छूट दिया।

डा० स्वामी नाथ त्रिपाठी. विजयनगरम के प्रोफेसर. उन्हें और नरेन्द्र जी का विस्तृत पत्र भेजवाया. "वीरसतसई" की शेष दो खंडों की प्रतियां दिल्ली से लाने का अनुरोध किया. तथा स्वामीजी के तीन अंग्रेजी व्याख्यान. मैं उनके जो वहाँ मेरे पास हैं की हिन्दी अनुवाद सहित छापने के लिये भी निवेदन किया।

सुमन जी डा० त्रिपाठी को "गांधी गौरव" की प्रस्तावना की कापी देने हेतु पदम नारायण के लिये भी लिखा।

[illegible] मजूमदार और [illegible] "[illegible]" पुस्तकों उनके प्रकाशन की विस्तृत सूची मंगाया।

× × ×

~~[illegible] के धर्मभाव की [illegible] को [illegible] अभी [illegible] और [illegible] का [illegible] हुआ। [illegible] मालिक को २५० रुपये दिये। [illegible] गया [illegible]।~~

भाई-बन्धु, सम्बन्धी और मित्र—इन सबका सब प्रकारसे आदर करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्। स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा।२३।
सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः। मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।२४।

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।३६

प्रमोद द्वारा पुस्तकों के रूप में प्रकाशन के क्रम में उक्त पुस्तक - हिन्दी संस्करण "प्राचीन भारत" आगरा प्रकाशन से प्राप्त हो गई। [illegible] कोर्ट के वकीलों तुरन्त दिये थे। पुस्तक पर शुभेच्छा शर्मा द्वारा अपने पारिवारिक दफ्तर · [illegible] को भेज दिये।

आज [illegible] खड्ग [illegible] के सम्बन्धियों का जन्मोत्सव हुआ। आगन्तुक समागतों को उत्तम भोजन · पंडितों को भोजन दान दक्षिणा दी गई। मुझे उन्होंने २५० दो सौ पचास रुपये दिये। पचास रुपये · साधिकों को प्रातः उठकर [illegible] को दिलाऊँगी। शेष पुस्तक में खर्च होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् । २५ ।
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् । ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् । २६ ।

सूर्यो० ५ । ९, सूर्या० ६ । ३७ — अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम-जयन्ती

आज "प्राचीनभारत पुस्तक" की नवीन प्रति [illegible]
[illegible] भोलेलाल [illegible] को
[illegible] दूसरी पुस्तक मंगाया। [illegible] पुस्तक
का मौका देकर १०० रुपये [illegible] पुस्तक के
लिख दिया। कुछ छूट मिलेगा।
पुस्तकोंके नाम लिखकर दे दिया।
पचास रुपये स्वामीजी के लिए दे दिया।
रुपये उसे ही [illegible] भी दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन । एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्। ३३।
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्। ३४।

सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।३९ — **श्रीगङ्गा-सप्तमी**

आज बहुतके श्री फणीन्द्रकुमार रायकी पुत्री की शादी
का निमंत्रण मिला। बहुत का औरों का समाचार मिला।
इन्होंने धूप रूप में दिये। पैदे रूप कार्तिके मद में दे दिया।
एक रूप में प्रीति कन्याओं मैत्रेयी, गार्गी, सावित्री को दिया।
देह रूप में रूप को लौटा दिया।

श्रेष्ठ मनुष्यको उचित है कि वह धर्मानुकूल प्रश्नको सचाईके साथ उपस्थित करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। ३५।
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः। ३६।

सूर्यो० ५।६, सूर्यां० ६।३९ — श्रीसीतानवमी

पड़ोसी के कम्पाउण्ड से रोज़ी लेकर जाते और जल्दी जल्दी नाम नहीं लेते.... यह काम ठीक नहीं है।
बच्चे कहाँ भटक-भटक जाते हैं -
आज श्री पशुपति ... जी उनकी बच्चियाँ तथा पति पंडित श्री प्रमोद कुमार दीक्षित ने कुछ कड़े शब्द मैनेजरी के जमाने के समय का खुलासा करते हुए कहा।
यह संसार विचित्र है,
मैं तो इन लोगों की सेवा का आभारी हूँ। जिन लोगों ने व्यक्तिगत मेरी स्वास्थ्य सम्बन्धित सेवा की उनके जीवन के प्रति रूखा उचित नहीं।
श्री शिवनारायण पाण्डेय. सिपाही- बकुलाहा पहुँचे आये हैं, वे कृष्णकान्त की भतीजी चन्द्रकला अधिवक्ता के लड़के को शोभनाथ पाण्डेय की पुत्री का विवाह करवाना चाहते हैं।
श्री राजेन्द्र राम - देवान ने इन लोगों को यह सुझाव दिया है। मेरे कहने से यदि होगा तो मैं कहूँगा।
यह परोपकार है। किसी कन्या की शादी के विषय लेकर और आत्मिक हो जाता है।

पामर वही है, जो भगवान्‌से विमुख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति। ३७।
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि। ३८।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४० — आज प्रातः राजगुरुमठसे चलकर मुगलसराय पहुँचा। [illegible] पत्र एवं जन्मकुण्डली को आपके लिये दिये तथा बच्चियों को दो दो रुपये पर [illegible]।
काशी एक्सप्रेससे [illegible] रिक्शा से [illegible] और पुनः रिक्शा से [illegible]। [illegible] श्री रामप्रसाद पाण्डेय अपनी गाड़ी लेकर पहुँचे और [illegible] श्री रामशंकर पाण्डेय के [illegible] मकान पर पहुँचे। आज श्री रामशंकर पाण्डेय एवं श्री रामाधार पाण्डेय के लड़कों का तिलकोत्सव है।
श्री रामशंकर पाण्डे के लड़के का विवाह बोकारो [illegible] जो इन्जिनियर [illegible] पिताजी हैं। जिन्होंने [illegible] उन्हें [illegible] है। रामाधार के लड़के का विवाह [illegible] हो रहा है। उनके सम्बन्धी [illegible] पहुँचे।
मैं पं० रामशंकर के घर गया। वहां [illegible] का एक मिठाई लेकर [illegible] सिवान के बहुत लोग आकर मिलते जाते। सिवान के लोगों का श्रद्धा प्रेम बहुत है। आज [illegible] के [illegible] जिसे [illegible] भी [illegible] सहसा [illegible] दिवंगत हो गये।
श्री रमाशंकर [illegible] मिले [illegible] बातें हुईं।
शुक्रवार का [illegible] दो-तीन व्यक्ति दीक्षा ग्रहण करेंगे।

निन्दनीय कार्यसे डरना चाहिये, न कि निन्दासे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः। त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते। ३९।

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। ४०।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४० — मोहिनी एकादशीव्रत (स्मार्त)

आज [illegible] की आकस्मिक [illegible] [illegible]
मिले। उन्हें देखा की [illegible] गया [illegible] की एकाग्र
और भी नहीं। वे बनारस रहते हैं पर [illegible] उनका [illegible]
है। [illegible] के [illegible] है। हिन्दी एवं इतिहास विषय में
[illegible] उन्होंने [illegible] किये। श्री रामप्रसाद पाण्डेय भी
अपनी गाड़ी लेकर [illegible] क्योंकि [illegible] जाना है। वे [illegible]
[illegible] [illegible]। वे [illegible] दुकान में [illegible]
[illegible] कपड़ा देकर वे [illegible] सिलाई नहीं।
[illegible] [illegible] कटवायेंगे। कपड़े हैं। दो [illegible] का दिन
है। आज एकादशी व्रत है। दही तथा [illegible]
को [illegible] रहे हैं।

गरीब वह है, जिसकी लालच बढ़ी–चढ़ी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।४१।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्। एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।४२।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१ — मोहिनी एकादशीव्रत (वैष्णव)

आज भी सिगरी रहे .. श्री राम नरेश पाण्डेय के मकानटट
पर ही विश्राम किया। दिन में रोटी दही .. सब्जी आदि भोजन ..
करने की इच्छा थी .. कृष्णदेव के पुत्र उदय चिन्तासागर के यहां भोजन
करने गये। रोटी .. भात-दाल .. और मछ भोजन। बहुत पसन्द .. भोजन
किया ... रात को तेली की रही .. रामनरेश के यहां जलपान किया। ..
कल सबेरे गोविन्दनाथ पाण्डेय शेषनाथ पाण्डेय के यहां जाना
है। शाम को सिरसा का रवेदार पीये .. रात में तेली की लौट।

ग्रहणकी वृत्ति मनुष्यको चाहे वह अमीर हो वा गरीब, दीन-हीन और कंगाल बना देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।४३।
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।४४।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१ — प्रदोषव्रत

आज श्री विश्वनाथ पाण्डेय के गये दो लड़कों को भी दीक्षा का
कार्य सम्पन्न किया। वहीं भोजन किया.. रोटी चावल दही खीर आदि।
आज ही श्री शिवपूजन शास्त्री के घर पहुँच कर उनके द्वितीय पुत्र
श्री हरे राम पाण्डेय के भाई.. को दीक्षा दी गई। यथेष्ट प्रकार स्वागत
हुआ। कपड़े दक्षिणा आदि मिले। आज ही विक्रम की शिष्या..
राजेन्द्र पाण्डेय की पुत्री.. दो वर्ष से उनके नई लोकसंग्रह
आसो जी बड़ा कि लेके आयी। उनने दो सौ रुपये पूजा के दिये।
इसके बाद बकुलेश्वर के ही एक अन्य युवक को दीक्षा दिया। जिसका
घर प्रसिद्ध कन्हार सड़क गर्ल्स विद्यालय के पास है।
आज श्री रामशील पाण्डेय पुत्र श्री रघुवंश पाण्डेय भी
मिले। स्वतन्त्र पूजा किया। गोपाल पाण्डेय को फोन किया
पर वे नहीं आये।

दूसरोंके कर्तव्यपर दृष्टि जाते ही मनुष्य अपने कर्तव्यसे गिर जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।४५।
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।४६।

सूर्यो० ५।५, सूर्यां० ६।४२ — श्रीनृसिंहचतुर्दशीव्रत

आज छुट्टी रही। मैं पं० रमाशङ्कर शर्मा के घर गये। श्री सुदेशशर्मा जी के यहां भोजन किया। वस्त्र, दक्षिणा युक्त प्राप्त किया। तदुपरान्त पं० रमाशङ्कर शर्मा के घर गये। माताओं, बच्चों ने दर्शन पूजन किया। काढ़े पूजा आदि किया। रिक्शा से ओ० पी० द गये और पुनः उसी रिक्शा से लौटे। राजपट्टी के और कई लोग आये जो मेरे शिष्य हैं, पूजा आदि किया। प्रवचन सुनते रहे।

लन्दन से फोन आया - " केदार आश्रम के खाता-प्लाट - खसरा आदि पूछकर: पं० राजमोहन पाण्डेय के पिता जी के प्रपत्र डि० ट्रस्टी - से कुछ सहायता प्राप्त करना चाहते हैं आश्रम के समायोजन बनाने का - चहारदिवारी आदि के निर्माण के लिये।

आज श्री श्रीनाथ पाण्डेय का पत्र रजिस्ट्री किया कि वे व पुत्र श्री भगवती शर्मा के यहां अपनी भतीजी श्री कमलापाण्डेय की कन्या का विवाह करें। वर प्राप्ति ठीक है वे राजा के मेरे शिष्य रामदेवशर्मा के यहां समान किया है।

कर्तव्यका पालन करनेमें ही मनुष्यकी मनुष्यता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः। ४७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४३ | पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त

आज प्रातः जीप से श्री रामकेश पाण्डेय के नवनिर्मित घर (शिव
जीत नगर पर) भी गये। जलपान किया.. महाओं के बालकों
सहित दर्शनपूजन किया.. चित्र आदि खींचे। कपड़े
आदि भी दिये। रामाश्रम के घर की पूजा आदि किये।
आज ही नीचे पं० रमाशङ्कर-प्रमोद आदि के साथ डुमरी
के प्रोफेसर शिवदत्त द्विवेदी (भ्राता भगवानदास) के यहां गये,
उनके माँ श्री ... नारायण ... आये थे- दर्शनपूजन
किया। वहीं से प्रो० तेजनारायण के साथ - चौधरी टोला
अवकाशप्राप्त पूर्व प्रधानाचार्य.. श्री राधेश्याम राय शर्मा के यहां
गये.. उनके आवास की ऊपरी मंजिल पर भोजन किया।
जरा सा जलपान.. पूजा दक्षिणा श्रद्धा-विश्वास पाकर के
जीप से 9 बजे बीएचयू पहुंच गये। जीप से आवागमन में
बहुत कष्ट हुआ। देह के बिस्तर में दर्द होता रहा।
शिष्य लोगों ने सेवा की।

कोरे उपदेशका मूल्य कौड़ीके बराबर भी नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु।१।

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।४३— सिमरी से चलकर बीसी खुर्द पहुँचे। पं० रमाशङ्कर शर्मा साथ आये। कलही पके दिन में आ गये। पूड़ी-तथा थोड़ा मोहनभोग भोजन किया। पर अनुकूल नहीं रहा। बहुत दिनों के बाद पटना से आये श्री शिवकुमार ठाकुर से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।

अ० ७] ज्येष्ठ कृष्ण १, सं० २०५९, सोमवार, MAY 27. 2002 [दिन १४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। १०।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ। ११।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४६

आज रामप्रवेश ठाकुर के घर सत्यनारायणजी की कथा श्री प्रमोदकुमार दीक्षित ने कही और एक व्यक्ति की दीक्षा हुई।

साधकको भोग और ऐश्वर्य-बुद्धिसे कोई भी कर्म नहीं करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अ० ७] ज्येष्ठ कृष्ण ६, सं० २०५९, रविवार, JUNE 2. 2002 [दिन १५३

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये। मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि। १२।
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्। १३।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४७

आज प्रातः अशोकनगर के [illegible] बालकृष्ण-
राधाकृष्ण ठाकुर मन्दिर में माताओं ने दर्शन पूजा की तथा
दक्षिणा आदि दिये। आज श्रीमती [illegible] सहित प्रमोदकुमार के
लिये... १ बजे अपराह्न ज्ञानपुर पहुँचे। [illegible]
में [illegible] प्रमोदकुमार कहाँ है ? पता चला कि वे [illegible]
[illegible] सहसा स्कूटर [illegible]। पता नहीं कहाँ गये [illegible]
सूचित तो करना चाहिये। [illegible] समझ की [illegible]
का [illegible] हो रहा है।

दिये हुए दानका कभी नाश नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।१४।
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः। माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।१५।

सूर्यो० ५।२, सूर्यां० ६।४७

आज राजेश को रुपया [illegible] दिया। दुग्ध पत्र
श्री कृष्ण बिहारी शर्मा - [illegible] [illegible]
भेजा। श्रीमती [illegible] मासिक [illegible]
राजस्थान के विज्ञापन डाक में डाल दिया गया।
कानपुर में पढ़े पढ़े.. प्रमोद कुमार सिनेमा के अभिनेता की
तलाश रहे हैं। वे और [illegible] [illegible] अभिनेता
बने हैं, फिल्म बनाते हैं।

मनुष्य कर्म करनेमें स्वतन्त्र और फल-प्राप्तिमें परतन्त्र है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् । १८ ।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः । १९ ।

सूर्यो० ५ । २, सूर्या० ६ । ४८ आज पंजाब मेल से चलकर वाराणसी
उतर मठमें पहुँचे। एक रोटी चावल [illegible]
साथ लाये। प्रमोदको प्रश्न [illegible] मार्गदर्शन के लिये
दिया। मठ में बताके विजयशंकर तिवारी बहुत से ही
अच्छा दीक्षा के लिये कहते हैं।
आज प्रमोदकुमार दीक्षित ने बड़े धीरज है।
निश्चयतत्त्वज्ञा करना और विजयशंकर तिवारी को
पंचाक्षर शिवमंत्र की दीक्षा दी गई।
बहुत दिनों फूल की माली कालिका [illegible] [illegible]
मैंटेनेंस बनाये लिये उन्होंने।
[illegible] स्नान गंगाजी.. [illegible] कालिकाका [illegible].

सरलताको धर्म कहते हैं और कुटिलताको अधर्म।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः। २८।
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये। ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्। २९।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५० — सोमवती अमावास्या, वटसावित्रीव्रत

"भारतीय इतिहास एवं संस्कृति-परिषद"

(1) "की 17 कुतुब-इन्स्टीट्यूशनल एरिया"

"अयोध्या का इतिहास एवं पुरातत्त्व"

(2) अवधवासी राय बहादुर लाला सीताराम
द्वारा 1932 में संकलित एवं
हिन्दुस्तानी एकेडमी द्वारा प्रकाशित
"अयोध्या का इतिहास"
दिल्ली के प्रसिद्ध प्रकाशक →
आर्य बुक डिपो के श्री सुरेश पाल गुप्त
श्री सुरेशपाल गुप्त द्वारा पुनः
प्रकाशित →

आचार्य शिवप्रसाद तथा स्व. राज्य-प्रकाश
द्वारा प्रकाशित पुस्तकें मंगा ली हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते। १।
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः। २।

सूर्यो० ५। २, सूर्या० ६। ५० — आज काशी से सरयू के लिये प्रस्थान
किया। पुरुषोत्तम एक्सप्रेस छूट गई। प्रमोद कुमार दीक्षित, मैं
नैष्ठिक [illegible] हैं। वे पूजा पाठ के [illegible] हैं। देर होने के चलते
फलतः पुरुषोत्तम एक्सप्रेस छूट गई। लाचारी में बस पकड़नी पड़ी।
बहुत धक्का था। बस में दीक्षित जी ने मुझे [illegible]
उसी [illegible] में रखे [illegible] चौदह रुपये [illegible]
[illegible] किया। मालूम तो कुछ ही क्षण में [illegible]
जाए क्या भाव। प्रमोद जी आगे भी [illegible] ही हैं। मोहम्मदाबाद [illegible]
होते हुए सहतवार [illegible] पहुँचे।
रिक्शा से राजेन्द्र राय के निवास पर गये। वे [illegible] हैं।
श्री सतीन्द्र कुमार शर्मा मिले। आठ वर्ष के बाद जल [illegible]। दो बजे
[illegible] पहले शर्बत, बाद में जल फिर दही का सेवन होते
रहे। रात को [illegible] विश्राम किया। [illegible]
दूध पीकर सो गये। सत्येन्द्र के लड़के ने बड़ी सेवा की।
श्री सत्येन्द्र कुमार [illegible] से ही [illegible] चले गये। उनके लड़के भी
[illegible] इंजीनियरिंग में
नामांकन के लिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः।३।
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।४।

सूर्यो० ५।२, सूर्यां० ६।५०

प्रातः [illegible] नहीं था [illegible] / अतः
[illegible] से [illegible] स्टेट में [illegible]
[illegible] / [illegible] किया गया [illegible] कोई [illegible]
नहीं हो सका। [illegible] में [illegible]
[illegible] किया। बाद में [illegible] के लड़के
[illegible] मिले [illegible] बाद उन्हीं के
[illegible] से [illegible] १२ बजे के [illegible]
[illegible] पहुंच गये। [illegible] के [illegible] कुछ देर [illegible]
[illegible] पीये बाद में [illegible] शर्मा [illegible]
[illegible] श्री कृष्णराय और [illegible] शर्मा [illegible] पहुंच गये।
वहीं [illegible] के महेन्द्र राय मिले। श्री [illegible] राय शर्मा से भेंट हुई।
शांत होकर [illegible] बाद में भोजन किया। [illegible]
[illegible] और [illegible] किया गया।

कुछ देर के बाद [illegible] - [illegible] - [illegible] शर्मा
और श्री [illegible] राय शर्मा आदि मिले।

श्री [illegible] राय शर्मा एवं उनके [illegible] श्री [illegible] राय शर्मा
[illegible] में [illegible] लगे।

[illegible] गई। श्री [illegible] गये।
श्री [illegible] राय [illegible] हैं, [illegible] शर्मा आदि
[illegible] नहीं आ सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।५।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।६।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज प्रातः रामनौ जी ने शुद्धमानन्द को उदक पता है.. पर तिथि में दीक्षा पूजा आदि के कार्य में लगे रहने से... नहीं जा सका।

स्वामीका कभी अप्रिय न करे, यही संक्षेपसे सेवाका स्वरूप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।७।
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।८।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज भी [illegible] में रहे - [illegible] का
श्री [illegible] सहित [illegible] बैंक में [illegible]
गये। [illegible] भी प्रेस [illegible] को [illegible]।
श्री राजगुरु शर्मा के घर तथा लक्ष्मी राय - [illegible] के घर
दीक्षा के कार्य होंगे अतः उसकी तैयारी भी रखी है।

× × ×

श्री राजेन्द्र राय के कई [illegible] आये और वे [illegible]
[illegible] पहुँचे और [illegible] पुनः घर वापस लौट
गये।

आज [illegible] के गाँव का एक भिक्षुक ब्राह्मण आया जो
[illegible] लोगों के [illegible] आदि [illegible] तथा
[illegible] को [illegible] लगाता है।

शाम को [illegible] पड़ा - [illegible] है - संध्या-गायत्री का
[illegible] मालूम है। [illegible] पंचपात्र [illegible]
के [illegible] ... [illegible]
भाग गया।
मैंने कहा कि [illegible] बहुत [illegible] अब तो
[illegible] होगा -

उन्होंने [illegible]
गाते थे: "[illegible] बांध के [illegible]।
[illegible] कौन है।"
वह [illegible] उसी तरह यह [illegible]
[illegible] भी।

दूसरा दोष यदि न भी हो, तो भी दूसरोंका दोष देखना—यह दोष तो है ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः। सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। ९ ।
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव। भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्। १०।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१ रविवार अमावस्या का शुभ मास का
तिथि है अतः पूजा पाठ या दीक्षा आदि के शुभ कार्य किये
जा सकते हैं।

रविवार है अतः टी.वी. दर्शन और तथा आज खाना
भोजन का कार्यक्रम किया... कुछ पढ़ते रहे।
प्रातः सायं कथा प्रवचन तो नित्य होता ही था आज भी
हुआ। लोग सब्बा प्रसन्न से प्रभावित हुए। लोगों में
आत्म गौरव एवं प्रकृतिवेश की मर्यादा रक्षा का
भाव जगा।

जो बुराई अच्छाईके रूपमें आती है, उसको मिटाना बहुत कठिन होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये । ११ ।
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च । मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् । १२ ।

सूर्यो० ५ । २, सूर्या० ६ । ५२ — आज सत्सङ्ग में [illegible] की [illegible] आदि तीन लड़कों ने [illegible] की आचार्य से [illegible] [illegible] हुई।

उसी क्रम में श्री लक्ष्मीराम तथा उनके भाइयों, लड़कों ने दीक्षा ली। कुल चार व्यक्तियों की दीक्षा हुई। इस प्रकार कुल ११ व्यक्तियों ने दीक्षा ग्रहण की [illegible] स्वीकार किया।

इस प्रकार [illegible] का [illegible] प्रातः [illegible] दीक्षा लेकर समाज की [illegible] को [illegible] हो गया।

× ×

आज श्री लालबहादुर की [illegible] किया पहुँचे। पहले श्री शिवकुमार शर्मा जी [illegible] ये तो नहीं [illegible] दिव्यानन्द राम जी हैं। श्री [illegible] की पत्नी [illegible], श्री शिवशंकर राय जी दोनों [illegible] श्री भगवतीराम शर्मा जी का विवाह था...

आज ही रात में [illegible]...

श्री बस्ती कालेज में प्राध्यापक हैं। श्री [illegible] के श्री [illegible] के दामाद हैं उन्होंने श्रद्धापूर्वक श्री सत्यनारायण व्रत कथा [illegible] दीक्षा ली। श्री प्रमोद कुमार दीक्षित ने भी विधिपूर्वक [illegible] प्रतिष्ठा प्राप्त की... रात्रि [illegible] श्री सतीश कुमार [illegible] रहे... विश्राम किया।

हमारा लक्ष्य सदा कर्त्तव्यकी ओर होना चाहिये, स्वार्थ या लाभकी ओर नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।१३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।१४।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५२

प्रातः लालबहादुर शर्माजी आये हैं सहस्र लेकर श्री राजेन्द्रराम के आवास पर - चिलकागंज कहते। जलपान तथा कुछ हल्का भोजन किया और आराम करके स्टेशन पहुंचकर उत्कल एक्सप्रेस भी पकड़ी समय से लेकिन गाड़ी लेट से आई। पीछे करके गयाकार गाड़ी भी उसी के साथ लेट हो गया।

इस प्रकार उत्कल से [illegible], मुगलसराय पहुँचे और वहाँ उतरकर तत्काल जीप से [illegible] घाट पहुँचे। वहाँ से रिक्शा से आगे स्थान [illegible] पहुँचे।

श्री हरेराम अपनी पत्नी गोलू तथा उनकी बच्चियों सहित अपनी [illegible] में [illegible] मिले।

यहाँ [illegible] पूरे नगर आये हैं। प्रमोद [illegible]: हो गया [illegible] होते हुए आगे [illegible] जायेंगे जहाँ उन्हें आगे [illegible] अन्नपूर्णाजी [illegible] [illegible] करना है।

वे मुझे रेलवे के लिये दो सौ रुपये दे गये तथा इनकी अन्नपूर्णा के लिये [illegible] [illegible] का दिया। —

आज [illegible] के श्री अरुण कुमार शर्मा [illegible] आये। दाल-भात का [illegible] भोजन विश्राम किया बाद में [illegible] गये - पचास रुपये [illegible] में दे गये।

जो विद्याके धनी और तपस्वी हैं, वे सब पूजनीय हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः । १५ ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते । १६ ।

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३ प्रातः हेरम्ब शर्मा द्वारा - बकुल के गंगा जी - जयप्रकाश को लेकर देखा, बुलाया। उनको बात बहुत जाने की योजना स्थगित करने के लिये।

वे तरह-तरह की आशंकापूर्ण बातें करते रहे -- पर अंत में श्रीमान को प्रातः ... से - ... की बात तय हुई। ... ।

क्षुद्र स्वार्थ ही पापका मूल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।६।

सूर्यो० ५।५, सूर्यां० ६।५४ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज वरुणा से जीपद्वारा- श्री दामोदरशर्मा जी- नवीन रूपेन्द्र शर्मा के आगे राजगुरुमठ में पहुँचा। साथ में न्यायाधीश राम-प्रद्युम्न श्री काशी आये तथा प्रेमशंकर दीक्षित के परिवार के साथ। साथ में जनार्दन के कई परिचय लोग-बाग भी आये।

सायंकाल आठ बजे सार्वभौम संस्कृत संस्थान के महामनीषी डा० रामकरण शर्मा.. रात आठ बजे थोड़ा देखने के लिये आये और प्रीति कर चले गये।

साधु वही है, जो भगवान्‌की ओर सच्चे हृदयसे बढ़ना चाहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ।८।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४ कृष्ण कुमार शर्मा · अधिवक्ता उ०प्र० [illegible]
मैं. तथा पटना- [illegible] की पत्रिका
सुप्रतिष्ठित के समारोह के संबंध में। प्रमोद [illegible]
लड़कों के फीस भरने के लिये अनसूयाजी को तीस रुपये दिये।
डा० राजकमल शर्मा के फूलमालाओं के कीमत २० रुपये दिये।
श्री [illegible] को [illegible] मंगाने के लिये १९ उन्नीस
रुपये दिये। वेदमूर्ति के प्रदक को लिफाफा रखने वाले कागज
के लिये तेरह रुपये दिये। कुछ और पैसे आज के लिये
दिये लगभग बीस रुपये। दरभंगा के श्री तारकेश्वर मिश्र
व्याकरण शिक्षक का [illegible] पत्र आया और मैंने उसका
उत्तर लिख भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।११।
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः। राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।१२।

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४ पं. कैलाशपति मिश्र को उनके पटना के पते पर तथा श्री नरेन्द्र जी राय द्वारा स्वामीनाथ तिवारी को भी उनके राजेन्द्रनगर - [illegible] के पते पर पत्र लिखा।

श्री मिथिलेश कुमार शर्मा - बहुत रात में ही आये... [illegible] के आग्रह पर मैं. अतः दो सौ रुपये [illegible] से अपनी ओर से सहयोग रूप में दे गया

आज श्री बीती बुद्धि के लालचन्द्र शर्मा आये। पुलिस की वर्दी में। [illegible] मुजफ्फरपुर के [illegible] पाण्डे तथा राम [illegible] राय के [illegible] [illegible] के लिये [illegible] [illegible] के गलत [illegible] सामान [illegible] वापस गये। वे लोग भी [illegible] हैं गये। [illegible] [illegible] के लिये [illegible] है।

मनुष्य-जीवनका एकमात्र लक्ष्य मोक्ष या भगवत्प्राप्ति ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्। १३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते। १४।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४ १ कैलाशनाथ शर्मा के लघु भ्राता रमेश, जिनकी
शादी ऊँजोपुर श्री शिवकुमार पाण्डेय के भाजे चाहते हैं और
जो सिंचाई पटल पद पर कार्यरत थे, उनकी मोटरसाइकिल से
दुर्घटना से चोट आई है। सिर में भी चोट है और बायाँ हाथ जाँघ की
हड्डी टूट गई है। वाराणसी में मलदहिया पर श्री प्रभुनारायण सिंह
के पास में किसी आर्थोपेडिक नर्सिंग चिकित्सा केन्द्र में चिकित्सा
हो रही है। दिन में भी कार्यक्रम के बाद जाने पर उनसे भेंट होने पर
पता चला। वे विश्राम करने गये। रात में श्री ... शर्मा भी
उनके यहाँ गये थे। घर में गये।

२) राजेन्द्र शर्मा देनीपुर के लड़के घर से आये, चावल व आलू ले
आये। उनसे नीम की पत्ती का आज मंगाया। अतिथियों को दिया।
रात में कराटे तथा खीर भोजन किया। ३० रुपये दूध के लिये
खर्च किया। दस रुपये का सब्जी मंगाया।

जो वृद्धों, बालकों और दुर्बल मनुष्योंका पालन करता है, वह पुण्यका भागी होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्। १५।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्। १६।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४ आज प्रातः [illegible]

[illegible] किया। [illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्तू जी [illegible] दिन में भोजन किया।

किसीका भी बुरा न चाहे, बुरा होता देखकर प्रसन्न न हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्। २७।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः। सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि। २८।

सूर्यो० ५।१, सूर्या० ६।५४

[illegible] के दो जना- नगर- जयपुर के मार्बल मर्चेन्ट- मूर्ति व्यवसायी के यहाँ [illegible] विश्वनाथ राय- दीप राय एवं प्रमोद कुमार के साथ गये। मूर्ति देखा पसन्द किया। [illegible] दक्षिणा में मूर्ति तय की गई। [illegible] सौ [illegible] के लिए [illegible] मूर्ति [illegible] देखा। [illegible] तथा पहले [illegible] के [illegible] में [illegible] गुरुजी [illegible] देने का [illegible] किया। [illegible] पर [illegible] के यहाँ [illegible] का [illegible] प्रमोद कुमार [illegible]। [illegible] पर [illegible] किया है। [illegible] होगा [illegible] की [illegible] जाना चाहिये।

× × ×

आज [illegible] में [illegible] सिंह [illegible] तथा [illegible] यहाँ [illegible] आये हुये। उन्हें [illegible] - [illegible] मूर्ति तथा [illegible] दो [illegible] उन्होंने [illegible] को दिया। वे [illegible] तथा [illegible] मूर्तियाँ देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने [illegible] होना था [illegible]। मैंने [illegible] के [illegible] दिखाया। मैं- [illegible] से साथ [illegible] उन्होंने [illegible] प्रभावित [illegible] कि वे [illegible] आपसे [illegible] और आप भी कुछ मदद करें। [illegible] आये तो [illegible] दक्षिणा से [illegible] [illegible] मैं भी [illegible] गुरुजी [illegible] जाये।

× × ×

कर्मयोगीकी वास्तविक महिमा आसक्तिरहित होनेमें ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्। २९।
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। ३०।

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४ — अमावास्या

आज नेपाल के विनयकुमार शर्मा-चन्द्र को पत्र देकर मूर्ति के
व्यवस्थापकों के यहाँ से भगवान [illegible] की मूर्ति मंगा लिया।
चौकी, कलश, वस्त्र आ गये। [illegible] पान लगाये गये हुए।
क्षीर व फल [illegible] [illegible] किया। [illegible] जयप्रकाश सिंह भी
आ गये हैं। [illegible] मूर्ति का [illegible] - [illegible], [illegible]
[illegible] में [illegible] [illegible] रखा [illegible]।
[illegible] शर्मा [illegible] रहेगा भी [illegible] में रहते हैं।

नये कर्मोंका आरम्भ केवल कर्म करनेकी आसक्ति मिटानेके लिये ही किया जाना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।१।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।२।

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५३

आज प्रमोदकुमार प्रातः महामनापुर से आये।
दारा-नगर इत्यादि देखा। उन्होंने कुबेरेश्वर स्थित लिंग के
२८ मूर्तियों को मठ में स्थापना (मानस मन्दिर) [illegible]
[illegible] जी ने श्री [illegible] राजी [illegible]
तथा [illegible] श्री राजकुमार [illegible] के पास
पोस्टकार्ड [illegible] लिख गये।
दही बड़ा [illegible] रुपये। बच्चियों को साड़ी [illegible]
सोमनाथ से [illegible] नहीं। [illegible]
[illegible] आज उन्होंने [illegible] नहीं किया।
सत्यनारायण खड़गपुर शर्मा [illegible] दिनों [illegible]
[illegible] बाद भोजन किया। [illegible] प्रमोदकुमार [illegible] देखिए-
सांस्कृतिक- भारतीय- [illegible]
[illegible] सहित- मूर्ति [illegible] किया [illegible]
मूर्ति के सामने [illegible] शिलापट्ट- [illegible] का नमूना
[illegible] उनको सौंप दिया।
श्री [illegible] भी बनारस से अपनी पत्नी एवं बच्चों सहित
दशाश्वमेध [illegible] के आस-पास मठ में ठहरे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते। ३।
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः। सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च। ४।

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३ आज सुबह आठ बजे पूर्वाह्न, [illegible] के प्रमुख
अधिकारी [illegible] गढ़वे [illegible]। [illegible]
बातें होती रहीं। [illegible] बाद में दशाश्वमेध [illegible]
की पत्नी एवं बच्चों के [illegible]
गये। [illegible] तथा अन्य परिजनों
सहित पधारे हैं। [illegible]
[illegible] होगा।
८० [illegible]
आज अपराह्न [illegible] ABZORB.
Absorbent Dusting Powder ४७ रुपये में
खरीदकर लाया।

भगवन्नाम-जप और ध्यानरूपी औषधि कभी निष्फल नहीं होती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।५।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।६।

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३ — आज सायंकाल श्री [illegible] गये। [illegible] शिष्य सेवक और [illegible] [illegible] सदा [illegible] के लोग। उनके [illegible] कार्य करते रहे। श्री कैलाश [illegible] आये हैं, उन्हें पता [illegible] श्री रामप्रसाद [illegible] आयेंगे। [illegible] महात्मा [illegible] यहाँ भी रहते हैं। गंगास्नान [illegible]।

आज [illegible] [illegible] के [illegible] का विवाह [illegible]। [illegible] इस प्रकार अनेक संबंध हैं जो [illegible] याद किये जाते हैं। [illegible] नहीं होती। [illegible] आया [illegible] १२ [illegible] रुपये [illegible] देना हुआ।

" [illegible] " पत्रिका का [illegible] आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः। ७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः। ८।

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५३ आज दो लिफाफा एवं चार पोस्टकार्ड - विनय कुमार से मंगाया। पारदर्शी कवर हुए।
सु श्री ध. ग्रंथमाला कार्यालय के अधिष्ठाता - श्रीमान् कृष्ण बिहारी शर्मा को अपनी मुद्रणाधीन पुस्तक "शाक्त सैनिक एवं धर्माचार्य ब्राह्मण" को शीघ्र भेजने के लिये अनुरोध-पत्र भेजा।

x x x

आज बलुआ के श्री प्रभाकर राय शर्मा उर्फ [illegible] शर्मा, जो [illegible] श्री गंगाप्रसाद राय के [illegible] परिचित हुए हैं - उन्हें लखनऊ से प्रकाशित [illegible] ऐतिहासिक [illegible] तथा अन्य कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों के लिये आज से [illegible] कार्यालय - [illegible] लखनऊ के पते पर पत्र भेजा।
पत्र विनय कुमार शर्मा [illegible] में डाला गया।
[illegible] नहीं आ रहे हैं [illegible] में [illegible] तथा [illegible] जायेंगे?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च। ९।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।१०।

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५२

प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल
डॉ० सीए लाहा
प्रकाशक- हिन्दी-ग्रंथ
-अकादमी
लखनऊ.

आज सिमरी ग्राम से श्री ... प्रसाद पाण्डेय।
रामाश्रय पाण्डेय आदि आये हुए हैं। कल इन्द्रजीत
रश्मि भी प्रातः आयेंगे। उनसे वैवाहिक विचार विमर्श
के क्रम में मिलने जुलने से भी आये हैं।

शत्रु और रोगको दुर्बल नहीं समझना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता । ११ ।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् । १२ ।

सूर्यो० ५ । १३, सूर्या० ६ । ५२

आज विधि के मनोविज्ञान प्राध्यापक रामजी राम श्रीकृष्ण कॉलोनी वह डॉ. अलाक को मधुसूदन ओझा की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों के लिये लिखा - जो उनके पुत्र प्रद्युम्न ओझा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित हैं।

आज बनिया के वस्तु पुस्तक विक्रेता निखिल सोमारुपा - विश्वोषधी पर पुस्तक भी छुपाया है -

विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा का भी ब्रह्मवाद ग्रन्थ ५२ रुपये में खरीदा। यह बड़ा कम्पा है - पहिले ७००.०० मांगा - फिर ५००.०० कहा फिर ४०० रुपये कहा - अंत में कहा कि आप क्या देंगे. तो मैंने ५० रुपये कहा कि दीजिये. दो ओर दे दीजिये।

यह पुस्तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित है. यह रजिस्टर है। कमीशन पर मिलता है. बीएचयू में तर्क मँगाना होगा. उसने पचपन रुपया वसूल लिया। पुस्तकों का मोह - मार डालता है।

विद्याकुमार शर्मा ने ४ रुपये में विज्ञानका मँगवाकर उन्हें अग्रज १२ रुपये खरीदने हेतु के बाद अपनी अभिलाषा पूरा किया।

मनुष्य शरीर तो केवल नये पुरुषार्थके लिये ही मिला है, जिससे यह अपना उद्धार कर ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते। १५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि। १६।

सूर्यो० ५। १४, सूर्या० ६। ५१ — हरिशयनी एकादशीव्रत

आज मगध बैंक से नबका गई.. सेन्ट्रल बैंक से पेमेन्ट प्राप्त किया। पन्द्रह हजार रुपये प्राप्त हुए। अभी फिक्स ३४०० रुपये फिक्स्ड नहीं। सूद की जोड़ा गया अतः साढ़े ग्यारह हजार की जगह पन्द्रह हजार मिले।
सेविंग खाते में केवल दो हजार रुपये थे। अतः तीन हजार और जमा कर दिया। पांच सौ रुपये ब्रह्मचारी शर्मा को पहले दिया जो पेंशन के रूप में जमा किया। आज हम अपना बुढ़ा गोदाम ... रूपये सहित रामदुलारी की पत्नी को पांच सौ रुपये ब्रह्मचारी शर्मा द्वारा भेजा।
सत्संग भवन की सफाई हो रही है। सोमवार से पेंटिंग का कार्य होगा

प्रोफेसर गणेश जी भी इन्द्रजीत शर्मा के साथ.. मुजफ्फरपुर दो दिन गांव चले गये और तीन दिन वहां रहकर कल गुरुवार लौट आये। बड़ा सा कटहल ले आये।

अकेले स्वादिष्ट भोजन न करे, अकेला किसी सार्वजनिक विषयका निश्चय न करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया। १७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्। १८।

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१ — **प्रदोषव्रत**

आज भी रगड़िया जारी होता रहा। कालेज स्थान उनके
सहायक लगी रहे।

स्वधर्मका त्याग और परधर्मका ग्रहण व्यक्ति और समाज दोनोंके लिये ही हानिकारक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे । १९ ।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च । २० ।

सूर्यो० ५ । १५, सूर्यां० ६ । ५०

मूर्तिकार को [illegible] मूर्ति [illegible] का [illegible]
तथा ग्यारह सौ रुपये दिये गये। कुछ [illegible] का तथा
[illegible] के [illegible] में दिया गया।
मूर्तिकार आज देखा [illegible] लगा गया।
आज भी पेंट [illegible]। मूर्ति [illegible] तथा [illegible]
अशुद्धियाँ शुद्ध की गई।
कल्लू आया: मूर्ति [illegible] का काम चल रहा। पूरा नहीं
हो सका। [illegible] आयेगा।
दोनों [illegible]: मैत्रेयी गार्गी के [illegible]
[illegible] ग्यारह सौ रुपये [illegible] दिया।
[illegible] सौ रुपये [illegible] के लिये [illegible] के [illegible] में दिया।
[illegible] के लिये [illegible] तथा [illegible] देने के
लिये गये। दो सौ रुपये मैत्रेयी गार्गी की [illegible] के लिये दिया।
[illegible] सौ रुपये [illegible] के [illegible]
[illegible] किया। [illegible]
है [illegible] के [illegible] का
[illegible] किया।

विषयभोगकी कामना ही समस्त पापोंका मूल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्।२३। पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः।२४।

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९ — गुरुपूर्णिमा, श्रीव्यासपूजा

आज धूमधाम से आवास में गुरुपूर्णिमा का समारोह संपन्न हुआ। श्री राधेश्याम ब्रह्मचारी जी आये. अभिवादन करके चले गये। मथुरापुर के इन्द्रजीत शर्मा। धीरेन्द्र शर्मा सपत्नीक. खड्गधारी शर्मा. गाजीपुर के दया शंकर पाठक तथा जमुआंव के श्री तारकेश्वर शुक्ल आये। [illegible] से आये [illegible] से आये। बक्सर के मिथिलेश शर्मा जमुआंव के शारदाप्रसाद [illegible] पुत्र के संग भी आये। [illegible] का भी श्यामनारायण शर्मा [illegible] भी आगये। पटना से डा० राजनारायण शर्मा [illegible] श्री नंदकिशोर शर्मा सपत्नीक, पुत्र एवं पुत्रवधू सहित आ पहुँचे। बनीपुर के श्री राजनाथ शर्मा शिक्षक भी सपत्नीक आये। बाबू सराय के श्री जगदीशप्रसाद शर्मा शिक्षक भी अभिवादन कर पूजन करके चले गये। [illegible] जिले के [illegible] के रेलवे सुरक्षा वाहिनी के [illegible] श्री [illegible] भी आये। [illegible] के श्री [illegible] शर्मा [illegible] भी आये। [illegible] के [illegible] दरोगा भी आये। [illegible] के चन्द्रदेव [illegible] आये जो दरोगा होकर [illegible] हैं। ६ बजे अपराह्न श्री राजकुमार [illegible] समारोह हुआ। [illegible] के [illegible] आये और उन्होंने [illegible] सत्संग [illegible] में प्रतिष्ठित श्रीमद्भागवत [illegible]

धर्मविरुद्ध अर्थ एवं काम सर्वथा त्याज्य हैं।

[illegible] उनका [illegible] [illegible] उन्होंने [illegible] श्री [illegible]। श्री [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्। २७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः। २८।

सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।४६ आज स्वामी वाली शर्मा - उपदीक्षा [illegible] बाबा
५.४५ बजे दिन
गये थे। हिमालय श्रीपति शिवदत्त शर्मा - गणेशपुर -
भागलपुर - अपनी नाती सहित आ गये थे।
आज [illegible] के कार्यालय [illegible] [illegible]
रूपेश [illegible] श्रीमद्भागवत [illegible] भाग -
[illegible] - के चार भाग मंगाया। वेदव्यास [illegible]
यह पुस्तक दुर्लभ है। कहीं मिलती नहीं। [illegible]
है। पुस्तक संग्रहणीय है। [illegible] कुमार - लालजी को भी
प्राचीन भारत का ऐतिहासिक - भूगोल - डी० सी०
[illegible] जी के लिये पत्र लिखा।
आज १० बजे [illegible] पाण्डेयपुर - [illegible] के
मेरे [illegible] जीवन की संघर्षशील सहयोगी श्री [illegible]
सहसा आ गये। ये टी० बी० से [illegible] प्राप्त हैं
भी रहे हैं। उनकी [illegible] काशी हिन्दू वि० में [illegible]
[illegible] हैं। [illegible] और उनके पति [illegible]
[illegible] में [illegible] हैं। [illegible]
[illegible] उन्होंने [illegible] देखा [illegible] एवं [illegible]
[illegible] प्रतिमायें देखा।
साहित्य या रिसर्च - गुरुकुल कांगड़ी - फार्मेसी
श्री सत्य नारायण [illegible] के पास से [illegible] - वाराणसी
सत्संग में मंगाया।
दिनचर्या दो [illegible] में भेजना।

हमें यथासाध्य आवश्यकताओंको कम करके सादी, सरल एवं पवित्र जीवन पद्धति अपनानी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्। पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्। २९।
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्। मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्। ३०।

सूर्यो० ५। १७, सूर्या० ६। ४८ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

श्री रुद्रजीत शर्मा श्री कैलाश पाण्डेय के साथ आये [illegible]
हुये. [illegible] बहुरंगी वातावरण से [illegible] है। [illegible]
[illegible] है। [illegible] भी [illegible] पढ़ते हैं।
प्रो० [illegible] को एक [illegible]
आये. कहकर [illegible] है। [illegible] तो दक्षिण की
[illegible] शर्मा। दिनेश प्रताप सिंह [illegible] याद दिलाया कि
[illegible] कुछ महत्वपूर्ण-पुस्तकों [illegible] में [illegible]
कुछ मदद करें।
[illegible] को [illegible]।
यहाँ [illegible] के रूप से बहुत कुछ मदद [illegible] सुविधा
होती है।

कुछ न कुछ प्रतिदिन दान करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् । झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी । ३१ ।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन । अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् । ३२ ।

सूर्यो० ५ । १८, सूर्या० ६ । ४७

आज भी इन्द्रजीत शर्मा तथा कैलाश पाण्डेय
रुके रहे। मन को शान्ति-लाभ है। कल्पना से चित्त घबड़ाता
है। और के [illegible] [illegible] [illegible] क्योंकि
कोई विश्वासी सहयोगी [illegible] नहीं है।
सुमना को [illegible] और दो ऐसा भोजन किया। रात करवट
से जाग रहे। स्वास्थ्य गिरता जा रहा है।
रामलाल के लिये उदय प्रकाश [illegible] को देना पड़ेगा।
१२ जून [illegible] के लिये लगा। [illegible] भी इतनी आयी।
इसमें पन्त में कहा कि [illegible] होगा... बनारसी
[illegible] का अनुभव दूर रहेगा। मैंने बोला सो चालक
कि [illegible] है।
[illegible] बहुत नाराज हुए और कहा कि
मुंबई के [illegible] मेरा काम आपरेशन [illegible] में [illegible]
लगा दिया... [illegible] [illegible] हुआ।
सो. ग्यारह हजार [illegible] वहाँ लगा यहाँ भी [illegible]
[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible]
हो गया।
किन्तु कुछ के बाद प्रमोद जी २२-२३ [illegible] इस [illegible]
[illegible] रहे हैं, उनकी [illegible] भी [illegible]
वे भी तो [illegible] हैं। [illegible] तथा [illegible] [illegible]
प्रबन्ध-व्यवस्था के लिये करते हैं - कहते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च । अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः । ३३ ।
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् । कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । ३४ ।

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।४७

आज स्वामीजी का स्कूल में आगमन हुआ।
तीन [illegible] शिक्षिका के यहां गया [illegible]
[illegible] को गई। धीरे-धीरे [illegible] पढ़ [illegible]
को [illegible] है।
श्री प्रमोद [illegible] बहुत [illegible] उनको [illegible]
उनकी [illegible] से [illegible] के लिए प्रयास
करता हूं।
सम्पादक प[illegible] श्री कृष्ण गोपाल शर्मा आये
वे [illegible] हैं। उन्हें [illegible]
की [illegible] दी गई। [illegible]
[illegible] प्रेषण किया। Ancient Indian Education
Dr. R.K. Mukherjee की [illegible]
[illegible] "[illegible]" [illegible]
को [illegible] किया।
[illegible] एक [illegible]
को [illegible]। सर्वत्र [illegible] सब कहीं [illegible]
[illegible] को [illegible] हुआ।
[illegible] उनकी [illegible]
[illegible]
[illegible] स्वामी [illegible]
के [illegible] के लिए [illegible]
श्री कृष्ण [illegible] आये [illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] नहीं [illegible]
[illegible] बहादुर [illegible]
[illegible] से [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः। ३५।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्। ३६।

सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।४६ स्वा० श्री नंदी ब्रह्मानंद परमहंस - बरसी का भेजा
एक सौ रुपये का धनादेश प्राप्त हुआ। उन्हें लिफाफे में
एक पत्र द्वारा समाचार - मठ का विवरण आदि लिख भेजा।
तीन लिफाफे मंगाया। पोस्टकार्ड भी मंगाये। तीनों
भेजी। ग्वालियर - समाचार दिये। एक पत्र - हावड़ा - नदी [illegible] के पते
पर श्री रामप्रसाद पाण्डेय के पास - समाचार - तथा [illegible]
के समय एक [illegible] के लिये लिखा।

कर्मका फल चाहना मनुष्यके लिये हितकारक नहीं है।

 RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।३७।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।३८।

सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।४५ आज पं० उन्नीस रुपये में, च्यवनप्राश का पाउडर मंगाया Kerfoam Marketed by Ko-Fram - Pharmaceuticals Ltd. 1076 Dr. E. Moses Road Worli Mumbai 400.018." × ×

लखनऊ के स्टील सिटी के अधिशासी-अभियन्ता-श्री सुरेन्द्रनाथ राय, ग्राम पो० बहुआरा, जि० गाजीपुर के अपने शिष्य को उद्बोधक पत्र लिखा। आज ही लिफाफे मंगाया तीन रुपये में। गाजी एवं स्वामी पढ़नेवाली-श्री प्रमोद कुमार को चिट्ठियों को दिया। आज लखनऊ इन्दिरानगर से एक पत्र-सौहार्द के सचिव वचनदेव कुमार का राजप्रवेश शास्त्रीजी का आया कि-डा० आनन्द कुमार 'आनन्दम्' के बहुआयामी व्यक्तित्व के संदर्भ में एक अभिनन्दन ग्रन्थ लिखते हैं कि अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित किया जायेगा। अतः शीघ्र आप भेजें। दो दिनों में कुछ लिखकर भेज दिया। लेकिन दो लिफाफे प्रमोद कुमार के द्वारा मैं मंगवा दिये।

आज समस्तीपुर के श्री श्री भगवानराम शर्मा, श्री जीतेन्द्र शर्मा तथा श्री केदारनाथ मिश्र आदि को उद्बोधक पत्र लिखवाया।

आज ही एक पत्र- गाजीपुर, श्री रामदयाल ठाकुर एवं श्री जमुनी राय शर्मा, राधाकृष्ण बालचन्द्र ठाकुर, हीरालाल-प्रभुनाथ ठाकुर, श्री रामचन्द्र ठाकुर आदि को पत्र लिखा। समाचार तथा धर्मशिक्षा के उद्बोधन आदि। इन्द्रासन ठाकुर के लड़की को भी लिखा।

× × ×

आज मणिहारी के श्री श्यामनारायण राय, अपने भाई और स्व० पुत्र के साथ आये। रात को ठहरे। कथा वार्ता-सत्संग होता रहा। वे लोग प्रातः ही चले गये। दान-दक्षिणा दिया- इक्कीस रुपये का। देव मन्दिर- स्वच्छन्द।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्। ३९।
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया। ४०।

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४५ वीरोंखुदि का पत्र आज छोड़ गया। आज प्रदीपकुमार
की धर्मपत्नी भाभी और से कुछ लोग पंडित तान्त्रिक कुछ धर्म-चौका जिनकी
ओर से पूजा करने आये... ये शुक्रवार से पाँच दिनों तक - मंगलवार तक
पूजा करेंगे। × × आज श्री रामस्वरूप सिंह- गोपालधाम सिधौरा
एवं मुकुन्द ब्रह्मचारी को पत्र लिखा तथा साधना के अनुभव कारी।
व्यावहारिक अनुरोध किया। अपना संस्मरण भी शीघ्र लिखना
आवश्यक है। इस प्रपंच से मुक्त होकर लिखने का प्रयास
करूंगा। ईश्वर की नई कलम के लिये दस रुपये खर्च किया।
एक लिफाफा और गंगाधर राम स्वरूप सिंह को भेजे गये पहले पत्र
की फोटोस्टेट प्रति कराया। पुरुषियाँ देव कृष्ण गोपाल शर्मा
ने हीरकदा की ओर का वीर सिंह विश्वविद्यालय के विश्वनाथ मंडी
परिसर से चिन्तामणि विनायक वैद्य रचित मध्यकालीन भारत
पुस्तक जो दुर्लभ मानी जाती थी, असली रुपये में ला दिया।
यह पुस्तक हरियाणा हिन्दी-ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित है और जिसकी
मैं चंडीगढ़ में यह ग्रंथ अकादमी का कार्यालय है। × ×
मुद्रक — राष्ट्रीय-प्रिंटर्स, 9/1787 पंचशील गार्डन, नवीनशाहदरा,
दिल्ली।" ×

स्वार्थी मनुष्यको संसारमें कोई अच्छा नहीं कहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा । तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ।४१।
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन । विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ।४२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ।१०।

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४४ आज से मठ में प्रमोद कुमार की पत्नी की-
छोटी अन्नपूर्णा की भावज केन्द्रीय-मंत्री के एक संबंधी [illegible]
प्रसादसिंह-बहुगुणा की प्रेरणा-अनुकंपा पर गङ्गा-[illegible] शतचण्डी के पाठ के
लिए ही गांव के वीरु पंडित एक चतुर्दश वर्षीय बालक दीक्षित पाठ करने
लगे हैं। आज इसके बाद अनुष्ठान पूजा आरम्भ की। दूसरे के बड़े कमरे में
पूजा हो रही है। वहाँ से राधेश्याम-विमला की माताजी की [illegible]
[illegible] पर्यन्त के काम में पड़ेंगी आदि हैं प्रातः [illegible]
जायेंगे। प्रातः चाय-नीम्बू-मूंगफली, दस ग्यारह बजे [illegible]
[illegible] आलू तथा आदि दिया जा रहा है। रात में रोटी भात सब्जी आदि
चलता है। प्रमोद कुमार ने मुझे संकेत किया कि यह कुमार →
'' मृत्युञ्जय का पाठ करते हैं। इन लोगों को पांच दिन तक बाद देना [illegible]
है। मैं जो कि आजकल पुनः शास्त्र सेवा और प्रतिक्रिया रहित
हूँ। ये लोग सेवक हैं। इन्हें भी शान्ति मिले।
श्री कृष्णगोपाल शर्मा के पत्रोत्तर द्वारा उपलब्ध कराया -
उत्तम ग्रंथ -'' महाभारत-मीमांसा-श्री [illegible] की
ध्यान से पढ़ रहा हूँ। इसके अतिरिक्त श्रीमद् [illegible]
[illegible] वाले [illegible] - 1000 [illegible] रुपये के
प्राकार थोड़ा थोड़ा पढ़ रहा हूँ। [illegible]
पढ़ना तथा हृदयङ्गम करना - आनंददायक लगता है।
चीनी - नींबू का शर्बत तथा सत्तू आदि का जलपान करता हूँ।
श्री प्रमोद कुमार के [illegible] फल आदि भी ग्रहण करता हूँ।
पुनः राजकिशोर को 4 पोस्ट कार्ड मंगाया।
हिन्दी-साहित्य अकादमी हरियाणा - स्थान चंडीगढ़ को भी [illegible]
के लिए अनुमति और प्रेरणा का पत्र लिखा।
महाभारत मीमांसा उत्कृष्ट ग्रन्थ प्रकाशित करने के उनको
[illegible] सर्व विद [illegible] [illegible]

भारतीय संस्कृति प्राणीमात्रमें आत्माको देखनेकी शिक्षा देती है।

उत्पन्न किया है। प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल
की [illegible] हिन्दी ग्रंथ अकादमी को
भी पत्र लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

एकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम्। यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम। १।

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया। त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्। २।

सूर्यो० ५। २१, सूर्या० ६। ४३

आज भी पूर्ववत् स्वाध्याय करता रहा हूँ।

तीन पोस्टकार्ड पत्र जगमोहन दास जी, श्री [illegible] शर्मा [illegible]

स्वामी [illegible] तथा [illegible] एवं

गुरुकुल [illegible] में [illegible]

के सम्बन्ध में पत्र लिखा। हिन्दी ग्रन्थ-अकादमी [illegible]

[illegible]। तीन पोस्टकार्ड पुनः द्वारा- [illegible]

[illegible] तथा [illegible] सम्बन्ध [illegible]।

" [illegible] मीमांसा' बौद्धधर्म के [illegible]. अफगानिस्तान में बौद्धधर्म का

इतिहास आदि पुस्तकों में [illegible] वाला कागज लगाया गया।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।३।
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो। योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।४।

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।४३ — कामदा एकादशीव्रत (स्मार्त)

आज रविवार एवं एकादशी दोनों थे। अतः फलाहार के साथ नमक [illegible] लगाई रहा। फलतः प्रमोद कुमार के पुरोहित आनुष्ठानिक पंडितों के दबाव में [illegible] और [illegible] सम्बन्ध में नमक का ग्रहण करना पड़ा। रात में दो टुकड़े [illegible] को ग्रहण किया और एकबार [illegible] किया।

× × ×

ये सारी [illegible] आनुष्ठानिक पंडित न मालूम कहां के [illegible] जमा होगये हैं। [illegible] प्रमोद जी [illegible] पड़ता है। [illegible] तथा [illegible] पाँच रुपये का [illegible] मंगाया [illegible]।
चौका का [illegible] किताब को छूदेकर ग्रहण किया।
× देह की [illegible] नहीं हैं। इससे [illegible] कष्ट है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।५।
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा। बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत।६।

सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।४२ — **कामदा एकादशीव्रत (वैष्णव)**

आज प्रातः ही देखा कि [illegible] राम एवं [illegible] राम साथ ही गाँव के चले गए मठ में आ गये हैं। अच्छा ही हुआ मठ में काम सम्हालेंगे।

आज एक लेखा पत्र - रुद्रांश के [illegible] में भी [illegible] गृहस्था सम्हालने वाले श्री [illegible] राम के सगे संबंधी - उनके बाद के पुत्र श्री मृत्युञ्जय शर्मा को सम्पर्क करने के लिये [illegible] मिला। [illegible] की सेवा एवं उनका प्रेम सद्भाव मन में उनके प्रति आदर एवं ममत्व को पैदा करता ही है - इसी वास्ते कि उनके साथ के दो लड़के [illegible] भी अजय एवं संजय ने आश्रम में [illegible] शर्मा [illegible] के [illegible] में संस्कृत विद्यालय में पढ़े थे।

इस बीच [illegible] सीताराम एवं [illegible] के परिवार से मालूम हुआ कि अजय की [illegible] अजय सीताराम के दामाद रहे हैं। इन्होंने कहा कि मैंने [illegible] गाँव में एक कन्या की शादी की है। अजय-संजय तो नहीं रहे। पर उनके छोटे भाई मृत्युञ्जय शर्मा हैं जिनकी उम्र है करीब २८-३० की। उनको भी दो कन्यायें ही हैं।

अतः मैंने पूर्ववत् [illegible] राजगुरु मठ से [illegible] सम्पर्क करने तथा [illegible] के लिये लिखा। उनके [illegible] सामाजिक मर्यादा की [illegible] इन लोगों की [illegible] तथा [illegible] कि उनका [illegible] हो - वे दुआ [illegible] एवं पुण्य का भागी होंगे।

x डा० श्यामबिहारी राय - [illegible] को [illegible] तथा [illegible] के संबंध में लिखा।

साधककी साधना निर्द्वन्द्व होनेसे ही दृढ़ होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।७।
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।८।

सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।४१ — भौमप्रदोष

आज दरभंगा के श्री वेंकटेश्वर शर्मा एवं श्री रमण शर्मा को
दो पोस्टकार्डों के द्वारा उद्बोधक पत्र लिखे। दही मंगाया
सायं पाँच-छह बजे जलाहार-खिचड़ी ग्रहण किया। चार पोस्टकार्ड मंगाया
७-५० की दवाई चीनी मंगाया-सात रुपये की दही मंगाया।
गजरौली को उद्बोधक पत्र लिखकर सदा उपदेश देना तथा
मठ से संपर्क बनाये रखना उचित है। मठ या पीठ ही प्राचीनयुग से
शिक्षा-संस्कृति-संस्कार प्रदान के और सनातन सार्वभौम मानव संस्कृति
के केन्द्र रहे हैं। सब लोगों को ही यह मानकर समझना चाहिये।
श्री राजेन्द्र शर्मा जी विनय के रहते - मेरी भी सहायता होती है वह
विनम्र-धार्मिक भावना एवं धार्मिक प्रवृत्ति का द्योतक है।
राजेन्द्र पंडित- दरभंगा के श्यामनाथ सिंह को उद्बोधक पत्र लिखा।
श्री विनोद कुमार-अन्नपूर्णा की अनुष्ठान पूजा के नाम पर एक
सप्ताह तक पंडितों का जमघट लगा रहा। आज पूर्णाहुति हवन
का दिन था। ये पंडितगण कुछ काल से इस कोर्ट दुबे जी और
एक [illegible] के आश्रय में रहकर पूजा-पाठ तथा अनुष्ठान
करते हैं। यह शिष्टाचार आडम्बरी एवं नाटकीय [illegible] है।
यह अनुष्ठान तीन वर्ष मठ में आकर सत्संग भवन में बैठकर [illegible]
पारायण-पाठ हो सकती है। यह पता चलता है, पंडितों को भी कुछ रक्षा
हो। पंडितों को [illegible] किसी वर्ष [illegible] करते हैं।
[illegible] पंडित [illegible] आते हैं। स्नान
भोजन करके सप्ताह [illegible] तक पारिश्रमिक लेकर। संन्यासी [illegible]
[illegible] को लेकर [illegible] । मेरे सामने नहीं [illegible]
[illegible] किया। इसमें एक शाकद्वीपी पंडित-पं० [illegible]
के बहनोई थे वे अन्त में मिले उनसे परिचय हुआ। [illegible]
[illegible] के श्री [illegible] शास्त्री से परिचित हैं। उन्होंने [illegible]

निष्कामभावसे किया हुआ आचरण अमृतस्वरूप माना गया है।

श्री [illegible] पाण्डेय के भोजन में पंडितों को देखा।
उनसे चर्चा हुई। [illegible] पाण्डेय [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्। १०।

सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।४१ आज प्रातः श्री गणेशमान्य सभी पंडित जी।
आते समय विशेष वातचीत एवं परिचय हुआ। आज अपराह्नः सिकरौ
श्री रामनरेश पाण्डेय की एक स्मारपत्र, बचपन की लिखी हुई गीता ने
एवं अरुण कुमार शर्मा ने यहाँ बनाया "गीता हृदय-जयंती वार्ता
पत्र-सार हुआ लखनौ की संबंध में लिखा।
पंडितों के जमघट के मध्य उत्तल-भरत-अशीत वातावरण में
मालूम होता है। अपना स्मरण- मगाने पोथी-पाण्डित्य का
इतिहास भी नहीं लिख पाऊँगा। देखें भगवद् कृपा क्या होती
है। एक काई पुनः डा० श्री भागवत शरण एवं महेन्द्र जी।
"विजय-निकेतन" रोज जागरण की कुछ प्रतियाँ पाण्डव के
संबंध में लिख रहा हूँ। राजनीति का अवश्य वेश्यावृत्ति है।
* सहसा बजुरके श्री शिविलेश्वकुमार राय आ पहुँचे। उनसे पता
चला कि प्रायः सूखा ही है। एक लिफाफा और दो पोस्टकार्ड पत्र लखने
में मंगाया। डिप्टी- शिवशंकर गिरिंद-निधि को पत्र लिखा तथा
पत्रों के गंगा प्रसाद राय जी डाकिया को अनुज-प्रभाकर राय को उनके
लखनऊ के पते पर कुछ पुस्तकों की लिए पत्र लिखा।

भारतीय संस्कृतिका लक्ष्य है आत्मसाक्षात्कार या भगवत्प्राप्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ।११।
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ।१२।

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।४० — अमावास्या

आज भोर में प्रेम नारायण - मीरपुर चले गये. उनके पत्नी बच्चे भी गये। कानपुर के श्री मिथिलेश कुमार भी गये। सब के चले जाने से सूना सा मालूम होता है. उनके बहुत मस्त थे ऐसा लोक मालूम होता है। माया विचित्र है, सब तरह के सताती है। यद्यपि आना-जाना लगा रहता है। यही संसार है जो प्रायः बदलता रहता है। अब मैं चाहता नहीं हूं कि कोई न कोई परिचित आता रहे। ५ बजे भोपाल से अयोध्या वैली के प्रो० राजनारायण शर्मा के पुत्र - श्री नंदकिशोर शर्मा का एक पोस्टकार्ड पत्र आया और उन्होंने 'ब्रह्मर्षि देश' तथा मुक्तिधाम [illegible]" पुस्तकें मांगी भेजनी है। उन्हें मात्र [illegible] प्रो० तेजनारायण [illegible] पत्रोत्तर [illegible] चंडीगढ़ में सरकारी सेवा में रत उनके पुत्र का पता मांगा रहा हूं कि चंडीगढ़ साहित्य अकादमी से प्रकाशित था उसके माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ जैसे [illegible] B.C. Law. 'प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल' हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित भी प्रति चाहता हूं पढ़ने के लिये बड़े काम की है। उसमें [illegible] गुप्त प्राग्[illegible] के महत्वपूर्ण [illegible] भी चर्चा है. चाहता हूं जिसके आधार पर प्राचीन ऐतिहासिक गांव और नगर में वहां हजारों वर्षों से बसे [illegible] - इतिहास का [illegible] [illegible] देना चाहता हूं कि [illegible] [illegible] उनके [illegible] है। [illegible] [illegible] एवं श्री स्वामी [illegible] के [illegible] भी 'मेरा जीवन का सार' में [illegible] है।

धर्मानुष्ठानके फलस्वरूप धर्मके साथ ही धर्मानुकूल अर्थ एवं कामकी भी सिद्धि होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा। १३।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत। १४।

सूर्यो० ५।२४, सूर्यां० ६।४० आज दो किताबें मंगाया - पैसा [illegible]
[illegible] के लिये पचास रुपये दिये। पं० रामनरेश पाण्डेय
सिमरी को पैसों के लिये स्मारपत्र लिखा कि कुछ मदद
लेकर [illegible] पधारें कि विचारविमर्श करके गाड़ी आगे बढ़ाई
जाय। दस रुपये [illegible] [illegible]
मंगायी गई। रात में केवल थोड़ा दूध ही ग्रहण किया।
भाई लोगों को पत्र लिखा [illegible] में [illegible] हूँ कि [illegible]
के [illegible] थोड़ा चित्त विचलित है।
वस्तुतः [illegible] उदयन [illegible] एवं पारिवारिक इतिहास
[illegible] का देखना चाहता हूँ। यह [illegible]
नहीं हो सकता। इसीलिये [illegible] प्रत्येक
प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल' पुस्तक ढूंढ रहा हूँ।
डा० उदयनारायण राय एवं डा० सिद्धेश्वरी नारायण से सम्पर्क
हुआ। डा० उदयनारायण राय ने अपनी पुस्तक गुप्त राजवंश और
उसका युग पुस्तक में मगध से प्राप्त गुप्तकालीन शिलालेख
में उक्त [illegible] किया है। [illegible]
६१० [illegible] उल्लेख का [illegible] शिलालेख पर [illegible]
है। उसकी पूरी [illegible] है। [illegible]
बहुत दिनों के बाद [illegible]
[illegible]
पुस्तक में देखूंगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।१५।

सूर्यो० ५।२५, सूर्यो० ६।३९ श्री सतीश कुमार सिंह उर्फ देवी अधिपति
दलक-जा डा० रघुनाथसिंह को एक अभिनन्दन पत्र लिखा। किये मठ में
पधारे बाबा रघुनाथ सिंह का एक [illegible] के [illegible] के
सत्संग [illegible] में [illegible] और उन्हें मनीषीके नाम पत्र लिखा है। मैंने
[illegible] गोयल, [illegible] कौशिक, [illegible] तथा
[illegible] की यात्रा और मेरे [illegible] यात्रा। बुद्ध कथा आदि।
[illegible] शिक्षा। श्री सुधाकर राय शिक्षक [illegible] को जो
[illegible] इन्टर कॉलेज में अध्यापक हैं और प्रयाग [illegible]
गद्दी सम्भाले [illegible] के जाने कहाँ रहते हैं उन्हें [illegible]
[illegible] के प्राप्त करके भेजने के लिये लिखा।
रा.। मैं साढ़े आठ बजे इन्द्रजीत शर्मा के पुत्र राजू [illegible]
[illegible] उनका [illegible] बड़ा मोटर साइकिल से [illegible] के
पास [illegible] राजू गये हैं। सत्संग की कुछ
बातें होती रहीं वे सुल्तानगंज के [illegible]
बाबा बैजनाथ की सावन की [illegible] के बारे में
मैंने सुल्तानगंज के [illegible] की [illegible]
पौराणिक [illegible] [illegible] लिखे हैं। [illegible]
[illegible] के [illegible] स्वामी [illegible],
स्वामी [illegible] आदि की [illegible] एवं आदर्शों पर
प्रकाश डाला।
पं० [illegible] शर्मा श्री [illegible] राय [illegible] को
कार्यों के [illegible] सूचना देकर भेजने का काम कर दिये
सौंप।

भगवान् पूर्ण कृतज्ञ हैं। जीव अल्प कृतज्ञ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।१६।

सूर्यो० ५।२५, सूर्यां० ६।३८ आज [illegible] श्री [illegible] शास्त्री लगे एक
बुधवार को आये। प्रातः राजू गये [illegible] मैया। [illegible]
तथा [illegible] में दर्शन, [illegible] ग्रहण किया। महाभारत - श्रीमद् [illegible]
[illegible] पढ़ता रहा। मध्याह्न - श्रीमद्भागवत [illegible] पढ़ता
पढ़ता रहा। शाम में [illegible] का एक [illegible]
आया और कहीं कुछ नौकरी करता है। पहले कुछ [illegible] रह
गया था वह संभवतः [illegible] के [illegible] या [illegible] मंगल के [illegible]
[illegible] था। रात में [illegible]
[illegible] तो खाना नहीं था - रविवार के कारण। [illegible]
द्रव्य ग्रहण किया। [illegible] जी [illegible] दवा [illegible]
[illegible] हुआ [illegible] है।
[illegible] जी, जो [illegible] वाद में [illegible]
है, आज पुनः [illegible] विश्वनाथ मंदिर में दर्शन के
प्रबंधन में [illegible] में [illegible]
किया। सत्संग की बहुत [illegible] बातें होती रहीं। उन्होंने [illegible]
[illegible] में दिये। [illegible] का [illegible] तथा
२२ [illegible] को प्रकाशन के लिये दे दिया।

आसक्तिरहित होकर दूसरोंके हितके लिये कर्म करनेवाला श्रेष्ठ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्।१७।

सूर्यो० ५।२६, सूर्यो० ६।३७ कल से ही रुक रुक कर वर्षा होती रहती है।
आज गाजीपुर के रामपुर-गाजीपुर से, श्री ब्रजकिशोर शर्मा
आ गये। मैंने पत्र लिखकर उन्हें बुलाया था। उन्होंने कुछ
रुपये पुस्तकों में दे दिये। मैंने इस रकम को प्रकाशन विभाग मिश्र
लोगों के लिये सुपुर्द कर दिया। ब्रजकिशोर ने दो हजार रुपये
अपनी आवश्यकता के लिये [illegible] रुपये में सुरक्षित [illegible]
रखने के लिये दिया। प्रमोद कुमार श्री प्रभुनारायण सिंह
के यहाँ उनके पारिवारिक अनुष्ठान के लिये गये हैं।
श्री हेरम्ब से पता चला कि डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक
"मातृ-साधिनी" अस्सी रुपये में मिलती है। इसे [illegible] के
मंगाना होगा। [illegible] की दिव्यता [illegible] -
Ancient geography of India मोतीलाल बनारसीदास
के पास आ गई है। इसका मूल्य पांच सौ रुपये है। [illegible]
वालों से मंगाना होगा। इसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

भोग भोगना और संग्रह करना—यही जिसका उद्देश्य होता है, वह संसारी होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।१८।

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३६ — नागपञ्चमी

×× "भ्रम-निवारण के जरिये सत्य का अनुसंधान धर्म है, सत्य का अनुसंधान धर्म है। जिसकी अभिव्यक्ति प्यार, दया व करुणामयी चेतना के रूप में होती है।" ××

आज श्री सैयद का भोज० करा. समीर प्रसाद ग्रहण किया। पेट में व जोड़ों में कुछ असुविधा होता है।
रात में इसी से भोजन किया.. भोजन का पूर्ण नहीं [illegible] इसी कष्ट की वृद्धि होती है। रात में [illegible] अच्छा हुआ।
वर्षा के [illegible] [illegible] महाराज पर [illegible] [illegible] है।
[illegible] [illegible] [illegible] है। कई [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] है।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] है।

कर्तव्य चिन्ताका नहीं, प्रत्युत विचारका विषय होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।१९।

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३५

आज दिन [illegible] काम [illegible] रहा।
[illegible] शर्मा जी [illegible] हैं। [illegible] होगा।
आज सहसा [illegible] शर्मा की [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] की [illegible]। वस्तुतः [illegible] नहीं है। [illegible] [illegible] [illegible] नहीं। [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible] की ओर [illegible] [illegible] की है। [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] की [illegible] के [illegible] भी [illegible] होगा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सहज ही होगा।
× × [illegible] का [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

भोगवाद ही आसुरी सम्पदा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।२०।

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३४ — श्रीगोस्वामी तुलसीदास-जयन्ती, स्वतन्त्रता दिवस

महाभारत के अनुशासन पर्व में ग्यारहवें अध्याय में रुक्मिणी ने भाग्यदेवी से पूछा है, तुम कहाँ रहती हो? देवी ने उत्तर दिया: →

" वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे,
दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे,
जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्त्वे।
नाकर्मशीले पुरुषे वसामि
न नास्तिके सांकरिके कृतघ्ने॥"

"मैं कर्तव्यदक्ष, नित्य उद्योगी, क्रोध न करनेवाले, देवताओं की आराधना में तत्पर, उपकार को माननेवाले, इन्द्रिय-विजयी, और सदा कुछ न कुछ करनेवाले पुरुष में वास करती हूँ। जो निरुद्योगी हैं, देवताओं पर जिनकी श्रद्धा नहीं है, जो वर्णसंकर करती और कृतघ्न हैं मैं उनमें नहीं रहती।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।२१।

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३३

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाघ्या ये गुणिनां गुणाः।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रो रूपमिवेप्सितम्॥
अर्थस्य साधने सिद्धे उत्कर्षे रक्षणे व्यये।
नाशोपभोग आयासस्त्रासश्चिन्ता भ्रमो नृणाम्॥
स्तेयं हिंसानृतं दम्भः कामः क्रोधः स्मयो मदः।
भेदो वैरमविश्वासः संस्पर्धा व्यसनानि च॥
एते पञ्चदशानर्था ह्यर्थमूला मता नृणाम्।
तस्मादनर्थमर्थाख्यं श्रेयोऽर्थी दूरतस्त्यजेत्॥
—(श्रीमद्भागवत-11-23-16-19)

भावार्थः— जैसे थोड़ा सा कुष्ट सुन्दर स्वरूप को बिगाड़ देता है, वैसे ही तनिक सा भी लोभ यशस्वियों के यश और गुणवानों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है। धन कमाने में, कमा लेने पर धन को बढ़ाने में, धन की रक्षा करने में, धन के व्यय में, धन के विनाश में, और धन के उपभोग में, सर्वत्र परिश्रम, भय, चिन्ता, और चित्त के भ्रम का ही भोग करना पड़ता है। चोरी, हिंसा, असत्य भाषण, काम, क्रोध, दम्भ, गर्व, अहंकार, भेद बुद्धि, वैर, अविश्वास, स्पर्धा, लम्पटता, जुआ और शराब—यह पन्द्रह अनर्थ मनुष्य में धन के कारण ही उत्पन्न होते और रहते हैं। अतएव कल्याण चाहनेवाले पुरुष को चाहिये कि वह स्वार्थ और परमार्थ के विरोधी अर्थ नामक इस अनर्थ को दूर से ही त्याग दे।

× × ×

चित्तकी प्रसन्नता (स्वच्छता) प्राप्त होनेपर सम्पूर्ण दुःखोंका नाश हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे। २२।

सूर्यो० ५। २८, सूर्या० ६। ३२

×× सन्त-वाणी ××

परिवारके मालिक बनकर रहोगे तो दुखी रहोगे,
माली बनकर रहोगे तो सुखी रहोगे।
करने में सावधान और होने में (परिणाममें) प्रसन्न रहें।

× × ×

"जो चाहते हैं सो होता नहीं, जो होता है सो भाता नहीं, और जो भाता है सो रहता नहीं।" — यही मनुष्यकी विवशता है।

[redacted] दुःखआता है दुःखहारी की स्मृति जगाने।

× उस सुख का त्याग करदो जो किसी का दुःख हो।
जीवन का सत्य है, परिवर्तन। परिवर्तन से मत डरो।
हर संयोग वियोग में बदलरहा है, हर उत्पत्ति विनाश मे बदल रही है।
जो संयोग में वियोगका दर्शन करता है, उसे कभी दुख नहीं उठाना पड़ता।
आप अपने को सुखी रखने केलिये क्या किसी को दूसरों को दुख पहुंचाना क्या उचित है।
मानव अपने कर्त्तव्य से ज्यादा अधिकारपर महत्व रखता है यही उसके दुखका कारण है।

[redacted] [illegible]

नियति से ज्यादा और समय से पूर्व किसी को कुछ नहीं मिलता अतः कर्मकार फलकी चिन्ता कतई न करे।" × × ×

साधकका अन्तःकरण अपने वशमें रहना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्। २३।

सूर्यो० ५। २८, सूर्या० ६। ३२ — **पुत्रदा एकादशीव्रत (स्मार्त)**

आज एकादशी व्रत रहा- दिन में सिंघाड़ा एवं रात में
कुट्टू की खीर बनी थी... प्रमोद दिन भर गायब थे, कहीं
जाने पर कुछ बताते भी नहीं... सायंकाल लौटे... श्रीकृष्ण जी ने
बताया अगले [illegible] का [illegible] आया। [illegible] के श्रीजयप्रकाश
भी यहाँ प्रमोद की प्रतीक्षा करते रहे। सायंकाल दही मंगाकर मैंने
पीया। डा० [illegible] जी साहब [illegible] ये वैसे [illegible] के उपाध्यक्ष
हैं। दफ्तर के यहाँ से दो पत्र [illegible] कोई [illegible] पत्रिका तथा
[illegible] पत्र [illegible] पंडित [illegible] दे गये।
वे श्रीप्रकाश नारायण को सूचना देने के पाये।
प्रमोद को बनारस जाने के लिये... उनका [illegible] पत्र तथा
[illegible] के [illegible] से [illegible] हस्ताक्षर करके
दिया। [illegible] आने के लिये [illegible]।

प्रसन्न (स्वच्छ) चित्तवालेकी बुद्धि बहुत जल्दी परमात्मामें स्थिर हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो।२४।

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३१ — पुत्रदा एकादशीव्रत (वैष्णव)

आज प्रातः वैद्यनाथ पाण्डेय उनके भाई विश्वनाथ पाण्डेय
को लेकर दर्शन करके ग्यारह बजे लौटे और रात्रि में जाने
तथा उनके भाई श्री विश्वनाथ पाण्डेय सिवनी लौटे।
श्री वैद्यनाथ पाण्डेय ने इक्यावन रुपये पूजा के लिये दिये। उनके भाई ने इक्कीस
रुपये दिये। बालकृष्ण का पेट खराब हो गया। दस दस रुपये मैंने भी नातियों
को दिये। एक रुपये साक्षी में दिया। विश्वनाथ पाण्डेय द्वारा
श्री रामनरेश पाण्डेय के छपरा जाने की सूचना मिली।
आज कलकत्ता छपरा - श्री रामप्रसाद पाण्डेय को पत्र लिख
भेजा। उसी माध्यम से श्री रामनरेश पाण्डेय को भी कुछ कामों के
लिये संदेश भेजा तथा नक्शा-आयकर की जहाँ दिवाली के लिये
ईंट सीमेंट का तगादा किया।
प्रमोद कुमार व० बजरंग की ही लौट आये। पर कुछ भी
नहीं हो सकी।
पचहत्तर रुपये का चेक मंगाया, सोलह रुपये दूध के लिये दिया।
साठ रुपये की चीनी मंगाया।

स्त्री एवं धन-सम्बन्धी साहित्य न पढ़ें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास।२५।

सूर्यो० ५।२९, सूर्यां० ६।३० — **भौमप्रदोष**

आज श्री प्रमोदकुमार [illegible] जी ने उनका [illegible]
की जलेबियाँ .. सत्तू भोजन किया .. शाम में रोटी-तरकारी ..
आलू-वाटी। डॉक्टर ने कल ही कहा था कि चिकनाई में
कुछ मात्रा लेना उचित है। जिस से दही मंगाया [illegible] दिये।
अतएव सात्विक भोजन पहला रहा। [illegible] पढ़ रहा हूँ।
पढ़ाए पृष्ठ पढ़ गये। मध्याह्न में [illegible] .. [illegible] सम्यक रूप से ध्यान
कर रहा हूँ। कृष्णा [illegible] शर्मा -अधिवक्ता- आए थे उद्बोधक
[illegible] से प्राप्त एक कार्ड .. आरा से [illegible]
के पत्र भेजा। [illegible] शाम में [illegible] .. भोजन विश्राम किया ..
आज [illegible], [illegible] के [illegible] सिंह - मुजफ्फरपुर के
श्री [illegible] सिंह के [illegible] की भी सूचना मिली।
गाजीपुर के श्री [illegible] नारायण राय .. जो [illegible] साहब श्री
[illegible] की [illegible] में, [illegible] सहजानंद [illegible] में उनका
निवास गृह बनाये हैं - आज दो घंटो बैठे रहे।
उनके [illegible] के एक [illegible] राय [illegible] थे. वे [illegible] के
श्री [illegible] के भतीजे हैं .. श्री [illegible] के
[illegible] है। श्री [illegible] के [illegible] का विवाह-
श्री [illegible] जी [illegible] हुआ है। [illegible] के [illegible]
[illegible] .. पेट के [illegible] के कष्ट से [illegible] है, उनका [illegible]
होगा .. [illegible] को [illegible] है .. [illegible]
[illegible]। मेरी [illegible] कुछ [illegible] बातें [illegible] के बाद
श्री [illegible] राय और [illegible] राय वहीं [illegible]।

कर्तव्य-पालनकी सामग्री कभी किसीके पास अधूरी नहीं होती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः।२६।

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२९ — भद्रा (रात्रिमें १.४६ बजेसे)

आज प्रमोद कुमार ने [illegible] पन्द्रह सौ रुपये [illegible] मैंने [illegible] विभिन्न मदों के लिये [illegible] देकर उन्हीं लोगों को लौटा दिया।
२५०० रुपये श्री अन्नपूर्णा [illegible] की [illegible] रुपये उनकी दवा के मद में, साढ़े तीन सौ रुपये प्रमोद कुमार को [illegible] पचास-पचास रुपये [illegible] मैंने भी [illegible] की [illegible] दिये। शेष [illegible] उनकी दवा [illegible]। [illegible] में [illegible]।
श्री विनय कुमार [illegible] गये [illegible] है [illegible] सोमवार तक आयेंगे। [illegible] का [illegible] रुपये [illegible] मंगाया।
श्री प्रमोद कुमार - श्री अमिताभ [illegible] की [illegible] पाकर उन्होंने [illegible] के [illegible] के [illegible] संपूर्ण [illegible] श्री उन्होंने [illegible]। [illegible] में [illegible] हुई है। [illegible] हो सकते हैं। [illegible] के [illegible] और [illegible] ने [illegible] है [illegible] जो [illegible] के [illegible] है [illegible] श्री [illegible] में [illegible] हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः।२७।

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२८ — पूर्णिमा (भद्रा दिनमें २.१३ बजेतक), रक्षाबन्धन, श्रावणीकर्म (यज्ञोपवीत-पूजन)

आज बेंगलोर श्री सुरेन्द्र नाथ राय को पत्र लिखा। [illegible]
[illegible] के [illegible] के [illegible]
संबन्ध में [illegible]। [illegible]
लिखा। आज ही - [illegible] - श्री राम प्रवेश शास्त्री [illegible]
पूर्व [illegible] के [illegible], को पत्र लिखा। उनके [illegible] के [illegible] लिखा।
[illegible] - [illegible] से प्रकाशित।
[illegible] की पुस्तक - प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल
Political geography of India : B. C. Law की हिन्दी [illegible]
के लिए - [illegible] मिले तो
[illegible] के लिए लिखा।
आज [illegible] पर [illegible]: एक कार्ड लिखा और
श्री राम प्रसाद पाराडकर को भी [illegible]
[illegible] - उद्बोधक [illegible]। परन्तु राजेन्द्र [illegible]
[illegible] 6 E
[illegible]
को [illegible] के संबंध में लिखा। पूज्य पाद [illegible]
तीन [illegible] व्याख्यानों के हिन्दी अनुवाद [illegible]
के लिये लिखा कि उनकी [illegible] से [illegible] सफल हो।

विषयभोगोंमें अत्यन्त आसक्त लोग घोर नरकोंमें पड़ते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।२९।

सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२६

महाभारत मीमांसा ग्रन्थ का व्याख्यान चल रहा है।
महर्षि-सात्वतों भाष्य भी दस इच्छ प्रतिदिन पढ़ता हूँ।
कई पत्रादि लिख रहा। अभिलाष-त्रिपाठी प्रेषित कठोपनिषद् महत्त्व
की भूमिका में संशोधन परिष्कार कर रहा। प्रमोदकमल जी।
विद्यापीठ के पढ़ाने गये।

श्री मिथिलेशकुमार राय पर बहुत पाण्डेय गये। एक सप्ताह में
लौटेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।३०।

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२५ श्री प्रभुनारायण सिंहजी रईस · मेहताबपुर गये
पट-शिष्य · वीणा शेखर मलदहियाके पार्श्व-महादेव(?) के ... के
काशी हिंदू के चिकित्सालय में भर्ती हैं · प्रमोदकुमार मिश्र
देखने गये थे... ठीक हैं कल मुक्त होंगे।

श्री विश्वनाथ मनराद · रथ में गोरखपुर गये... उनसे देवताके
संत तुकाराम-जीकी जीवनलीला और भजन अध्ययन · नरेन्द्र ...
की लोगों से कहा। ... नहीं मेहताबपुर ...
मत दे लावेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।३१।

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२४ — कज्जली तृतीया, बहुलाव्रत, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

श्री [illegible] जी की [illegible] का निश्चित समाचार मिला।
श्री व्रजकिशोर शर्मा के घर [illegible] इच्छा का [illegible] मिला.. सम्भवतः कुछ
आशीर्वाद भी है. अतः उनकी [illegible] किया [illegible] फिर के
न जाने। [illegible] रहे हैं - उन्होंने स्वयं का आत्मसमर्पण
[illegible] है. रहते हैं. अलग होता है.. इससे तो [illegible]
भी इनको [illegible] - अन्नपूर्णा के आशीर्वाद कोई कुछ बता कहीं।
नहीं समझ पड़ता है। भगवत्कृपा से चल रहा है।
आज के [illegible] [illegible] सद्गुरुजी के जो [illegible] आनन्द - दर्शन के
उत्सुक हैं -
[illegible] भावना व्यक्त करते हुए संसार के [illegible] आये
हैं। उन्हें बहुविध [illegible] से प्रभावित हुए और [illegible]
कर [illegible].. हि० विश्वविद्यालय के [illegible] [illegible]
कहीं [illegible] मिलते हैं।
सायंकाल .. वेणीपुर के [illegible]
श्री [illegible] का गये। [illegible] आदि ले आये।

धर्मके निश्चयमें वेदवेत्ता एक ब्राह्मण भी प्रमाण है, किन्तु दस सहस्र मूर्ख नहीं!

स्व० श्रीमती [illegible] देवी
पत्नी - [illegible] खरवार - बड़ागांव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।३२।

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२३ शाम को श्री ब्रजकिशोर यदवुदे से थे, उन्हें समझाया कि उनकी पन्द्रह दिन टहलना गड़बैठ गए परिवार के आमोद-पढ़कर मिलने पैर उन्हें नहीं [illegible]। उन्होंने दो हजार रुपये खर्च हैं, उसका भी गुस्सा है। जितना ही आदर क्यों न किया जाय उन्हें धोखा, और पत्नी और गोदवाली मरीज का मोह जताता है। उस पत्नी को साथ रखकर रखने की व्यवस्था सम्भव नहीं।

प्रख्यात भौतिकी-विज्ञानवेत्ता डा० नंदलालसिंह का जन्मस्थान तथा काशी-निवास का पता:— मैं अपना संस्मरण-लिखने के क्रम में उनकी अलौकिक सारस्वत-साधना एवं भगवद्भक्ति की चर्चा करूँगा-इसीलिए महत्ता उनके परिवार से जानकर यहाँ लिखा जाता है:—

× × ×

स्व० डा० नंदलाल सिंह।
जन्मस्थान. ग्राम- खजुरहवाँ
तहसील- मड़ियाहू (मड़ियाहूँ)।
जि० जौनपुर।
पिता का नाम— स्व० बाबू अलख नारायण सिंह
गोत्र — गौतम
"वाराणसी में निवास-स्थान:"
नंद निवास- बी 30/67
नगवा रोड- लंका, वाराणसी।
दूरभाष— 366142 — 366567
परिवार- तीन पुत्र:— प्रथम— ब्रिगेडियर- ब्रिगेडियर
कैलाशपति नारायण सिंह।

द्वितीय - इन्जीनियर- अखिलेश नारायण सिंह वी एम-एन
तृतीय — डा० गिरीन्द्र नारायण सिंह
पत्नी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।३३।

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२२ — श्रीचन्द्रषष्ठीव्रत

रात में हो [illegible] पर थे, भोजन के बाद मुझे [illegible] सत्संग करते थे। धर्म की [illegible] सुनाते थे। पहले भी [illegible] कथा सुनते थे।

× × ×

"धर्मो नित्यः सुख-दुःखे त्वनित्ये,
जीवो नित्यस्तस्य हेतुस्त्वनित्यः॥"

× × ×

इस वाक्य में व्यास जी ने बतलाया है कि, धर्म के तत्त्व स्थिर और नित्य हैं। इन धर्मतत्त्वों के लिये सुख दुःख का विचार करना ही अनुचित है; क्योंकि जीव अथवा आत्मा [illegible] नित्य और अमर है। और उसका हेतु कर्म और शरीर [illegible] अनित्य तथा तुच्छ है। सारांश मनुष्य को चाहिये कि वह संसार में धर्म और नीति तत्त्वों की ओर ध्यान दे उसका ध्यान मनुष्य हानि या प्राण-हानि की ओर न रहे; सब कभी परमेश्वर को अधिकार धर्म तत्त्व की रक्षा करनी चाहिये" × ×

"हत्वापि स इमाँल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते॥"

× ×

गीता अत्यन्त धार्मिक ग्रंथों में से अध्यात्म का ग्रंथ एकमात्र है। अंत में श्रीकृष्ण के ही मुख से निकला है:—

"अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः॥"

सारांश यह है कि [illegible] सर्वदा गीता ग्रंथ का अध्ययन करना बहुत लाभदायक है।

'मुझे सुख कैसे मिले!'—केवल इसी चाहनाके कारण मनुष्य कर्तव्यच्युत और पतित हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।३४।

सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२१ — हलषष्ठी (ललहीछठ)

आज ब्रजकिशोर राय-राजापुर को एक लिफाफा जिसके अंदर सके छिड़ले. यह प्राप्त शिकायाली है। वे दरवाजा उनदेके दे गये - उनके पैसे धनादेश द्वारा (मनी-आर्डर) कमीशन छोड़कर उन्हें लौटा देंगे। मुजफ्फरपुर के डा० चन्द्रप्रकाश मिश्र, केन्द्रीय सरकार अर्थात्... को मकरन्द प्रेमचन्द उद्बोधक एक सैकड़ा पत्रिका देने के लिये प्रेषित किया। परशुराम के डा० कृष्णगोपाल राय तीन बजे आये। बहुत सी सत्संग की धार्मिक बातें होती रहीं। उन्हें राष्ट्र-साहित्य के प्रकाशक-प्रसारक भू.पा.श. [illegible] लिये 'किताब महल' का पता लिखाया।

× × ×

भीष्म-स्तवराज का वर्णन :- उद्धृत श्लोक :—
'पुण्य तथा अपुण्य दोनों की ही निवृत्ति होने पर जिन शान्तिप्राप्त संन्यासियों का पुनर्जन्म नहीं होता, उनका यह मद नष्ट हो गया है, वे जिस स्थान में प्रविष्ट होते हैं, उस मोक्षरूपी परमात्मा को नमस्कार है।

" अपुण्यपुण्योपरमे,
यं पुनर्भव निर्भयाः।
शान्ता संन्यासिनो यान्ति
तस्मै मोक्षात्मने नमः॥

यह उपनिषन्मत का ही उल्लेख है। यह उपनिषद् का तत्त्व है कि पाप और पुण्य के नष्ट हुये बिना मोक्ष नहीं मिलता। × ×

इस वाक्य में मुख्य बातें तीन हैं। पुण्य और अपुण्य की निवृत्ति, शान्ति और संन्यास। मालूम होता है कि यही वेदान्त का आधार है। इससे संन्यासमत का कुछ प्रभाव भीष्मस्तवराज में आया हुआ दिखाई देता है।

जो केवल दार्शनिक बातें सीख लेते हैं, उनका शोक दूर नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।३५।

सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२० — श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत

" अज्ञानरूपी घोर अन्धकार के उस पार रहनेवाले जगद्व्यापक जिस परमेश्वर का ज्ञान होने पर मोक्ष मिलता है, उस ब्रह्म रूपी परमेश्वर को नमस्कार है।"

× × ×

कर्म के तीन प्रकार कहे हैं। आत्मनिष्ठ साक्षात्कारी को शुभाशुभ कर्मों से बाधा नहीं होती। निष्काम कर्म करनेवाले का पाप शुभ कर्म से नष्ट हो जाता है। और काम्य कर्म करनेवाले को शुभाशुभ कर्मों के शुभाशुभ फल भोगने पड़ते हैं। मौन यानी परमात्मा की एक कल्पना विशेष्य है। पर यह उपनिषदों से ही निकली है।

उपनिषदों में :- " यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" कहा है। यह संज्ञा परमात्मा की है, क्यों कि वह मेरी मन से वहाँ नहीं पहुँच सकते। "

' ब्रह्म के चिन्तन के लिए जो मौन धारण करता है उसे मुनि कहते हैं और जिसे ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है वही श्रेष्ठ मुनि और वही ब्राह्मण है।"

× ×

गुरु के हृदय में घुसकर विद्या प्राप्त करनी चाहिए, विद्या चतुष्पदी है, और उसका एक पाद गुरु से मिलता है, दूसरा पाद शिष्य अपनी बुद्धि के बल से प्राप्त करता है, तीसरा पाद बुद्धि के परिपक्व होने पर कालगति से मिलता है और चौथा पाद सहाध्यायी के साथ तत्त्वचिन्तनों की चर्चा करने से मिलता है।"

× ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः।३६।

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९ | श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव) मतान्तरसे

भगवद्गीता का सम्पूर्ण ग्रंथ एक ही बुद्धिमान व्यक्ति के प्रतिभासम्पन्न मस्तिष्क की उपज है, और यह ताजमहल की अनुपम इमारत के समान सुन्दर सुसंबद्ध तथा विशाल कल्पना से परिपूर्ण और सम्मुख उपस्थित है। इसमें न तो कहीं मिलावट है न कहीं जोड़ है न पीछे से शामिल किया हुआ कोई भाग है।

“न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह” यह इसकी नींव है; विश्वरूप दर्शन इसका मध्यभाग है और “करिष्ये वचनं तव” इसका शिखर है। सांख्य, योग, वेदान्त और भक्ति उसकी चार भुजायें हैं। कर्मयोग उसके बीच का मीनार है। भिन्न भिन्न चार तत्त्वज्ञानों के अक्षर संगमरमर की चारों दीवारोंपर रंगीन संगमर्मर के पत्थरों से खुदे हुए हैं और इसके चारों दरवाजों के अन्दर मध्य स्थान में परब्रह्म स्थित है।”

इस प्रकार दिव्यतत्त्वज्ञानात्मक ग्रंथ की अलौकिक सुन्दरता इन सब लोगों को चकित कर देती है।

जिनको कर्तव्य–पालनका अवसर प्राप्त हुआ है, उनको बड़ा भाग्यशाली मानना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्।३७।

मूर्यां० ५।३५, सूर्यां० ६।१८

प्रमोद कुमार दीक्षित नहीं आये। पैसे की भी व्यवस्था नहीं हो पाती। [illegible] के खाते से कुछ पैसे निकालने थे, उनके अभाव में यह कार्य भी नहीं हो पाता। मन उदास तथा खिन्न है। पुस्तकें पढ़ना तथा इधर-उधर पत्रादि लिखने में मन को बहलाता हूँ। कभी बहुत [illegible] होता हूँ। प्रमोद कुमार के रहते सभी तरह की सुविधायें एवं सेवा प्राप्त होती रहती है और तो जीवन मानो [illegible] हो जाता है। रात में खड्गधारी शर्मा सहसा आ गये। उनसे कुशल-समाचार हुआ। आधा दर्जन केला ले आये। रात में केला दूध भोजन हुआ। किन्तु केला दूध कफकारक सिद्ध हुआ। श्री [illegible] शर्मा [illegible] के चक्कर में पड़े हैं। श्री प्रमोद कुमार की अनुपस्थिति में उनका भी आना नहीं हो पाता।

× × ×

आज फिर से सत्तू-रोटी-भोजन किया। खड्गधारी शर्मा से जेब खर्च के लिये कुछ पैसे मांगे किन्तु वे प्रातः ही सहसा चले गये।

× × ×

अपनी जीवन-संघर्ष का कुछ संस्मरण लिखना चाहता हूँ, तथा अपनी जन्मभूमि की कुछ कथा- पारलौकिक इतिहास- अपने परिवार का इतिहास लिख देना चाहता हूँ। सभी महात्माओं ने लिखे हैं। श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती ने भी "मेरा जीवन संघर्ष", तथा [illegible] - मेरी जीवन कथा [illegible] मेरी-आत्मकथा- पं० [illegible] ने भी लिखी है। के० एम० [illegible] ने भी अपनी [illegible] गाथा लिखी है। गांधी जी की आत्मकथा- सत्य की परीक्षा- Experiment of Truth मशहूर ही है।

मनुष्योंको ही कर्म करनेकी स्वतन्त्रता मिली हुई है; अतः उन्हें इस स्वतन्त्रताका सदुपयोग करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप। ३८।

सूर्यो० ५। ३६, सूर्या० ६। १६

** ३३ देवता **

तैंतीस देवता की गणना महाभारत में भिन्न भिन्न है। ८ वसु, ग्यारह रुद्र, द्वादस आदित्य, इन्द्र और प्रजापति ये नाम बृहदारण्यक उपनिषद में है और उसी में कहा है कि वैसे देवता तो अनन्त है, यह उनकी एक महिमा है।

महाभारत में अनुशासनपर्व के १५० वें अध्याय में ३३ देवताओं की गिनती इस प्रकार बतलाई है — ८ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य और दो अश्विन।

ग्यारह रुद्र ये हैं — १- अजैकपाद, २- अहिर्बुध्न्य, ३- पिनाकी, ४- अपराजित, ५- ऋत, ६- पितृरूप, ७- त्र्यंबक, ८- महेश्वर, ९- वृषाकपि, १०- शंभु और ११- हवन।

बारह आदित्य ये हैं — १- अंश, २- भग, ३- मित्र, ४- वरुण, ५- धाता, ६- अर्यमा, ७- जयन्त, ८- भास्कर, ९- त्वष्टा, १०- पूषन, ११- इन्द्र और १२- विष्णु।

आठ वसु इस प्रकार है — १- धर, २- ध्रुव, ३- सोम, ४- सवित्र, ५- अनिल, ६- अनल [redacted] ७- प्रत्यूष, ८- प्रभास। दोनो अश्विन नासत्य और दस्र है।

** शिव और विष्णु **

भारतीय काल में इन देवताओं के संबंध में दो सम्प्रदाय के दो पंथ भी [redacted] उपस्थित हुए जिनकी संज्ञा पाशुपत और पांचरात्र है।

ब्राह्मण-काल की भांति दशोपनिषद्-काल में भी विष्णु समस्त देवताओं में श्रेष्ठ माने जाते थे।

वास्तविक उद्देश्य—कल्याणकी जागृति तभी होती है, जब मनुष्य अपनी वर्तमान स्थितिसे असन्तुष्ट हो जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते। ३९।

सूर्यो० ५। ३६, सूर्यां० ६। १५ — जया एकादशीव्रत

आज प्रातः ६ बजे तक प्रमोद जी जैसे [illegible] अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मेरा कष्ट [illegible] में नहीं है। [illegible] के [illegible] में [illegible] कोई मेरो के लिये [illegible] कुछ पैसे [illegible] की व्यवस्था कीजिए। आज [illegible] के श्री [illegible] कुमार [illegible] वापस [illegible] उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।
श्री [illegible] शर्मा, बेनीपुर [illegible] और। [illegible] में [illegible] के लिये ले आये।
श्री [illegible] शर्मा, [illegible] [illegible] संकेत किया कि [illegible] राम। [illegible] के [illegible] गुरुजी [illegible] अपना [illegible] से। यह [illegible] है।

" विवेकयुक्त जीवन ही मानव जीवन है। बल को विवेक के अधीन हो रहना चाहिये। इससे व्यक्ति का [illegible] कल्याण और सुन्दर समाज का निर्माण होता है।"

× × ×

प्रत्येक व्यक्ति का अपने ढंग से [illegible] अस्तित्व है। [illegible] ठीक-ठीक बोध हो जाने पर अनेकता में एकता का स्पष्ट दर्शन होता है। सेवा त्याग और प्रेम मानवता के प्रतीक हैं।
संघर्ष और अशान्ति अमानवता के प्रतीक हैं। [illegible] में ही पूर्णता निहित है। सेवा अर्थात् [illegible] से ही मानव जीवन [illegible] के उपयोगी होता है। त्याग अर्थात् ममता [illegible] रहित होने से जीवन अपने लिए उपयोगी होता है। और प्रेम [illegible] प्रभु को अपना [illegible] उपयोगी होता है।

दूसरेका कर्तव्य देखना तथा अपना अधिकार जमाना लोक और परलोकमें महान् पतन करनेवाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१४ प्रदोषव्रत

"सप्तर्षि"

वशिष्ठ, कश्यप, भरद्वाज गौतम, विश्वामित्र और अत्रि का उल्लेख ऋग्वेद [redacted] सूक्त में आया है और ये सब ऋग्वेद सूक्तों के कर्ता हैं। × × नरेन्द्र कुमार रात में आये, उनकी माता भी किसी मतलब से आईं। दस बजे विवेकानंद पुत्र शारदानन्द गाँव से संदेश लेकर आये कि [illegible] में मारपीट हुई है। नारायण को कुछ चोट आई है फलतः प्रमोदकुमार हरेराम आदि सभी तत्काल चले गये। × × [illegible] बैंक [illegible] खोलने [illegible] [illegible]। अन्नपूर्णा देवी को दवा तथा [illegible] मठ में [illegible] दे दिया। [illegible] भी दे दिया। [illegible] हैं। [illegible] की राय है कि उनकी दीक्षा यहीं तत्काल मठ में "स्वामीजी" [illegible] [illegible] हैं। [illegible] ××

× × रात में आठ बजे भी [illegible] राय [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] रात में [illegible] वर्षा हुई। [illegible] रहता है। [illegible] भी साथ रहे। [illegible] [illegible] प्रमोदकुमार के [illegible] अड़चने आ जाती हैं। [illegible]

एक-दूसरेका हित करना मनुष्योंका कर्तव्य है।

[illegible] ब्रह्मर्षि वंश भाग २ [illegible] [illegible] में [illegible] बाकी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।४१।

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१३ आज प्रातः सच्चा गुलाब के वार्ष्णेय पुत्र-
ज्ञानदेव आ गये। साथ में उनकी माता जी भी थीं। केला आदि
फल ले आये। कौशिक की एकादशी शिला देखा - जिसमें उनके
पांच [illegible] देवी भी थी तथा [illegible] आदि को भी विशेष पान देने भी
चाहिये। आज श्यामाचरण तथा उनके पुत्र - नगर [illegible] अपने
मकान पर गये। दिन में दूध-केला भोजन किया। २.५०. रु० = ढाई ढाई रुपये
मैत्रेयी-गार्गी को जलपान के लिये दिया। दो रुपये सावित्री को दिया।
घरवाले की एक काली [illegible] भी [illegible] गया था। तीन
गौ [illegible] गया।

अपने सुख-आरामका त्याग करनेमें विवेककी प्रधानता होनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।४२।

सूर्यो० ५।३७, सूर्यां० ६।१२ कुशोत्पाटिनी अमावास्या (मध्याह्नव्यापिनी)

विनयकुमार शर्मा - जौनपुर - विश्वविद्यालय - प्रकाशन के उक्त वासुदेव शरण-अग्रवाल की पुस्तक 'भारत सावित्री' के दो भाग लेकर आये। उसमें उनकी [illegible] सं. [illegible] प्रथम भाग में, भूमिका के पृष्ठ दिये नहीं। तीसरा खण्ड भी नहीं मिला। पंडित पुस्तक लेने की आवश्यकता ही क्या थी? सायंकाल पं. मुरलीधर शर्मा आये। विचार विमर्श हुआ। उनके द्वारा दम्पती को [illegible] तथा भोजपुरी की प्रकाशित पुस्तकें "लोकभाषा भोजपुरी की ऐतिहासिक उपयोगिता" पुस्तक के मुद्रण प्रकाशन की भी बातें तय हुईं। उसका पूर्व भाग डा० कवीन्द्रनारायण राय सचिव - प्राध्यापक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय देंगे - पुस्तक में उनके विचार देखने से भी पूर्णानन्द का [illegible] लगेगा। तथा प्रकाशकीय वक्तव्य में श्री प्रमोद जी के द्वारा - स्वामी पूर्णानन्द [illegible] एवं [illegible] का कुछ इतिहास रहेगा। विनयकुमार [illegible] सेन [illegible] में लगाया। [illegible] किया [illegible] जलपान करें।

आज अपराह्न [illegible] के श्री रामविलासराय श्री [illegible] शिक्षक [illegible] का एक संवादपत्र [illegible] और [illegible] आदि के मार्मिक उद्बोधक [illegible] संकलित [illegible] में [illegible] - पं० मुरलीधर शर्मा द्वारा पहुँचाया।

'ॐ हुँ फट्' कहकर उखाड़े गये कुश वर्षभर काम देते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।४३।

सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।११ — कुशोत्पाटिनी अमावास्या

आज पं० रामनरेश पाण्डेय को उनके रामपट्टी - सिकरौरे के पते पर एक पोस्टकार्ड पत्र लिखा। [illegible] आश्रम की [illegible] के लिये [illegible] काशी की [illegible] के लिये [illegible] देने को [illegible] के [illegible] ये [illegible] पूजास्वरूप दे गये। दिन में [illegible] किया तथा एक [illegible] किया [illegible]। एक लिफाफा दो पोस्टकार्ड मंगाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।४५।

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।९ — हरितालिकाव्रत

आरा के प्राध्यापक दिनेशराम [redacted] पीएच देवकी एम. थीसिस लेकर सांगवेद आनन्द हुई है। उनके साथ उनका राजपुत्र है जो हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ता है. उन्होंने उसके लिये सुन्दरपुरी कृष्णगोपाल जी के बगल में कोई मकान ग्रहण कर चुके हैं। पर मकान मालिक परेशान कर रहा है। तब तक उनका लड़का एक सप्ताह यहीं रहेगा। उसका भोजन स्वतंत्र होगा।

उन्होंने मेरे संकलन महागाथा भीमांसा प्राप्त कर स्वाध्याय की इच्छा व्यक्त की है। मैंने उन्हें मालवीय ज्योति तीन भाग डा० बाबूराम सक्सेना की शोधपत्रिका भी वैदिक स्वाध्याय के लिये प्रदान किया।

× × × ×

आज श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने व्रत रखकर विधिवत् पूजा किया। हरितालिका व्रत कथा सुना।

पड्यालके की भूमिका में जोड़ने वाले संशोधित अंश निदेशक उच्च शिक्षा संस्थान के शिक्षा निदेशक के पास डा० ओमप्रकाश त्रिपाठी द्वारा प्रेमशीलवती त्रिपाठी द्वारा भेज दिया गया। श्री प्रमोद कुमार दीक्षित द्वारा।

सेवा करनेवाला व्यक्ति सेव्यकी वस्तु ही सेव्यको देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते।४६।

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।८ श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध)

आज बैंकसे (यूनियनबैंक, भेलूपुर शाखा) से पचहत्तर हजार ले पाण्डेय जी से चेक डलवाया। चालीस हजार आनन्द आश्रम के लिये दिया। उन्होंने चेक पत्रकार-पत्र ग्राम-प्रतिनिधि का दिया। मिश्राजी ने शशिशेखर पाण्डेय को सम्पादक नियुक्त किया। शशिशेखर कुछ प्रकाश किया तथा ब्राह्मण सौभाग्य पत्रिका के अतिरिक्त सहित पत्र पत्रिका प्रकाशित करने के लिये अनुरोध या निवेदन किया। लिफाफा पोस्टकार्ड मंगाया।

" लोकनाथ भोजपुरी की ऐतिहासिक उपन्यास पत्रिका दयानन्द के यहाँ छपेगी। आगामी कविता संग्रह राय से देने को कहा है। पाण्डुलिपि तैयार है। प्रकाशक स्वामी पूर्णिमा सरस्वती का चित्र मुखपृष्ठ पर रहेगा। प्रमोद कुमार दीक्षित का प्रकाशकीय वक्तव्य रहेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।४७।

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।७ — ऋषिपञ्चमीव्रत

रसगुल्ला ·१० ग्राम सामिग्री आदि लो। साबुन [illegible] [illegible] ·चीनी ४·५८ की एक पाव मंगाया।
श्री [illegible] [illegible] आध्यात्मिक सेव आदि ले आये। वे सपत्नीक काशी किसी प्रयोजनवश आये हैं रहे हैं।

दिलकी आगको निःस्वार्थ प्रेमसे बुझाकर शान्त कर लीजिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर।४८।

सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।६ — लोलार्कषष्ठी

आज श्रीवामन त्रिपाठी शर्मा कृतपुत्र तपोनिधि आनन्द
वनसे गाजीपुर होते कोटवा गंगापार चले गये। उन्होंने इक्यावन
रुपये पूजा स्वरूप दिये। पांच रुपये का लिफाफा मंगाया।
पन्द्रह रुपये मैत्रेयी, गार्गी, सावित्री को लोलार्क मेले के लिये
दिया। बनारस के सुदेव त्रिपाठी, तपोवन त्रिपाठी, कालिदास त्रिपाठी
समाधान त्रिपाठी को - अधिवक्ता सुदेव त्रिपाठी के माध्यम से एक
कार्ड तथा लिफाफे में एक लेख अध्यापक विशारद पद
लिख भेजा। बहुत का मन लगता - अन्यमनस्क आगया।
बहुमती विद्यापीठ में पढ़ाई - सुरेन्द्र शर्मा सन्निधानीय कृष्ण
[illegible] के [illegible] रहता है। कल्याण मासिक नहीं
आया। x x

सकाम भक्तिमें भी अनन्यताका होना आवश्यक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।५०।

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।३ — श्रीराधाष्टमी, महर्षि दधीचि-जयन्ती

आज पं० सुरेश जी अभी नहीं आये। वे कल भी नहीं आयेंगे। दूसरी सूचना मिली कि 'मानस सांदर्भिकी' पुस्तक के प्रथम एवं तृतीय खण्ड के अभी नहीं आने की सूचना प्राप्त हुई। दूध

श्री शिव शङ्कर राय के नाम पत्र के जय में भगवत्तं ... परिवार को सम्बोधित करते हुए ... चौ० ... राम की मनोकामना की पूर्ति तथा उनके उज्ज्वल ... मर्यादा ... उत्पन्न होकर ... देकर ... पिण्डदान देने ... का निमन्त्रण किया जायगा। मेरे भाई के विवाह

पहला विवाह ... के यहाँ हुआ। पंडित गिरीश ... सिंह के यहाँ ... में ... के यहाँ ... का ... जो वर्तमान हैं। मेरे भाई ने चारों लड़कियों का विवाह इनको ... कुलीन परिवारों में किया। ... के यहाँ ... हैं।

इनसे पूर्व दो विवाह ... में ... राजेन्द्र राम के ... हैं। ... पुर किया जो ... हैं। ... मर्यादा की ... हैं। x x

अपने कर्तव्यका ठीक-ठीक पालन करनेवाले मनुष्यके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टिका स्वतः हित होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।५१।

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः।५२।

सूर्यो० ५।४१, सूर्यां० ६।२ — महारविवारव्रत

आज बरवां के प्रभुनाथ तिवारी मठ में आये और श्रद्धापूर्वक उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। उनकी पत्नी एवं एक पुत्र साथ था.... मैं आकस्मात [illegible] चले गये हैं।

संसारमें प्रीति, तृप्ति और संतुष्टि कभी स्थायी नहीं रह सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा।५३।
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन। ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप।५४।

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१

आज [illegible] मंत्रीके पास - श्री [illegible] के [illegible] - [illegible] के [illegible] के यहां [illegible] को [illegible] के बाद [illegible] - श्री राजेन्द्र शर्माके [illegible] के लिये गया - विस्तृत बातें हुईं। [illegible] हो गयी। [illegible] का आश्वासन मिला। [illegible] दस्तावेज में प्रबन्ध समिति के [illegible] को "[illegible]" के रूप में जोड़कर [illegible] के संबंध में भी बातें हुईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।५५।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः।११।

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।०० — पद्मा एकादशीव्रत, श्रीविश्वकर्मा-पूजा

आज एकादशी व्रत दिन में आलू एवं [illegible] सेवन
रात में कुट्टू की पूड़ी में लेकर व्रत ग्रहण किया।
विश्वकर्मा के लोग पूजन कर रहे हैं। [illegible] लोगों के
मध्य में .. [illegible] मैंने भी आज ले लिये।

क्रोध और दीनतासे दूर रहनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते। ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।१।

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते। श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।२।

सूर्यो० ५।४२, सूर्यां० ५।५८ — **श्रीवामन द्वादशीव्रत, प्रदोषव्रत**

पैट्रिक का काम चल रहा है। प्रभाकरजी का [illegible] - [illegible]
[illegible] नीरज [illegible] एल. [illegible] [illegible] [illegible] बताने की
उस [illegible] [illegible] का समाचार दिया जायेगा। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] में होंगे।
[illegible] 'मोक्षमुक्ति' की [illegible] [illegible] के [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] उसके [illegible] की [illegible] [illegible] होगी।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ।३।
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ।४।

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५७

आज यह जानकर कि "शास्त्र सिद्धान्त एवं धर्माचार्य ब्राह्मण" एवं "धर्मशास्त्र चिकित्सा" आदि ग्रन्थों का पुनः संशोधन अनन्त प्रमोदकुमार दीक्षित के प्रमाद से ठीक नहीं लिखा जा सका है। मुझे उनकी तनिक में पड़ा है। मैंने नाहक श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा को तथा बाबा श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा को उनके लिए लगातार पत्र कहे भेजे। पर कहने से मामला फँसेगा। जो जानते हैं कि उनकी गलती पकड़ी जायेगी वे। जो कुछ हो रहा है, वह भी नहीं होगा।
मन्त्रपरीक्षा वर्षों से जो व्यक्ति अनिरुद्ध मणि लाल मेरी सेवा में तथा मठ की प्रबन्ध व्यवस्था में समर्पित हैं, उनकी ईमानदारी उचित नहीं।
कार्यभार से निवृत्ति की भूलें होती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते। ५।
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते। ६।

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५६ — श्रीअनन्त चतुर्दशीव्रत, व्रत-पूर्णिमा

आज [illegible] होने से [illegible] उतारा।
खर्च के लिये कुछ नहीं था। [illegible] के बकाया
दिये थे। अन्नपूर्णा को दो सौ पचास रुपये दिया। पचास रुपया
बकाया [illegible] मद में। दो सौ अनन्त के पूजा पुड़ी-कचौड़ी पकौड़े
के लिये दिये थे। प्रमोद कुमार दीक्षित के तथा अखण्ड-
[illegible] पत्रों में लेखा। शेष दो सौ
अपने पास आवश्यक व्यय के लिये रखा।
सायंकाल पूआ पूड़ी तरकारी कढ़ी समेत भोजन किया।

× * *

श्री [illegible] तिवारी की पत्नी [illegible] सहसा आ गयीं। [illegible]
पढ़ने को ले गयीं × * *

श्री [illegible] ने [illegible] दे दिये। [illegible]
आदि श्रीकृष्ण [illegible]
[illegible] श्री [illegible] शर्मा "[illegible] के नाम" दोनों पत्रिकाओं में
पढ़ कर देने को दिया।

अहिंसा परम धर्म है, और अहिंसा ही परम तप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।७।
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।८।

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५५ पूर्णिमा, महालयारम्भ, पूर्णिमा-श्राद्ध

प्रातः नव बजे श्री. [illegible] जी [illegible] एवं
प्रिंसि.. मनीराम.. सहसा आ गये। रामायतन के चारे [illegible] को पे
मोट (लम्फिक्ड डिपॉजिट) से छूटेंगी कह लोगों जो यहाँ कम्प्यूटर की
शिक्षा लेकर किसी कम्प्यूटर-प्रशिक्षण विभाग में काम कर रहे हैं,
आयोजित होना था लगा है. वे एकादिक में [illegible] जाने
लगेगा। [illegible] सकती। [illegible]।
इनका आगमन- भोजनादि सम्पन्न हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् । अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय। ९।
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव । मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि। १०।

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५४ —— प्रतिपदा-श्राद्ध ——

रात में रोटी-घी-गुड़ भोजन किया। दूध मगाया पावपाव दो पाव दूध रात में पीपठ्पूर्ण के साथ ग्रहण किया।
चिनगने ललौवे में तेल की मालिश की। शिवानंद गौर में कुप्पर चले गये। मिथिलेश अभी अपने कार्य में लगे रहे हैं।

त्यागीका बाना धारण करके भी जो परमुखापेक्षी बना रहता है, वह तो कुत्तेके समान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः। सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।११।
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।१२।

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५१ द्वितीया-श्राद्ध

आज डा० सुनीति कुमार चटर्जी के मूल-अंग्रेजी ग्रन्थ उनके मौलिक अनुवाद की मैन्युस्क्रिप्ट प्रति देखा गया। कलम कागज-स्याही की शीतल काया पाकर पन्नों। दस हजार से भी ज्यादा कितने की जो कारण! क्योंकि मालेन को दूर गया प्रमोद कुमार दीक्षित ने ढूंढ लाया था। वे आदमियों का ध्यान रखते हैं। इसी के बाद भी तरह उनके जीवनी काल में सामंजस्य नहीं रहता। उनके गये ले कोई खोज बौद्ध संस्कृति उनकी पुस्तकें प्राप्त होने की मात्रा नहीं।
'[illegible] कड टेड, राइ' उपन्यास की भूमिका - प्रकाशकीय वक्तव्य की प्रमोद कुमार दीक्षित के नाम लिखकर भेजा किया। प्रमोद कुमार के लिये सौंप दिया और उनके मानते उनकी ओर से प्रकाशित होगा। भूमिका - भोजपुरी में लिखा लीग भी!" लोकभाषा भोजपुरी की "ऐतिहासिक-उपादेयता" पुस्तक के परिशिष्ट में डा० चटर्जी की चिट्ठी एवं उसका अनुवाद भी प्रकाशित किया जायेगा।
x जहाँ अधर्म धर्म का रूप धारण कर लेता है वहाँ फिर धर्म अधर्म जैसा दिखाई देता है।
मेरी तो वृत्ति ऐसी है कि पृथ्वी के धन को, देवलोक, प्रजापतिलोक या ब्रह्मलोक के धन को अधर्म से नहीं चाहता"
'संजययान' प्रकरण में युधिष्ठिर के वचन।
कृष्ण द्वारा संजय को उत्तर :→
" युधिष्ठिर ने कृष्ण को संजय के सामने धर्म और कर्म के तारतम्य की व्याख्या करने के लिए आग्रह किया :—
कृष्ण की ओर से संजय के सामने बहुत ही सुन्दर मीमांसा की गई है। "हे संजय मैं तो सबके लिये शान्ति चाहता हूँ। पर जहाँ धृतराष्ट्र और दुर्योधन जैसे गिद्ध हैं, वहाँ युद्ध क्योंन छिड़ जाय? कर्म और विद्या, इन दो के विषय में मैं प्रशस्ति

जो संसारके समस्त प्राणियोंके हितका साधक हो, उसे ही धर्म समझना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी।१३।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।१४।

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५१ — तृतीया-श्राद्ध

~~ब्राह्मणों के भिन्न-भिन्न मत हैं। कोई कर्म से सिद्धि, कोई विद्या से सिद्धि (ज्ञान से) कहते हैं। कैसा भी विद्वान ज्ञानी हो, बिना खाये उसकी भूख नहीं मिटती। बुझती।~~

~~जो ज्ञान कर्म को साधता है, उसी का फल है, दूसरे का नहीं। यहाँ तो कर्म का ही फल दिखाई देता है। जल पीने से ही प्यासे की प्यास बुझती है, मिटती है।~~

~~जो कर्म का त्याग ठीक समझता है, उस निर्बल का लप-लप करना व्यर्थ है (नान्यत्र योऽन्यत्र कर्मणः साधु मन्ये ... तस्य त्यजति कुर्वीत सः) कर्म से ही देवता चमक रहे हैं। कर्म से ही वायु बह रही है। सूर्य तन्द्रा रहित कर्म से ही नित्य उदय होकर दिन और रात का विभाग कर रहा है। चन्द्रमा बिना आलस्य के नक्षत्रों से सम्पर्क करके सिद्ध करके मास और अर्धमास बना रहे हैं। अग्नि बिना तन्द्रा के प्रज्वलित रहते हुए प्रजाओं के लिये कार्य कर रहे हैं। देवी पृथ्वी बिना तन्द्रा के अपने बल से इस भारी बोझ को ढो रही है। नदियां बिना तन्द्रा के जल का प्रवाह करती हैं। बिना तन्द्रा के मेघ अन्तरिक्ष और द्युलोक को अपनी गंभीर ध्वनि से गुंजाते हुए जल बरसाते हैं। देवराज इन्द्र ने बिना तन्द्रा के ब्रह्मचर्य का पालन करके देवताओं में श्रेष्ठता पाई। सुख और मन की प्रिय इच्छाओं को रोककर स्वधर्म और दम के प्रमाद रहित पालन से देवराज इन्द्र ने आधिपत्य प्राप्त किया। बृहस्पति ने नियम और इन्द्रियों को रोककर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। इसीलिये उन्हें देवों में गौरव मिला। जितने देव और मुनि हैं, वे ब्रह्मचर्य से ही तप, ज्ञान और कर्म का सेवन करते हुए तेजस्वी बनते हैं।~~

सुख चाहते हो तो सुख दो।

हे संजय, सब लोकों के लिये इस सनातन नियम को जानते हुए भी क्यों तुम कौरवों के ही पक्ष में खिंच रहे हो। यदि कौरवों के आश्रित किये बिना कोई सफलता का उपाय पाण्डवों के →

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।१५।
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।१६।

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५० — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चतुर्थी-श्राद्ध

इसप्रकार तो धर्म की रक्षा हो जाती और इन्हें पुण्य मिलता।
यदि यथाशक्ति स्वकर्म करते हुए उन्हें दैववश मृत्यु का भी
सामना करना पड़ता तो उनका मरण भी श्रेयस्कर है। क्या तुम यह
जानते हो कि धर्मतंत्र युद्ध से स्थिर रहता है या तुम्हारा यही
विचार है कि युद्ध करने से धर्मतंत्र बनता है? तुम्हारी बात मुझे
कुछ गोलमोल जान पड़ती है। यदि कोई दूसरे की भूमि बलपूर्वक
लेना चाहता है तो युद्ध [illegible] अवश्य होगा।
इसीलिये कवच, शस्त्र और धनुष उत्पन्न हुये हैं। इन्द्र ने दस्युओं
के वध के लिये ही इन वस्तुओं को बनाया है। हे संजय, कौरवों से
जाकर कहना कि ऐसे युद्ध में हमारा वध भी राज्य से अच्छा होगा।
कौरवों ने जब द्रौपदी को सभा के बीच बुलवाया तब किसी ने
धर्म की रक्षा नहीं की। उस समय कर्ण ने अर्जुन के हृदय में जो
नुकीला वाग्बाण मारा था वह आज भी छिदा हुआ है। यदि आज
स्वयं मेरे भी हस्तिनापुर चलने की भी आवश्यकता हो तो मैं
हस्तिनापुर चल सकता हूँ। पाण्डवों का उद्देश्य छोड़े बिना, यदि
शान्ति करा सकूँ तो यह मेरा पुण्य होगा और मैं समझूँगा कि हमने
अच्छा काम हुआ। दुर्योधन क्रोध का महावृक्ष है, कर्ण उसका
तना, शकुनि उसकी शाखा है, दुःशासन फूल-फल है पर इसकी
जड़ निर्बुद्धि धृतराष्ट्र को ही मानना होगा। अथवा राजा
धृतराष्ट्र और उसके पुत्र भारी वन के समान हैं। पाण्डव उसमें रहनेवाले
व्याघ्र हैं। हे संजय ऐसा होना चाहिये कि वन और व्याघ्र नाश न हों।
वन न रहे तो व्याघ्र मारे ही हुए हैं। व्याघ्र न रहे तो वन कटा जैसा है।
इसलिये व्याघ्र वन की रक्षा करे और वन व्याघ्र का पालन करे यही
उचित है। पाण्डवों को हिमालय की तराई में खड़े हुए शाल वृक्ष
समझो। कौरव उन मालामय लताओं के समान हैं जो ऊँचे चढ़कर
उन वृक्षों को छोड़ते हैं। [illegible]

प्राणिमात्रको अपने पुत्रके समान समझे।

पाली, पाण्डव शुश्रूषा और युद्ध दोनों के लिए तैयार हैं। "राजन् को
उचित समझें करें।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः।१२।

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४८ — **षष्ठी-श्राद्ध**

आज पटना एक्सप्रेस से अत्यन्त कष्टपूर्वक सायंकाल- रांची पहुँचा। टेम्पू से श्री कृष्णबिहारी शर्मा के आवास पर पहुँचकर विश्राम किया... आत्मीय शर्माजी एवं उनके सम्पूर्ण परिवार ने [illegible] प्रदान की। सर्दी बुखार से पीड़ित हो [illegible] बहुत और कष्ट बढ़ गया। दवा [illegible] करवटें बदलता रहा। विश्राम किया- कल का [illegible] है। बुखार और देह में दर्द।

दूसरोंको सुख–आराम पहुँचानेमें 'सेवाभाव' की प्रधानता होनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।१।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत। क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।२।

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४७ —— सप्तमी-श्राद्ध ——

आज टेलिफोन में डा० रामकिशोर की [illegible] की सूचना
मिला। वे सुल्तान गये। वह बड़े परशु की अपनी कार्यक्षमता।
उन्होंने स्वयं बैठे देखा दवा मंगायी। दवाई उन्हें दोही
लगा। दूध लाया एक दो रोटी भोजन कर लिया।
श्री प्रमोदकुमार दीक्षित .. भारतेन्दु पब्लिक स्कूल [illegible] में अपना
[illegible] का आवेदन जमा करके निश्चिन्त हुए। मेरा आदि[illegible]
में दूसरे किसी [illegible] इसमें [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् । स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु । ३ ।
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः । ४ ।

सूर्यो० ५ । ४७, सूर्या० ५ । ४६ — **अष्टमी-श्राद्ध, जीवत्पुत्रिकाव्रत**

आज पुनः श्री राधाकिशोर राय उनके बड़े भाई राजा राम राय के साथ प्रा० दास वकील के आये। दीदी के घर रहे सम्भाषण किया। पुनः दवा मांगा थी। ये भी दूर किये एवं कष्ट [illegible]। ये लोग मठ में आकर पधारेंगे। [illegible] मठ में [illegible] किये।।
अब ध्यान के प्रभाव से शरीर का आलस्य दूर हो रहा काम की थकान आराम [illegible] किन्तु काम [illegible] से कमजोरी मालूम होती है।

अपने-अपने कर्तव्यका पालन करनेसे स्वतः एक-दूसरेकी उन्नति होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च। इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः।५।
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतना धृतिः। एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्।६।

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ५।४५ — नवमी-श्राद्ध —

प्रातः डा० ओमप्रकाश तिवारी - [illegible] आयोग के भी
[illegible] मिले दवा लिख दिया - प्रातः उनका लड़का भी जो
रूस से डाक्टरी पढ़कर आया है दवा लेकर आयेगा।
आज भी [illegible] शर्माजी के यहाँ रहे। भोजन किया।
यहाँ लोगों ने भी शर्माजी के एक [illegible] सबों को
[illegible] में [illegible] होते [illegible]
किया। "शाश्वत वैदिक एवं पौराणिक प्रसंग" [illegible] को मा
समर्पित पुस्तक उन लोगों को नहीं पहुँचा था। अब प्रत्येक को मा
[illegible] ने [illegible] पुस्तक दे दिया। [illegible] सम्पादन [illegible]
मुझे प्राप्त होगी। ऐसी आशा है, पूर्ण विश्वास है।

साधकको इस बातसे कुछ भी प्रयोजन नहीं रखना चाहिये कि दूसरे क्या करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति। १३।
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् । असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च। १४।

सूर्यो० ५।५०, सूर्यां० ५।४१ — त्रयोदशी-श्राद्ध, प्रदोषव्रत

आज पवन-एक्सप्रेस से राँची से [illegible] होते रात्रि [illegible] उतरे। वहाँ से ऑटो द्वारा, [illegible] [illegible] मठ में पहुँचा। [illegible] ने आकर फाटक खोला। विश्राम किया।

माता [illegible] उनका कृष्ण बिहारी [illegible] से "[illegible]" तथा "[illegible]" [illegible] इतिहास) [illegible] में [illegible] हो [illegible]।

[illegible] प्राप्त हुए प्रत्येक [illegible] दिया [illegible] में [illegible]।

सिद्ध महापुरुषमें कोई अभाव होता ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्। १५।
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च। १६।

सूर्यो० ५।५०, सूर्यां० ५।४० — चतुर्दशी-श्राद्ध

बहुत काम हो गया है. इसलिए भी कहते हैं कुछ [illegible] है।
कमजोरी बहुत हो गयी है।
[illegible] डा॰ रामकिशोर राय [illegible] [illegible] आमंत्रण [illegible]
आनन्द मिले। बहुत सम्मान किया। [illegible]
आयोजन [illegible] किया।
[illegible] में [illegible] प्रसाद [illegible] भी पूजा [illegible] किया।
[illegible]
[illegible]
[illegible]

जिसके हृदयमें जगत्की आवश्यकता नहीं रहती, उसकी आवश्यकता जगत्को रहती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।५।
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।६।

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२७ आज छपरा [illegible] शर्माजी को [illegible]
श्री रामप्रसाद पाण्डेय के द्वारा उनका पत्र लिख भेजा।
श्री राजनारायण जोशी [illegible] पोस्टकार्ड लिखा।
इलाहाबाद का पत्र स्वामी राम आनन्द सरस्वती को लिखा। [illegible]
नारायणपुर कहीं किसी कुटिया रहते हैं। इसके पहले उन्हें
[illegible] के पते पर लिखा था - उसको पत्र वापस आ गया नारायणपुर
ही भेज दिया।

चरित्रकी पवित्रता ही नारीका सबसे बड़ा आभूषण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत। ११।
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा। रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ। १२।

सूर्यो० ५। ५८, सूर्या० ५। २४ — व्रत-पूर्णिमा, शरत्-पूर्णिमा

आज अमरावती [illegible] सुविधा ट्रेन से बक्सर कानपुर पहुँचा। विश्राम किया। कल प्रयाग जाकर पाच [illegible] यात्रा पर जाना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन।१३।
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते।१४।

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२३ — **पूर्णिमा, कार्तिकस्नानारम्भ**

आज पेंशन लेने महीनेभी लोग कानपुर पहुंचे।
रघुनाथ शर्मा के यहां कथा वे किया चल गये थे. रातमें
५८ से कवितों का दर्शन मोकेमेंट।
डा० देवेन्द्र वर्मा आगम पे. मार्केट. आये चौ०जानकीराम
को धनिकी कविकै दिया। कुर्ता मा रहकर नारसा०
प्राप्त हुए। प्रातःगोपालमाधव लेकर. धनपुर जाता है।

आजके संयमहीन तथा अविश्वासी युगमें विधिका पालन तथा श्रद्धाका संरक्षण बहुत ही कठिन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते। तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते।१५।
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्। रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।१६।

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२१

आज शाम पर ट्रेन से पाया नागेन्द्र।
वीरेन्द्र शर्मा - विक्रम - परजेन्द्र मिलगये। उनमे भात के
किसी प्रकार पातचमगया। वहाँ से परगना द्वारभाहि
के विवाह चु पहुँचे। विश्राम किया। डा० चन्द्रेश्वर मिश्र को
सूचना दे दी गई थी। वे प्रातः मिलेंगे।

जीव-जगत्की सत्ता व्यावहारिक सत्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च। प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च। १७।
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः। १८।

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ५।२२ — आज डा० चन्द्रशेखर मिश्र मिले। डिप्टी डाइरे.
श्री विन्ध्याचलप्रसाद सिंह भी मिले। मैं गाड़ी लेकर आये
और उन्हें स्टेशन तक पहुँचाया। उनकी इच्छा है कि
काशी कैलाश की [illegible] खोलें। वे लोग वहां एक विद्यालय
खुलवाना चाहते हैं. उनकी योजना तथा स्थान की दृष्टि [illegible]
जाने [illegible]। डा० चन्द्रशेखर मिश्र जी ने [illegible]
कहा तो मैं आश्वस्त हुआ। उन्होंने एक [illegible]
अपनी [illegible] भी पहुँचाया।

मनका सच्चा भाव होगा तो भगवान् उसे अवश्य स्वीकार करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति । गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति । १९ ।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते । २० ।

सूर्यो० ६ । ००, सूर्या० ५ । २१ — श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवाचौथ)

सावित्री कैनरा आठ वर्ष के लिये पांच हजार करके फिक्स्ड रुपयाकोष में जमा कर दिया। शान्ति मिली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो। किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते। २१।

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव। न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति। २२।

सूर्यो० ६। १, सूर्या० ५। २०

आज प्रातःकाल एक्सप्रेस से सहारनके
श्री राजेन्द्र राणा जी के निवास पर पहुँचे। गाड़ी वाहन के प्रबन्ध
न था। स्टा. से गोपाल कुमार तथा श्री राजेन्द्र राणा जी आये।
उनके निर्देशक वाहन मधु प्रेस से जाकर दिया।

शरणागत जीवको भगवान् शुद्ध करके माताकी भाँति छातीसे चिपका लेते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते । गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते । २३ ।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । २४ ।

सूर्यो० ६ । २, सूर्या० ५ । १९ — शनि

आज [illegible] डिस्ट्रिक्ट दिया पर
श्रीविश्वम्भर [illegible] [illegible] - [illegible] गाय आज
रखे हैं। दोपहर गाड़ी कैण्ट [illegible] लौटे।
समयपर मठ में पहुँचे। भोजन बनाकिया।
सहसराव से [illegible] मिलकर लौटे आये।
५ सं० गंगे डाक्टर - सेठ के अवकाशप्राप्त व [illegible] और
केदारनाथ उपाध्याय की माता पधारी।
उन्हें आपकी मौत से [illegible] [illegible] - [illegible]
[illegible] [illegible] स्वामी विमलानन्द [illegible]
लिये। बनाली उपाध्याय के लिये लिख दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च । शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च । २७ ।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः । १४ ।

सूर्यो० ६ । ३, सूर्या० ५ । १८ —— अहोईव्रत ——

आज [illegible] परमहंस एवं श्री रामनरेश पाण्डेय
[illegible] को लिखा। परमहंस नरहरि कुटि [illegible] की
लोगों को ले जाना था है। रामनरेश पाण्डेय को [illegible]
पेड़ के संबंध में लिखा तथा अरुणकुमार शर्मा - सालक के
यहाँ वाली सीढ़ी [illegible] लोगों के बारे में लिखा जो गाव
आठ वर्षों से बाकी है।
बीस रुपये के मंजन के लिये हरेराम को दिया।
दिन में सत्तू भोजन किया। प्रातः [illegible]
[illegible] तक [illegible] की गई।
श्री विनयकुमार शर्मा द्वारा एक लिफाफा पोस्ट कराया गया, [illegible]
[illegible]। आज [illegible] [illegible] विनयकुमार शर्मा
की [illegible] भी नीति से नहीं जा सके।
उनके [illegible] जो भी [illegible] है किन्तु [illegible]
समझा जायेगा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।५।

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ५।१५ — **रम्भा एकादशीव्रत, वत्सद्वादशी**

आज इंडिया-ब्रांची डा० [redacted] डा० रामकिशोर(?) को अध्यक्षी जाने पर पत्र लिखा शिलान्यास में पुन दिलाया।

× × ×

महाकलपुर के श्री राजू शर्मा पुत्र-इन्द्रजीत शर्मा आदि हिन्दू गर्ग लक्ष मंगावा। सिद्धान्त-रहस्य मंगावा इत्यादि के लिये भी पैसा दिया। व दीपावली बाद कलकत्ता जायेंगे। माघ मे मठ में आकर दीक्षा ग्रहण करेंगे। वैसा उनके मन का संकल्प है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते॥९॥

सूर्यो० ६।७, सूर्यां० ५।१३ — श्रीहनुमज्जयन्ती, नरकचतुर्दशी

श्री राजेश्वर दासजी आये और गये। ये चित्रकूट पुनः अयोध्या बाद में मोतिहारी पुनः मुजफ्फरपुर और अंत में सिवान आदि जिले में कई स्थानों में कथा करते हुए चैत तक लौटेंगे और रामनवमी को पुनः अयोध्या आयेंगे।
राजापुर के श्री शिवदत्त मिश्र आये और गये। उनसे तिकरी के श्री सिद्धनाथ दास एवं उनके भतीजे देवदत्त मिश्र को सूचना देकर बुलाया।

आसक्तिवाला मनुष्य दूसरोंका हित नहीं कर सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।१०।
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।११।

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१३ — **सोमवती अमावास्या, दीपावली**

आज दीपावली - महालक्ष्मीपूजन का कार्य सम्पन्न हुआ - श्री मनोज कुमार सामन्त ने भी दीपावली देखी .. [illegible] भी पञ्चकोशी आनन्दजी। भोजनकर विश्राम किया। होटल वाले ओर से पूड़ी-तरकारी-खीर बनी थी। ..बारह बजे [illegible] विश्राम [illegible]।

केशवसे बढ़कर कोई देवता नहीं, गङ्गाके समान कोई तीर्थ नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्। १२।
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा। पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः। १३।

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१२ — **गोवर्धनपूजा, अन्नकूट**

आज गोवर्द्धनपूजा आदि रहा। सायंकाल ने [illegible]
स्वामी शिवानंद सरस्वती (नरसी) उन्होंने जगन्नाथ [illegible] - [illegible]
और [illegible] आपस में। ईरान के वातावरण में [illegible],
पर नहीं गये... उनकी पत्नी भी [illegible] हैं। [illegible] -
[illegible] सबकी मर्यादा का उल्लंघन करते हुए चल रही
हैं। दूसरा चारा ही क्या है?

धर्मसे बढ़कर कोई बन्धु नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥१४॥
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥१५॥

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ५।११ — **यमद्वितीया (भैयादूज)**

आज मिर्जापुर के श्री शैलजा[illegible] पाण्डेय, जो राबर्ट्सगंज रहते हैं सहसा आये और [illegible] करते हुए [illegible] में [illegible] [illegible] कर चले गये। नगर महापालिका अधिकारी वीरेन्द्र के साथ [illegible] [illegible] और मठ की स्थिति [illegible] [illegible] कर के चले गये। इन्हें स्वामी जी की कृति '[illegible]' पुस्तक, डॉ० [illegible] की [illegible] पुस्तक [illegible] [illegible] [illegible] प्रदान की गई। स्वामी [illegible] [illegible] पुस्तक भी दी गई। पाण्डेय जी सुनाते [illegible] हैं। अचानक निधन [illegible] उनकी माता भी [illegible] नहीं। [illegible] [illegible] दे गये। [illegible] सावित्री के [illegible] मन में दे दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।१६।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।१७।

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ५।१०

आज प्रातः प्रमोदकुमार दफ्तरीके यहां गये।
उनके शाम तक लेटरपैड छापकर देनेको कह-कर नहीं देगया।
वोल्थुरके राजेन्द्र शर्माकी पत्नी आगई हैं, उनका लड़का तो
भी विनयकुमार शर्मा यहां रहता ही है। हमलोग प्रमोदकुमार के
घरसे आनेतक लगभग सेवा सहायताकी।
आज होली सिटी से. रामकेश्वर पांडे का भेजा हुआ कुछ
सामान - घी, सत्तू, गेहूं के बाद [illegible] देकर चलागया।
सिवानके एक युवक जो [illegible] [illegible] लेकर आये थे,
उनके - मोबाइल 10960 [illegible]। वे यहां सरकारी सेवामें
[illegible] [illegible] अधिकारी हैं। [illegible]
के योग में रहते हैं। आलोक जी. उन्हें प्रमोदके लेकरगया..
~~[illegible]~~
वे पाठक जी हैं पर "पुराने" [illegible] हैं। सिखाते हैं।
उन्हें गायत्रीका की प्रति दीगई है। पुनः आकर मिलेंगे।

इस जगतीतलमें मातासे बढ़कर बन्धु कोई नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।१८।
यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।१९।

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ५।१० — आज अचानक डाकिया ने आकर भगवान के
पाँच सौ रुपये, सहज दिये। ज्यादा करके आ. [illegible]
किसी व्यक्ति ने भेजा था. मुझे तो पता भी नहीं कि कौन
है वह? भगवान के भक्त का [illegible] अनुभूति को दे
दिया. [illegible] की [illegible] में।

माता पृथ्वीके समान क्षमाशील होती है, अतः सबसे अधिक वन्दनीय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः।१५।

सूर्यो० ६।११, सूर्या० ५।९ आज सबेरे श्री सुरेन्द्र नाथ राय को एकबार
फिरसे समाचार जानने का प्रयास किया। मध्यान्ह में अपने शिष्य
श्री हिरालाल चौधरी - शिवचरण [illegible] - को नागपुर भी पत्र
भेजकर उनका समाचार जानने का प्रयास किया जो बहुत दिनों
से नहीं आते - लिखते क्योंकि वे [illegible] जाते [illegible] हैं।
आज विजय कुमार द्वारा गुप्तेश्वर पंडित को बुलवाया
गया। फिर वे कहते हैं कि उन्होंने कहा कि मैं कल में हूँ।
जो लख्य हो।..

पिता-माता, गुरु, अनाथ और अपने आश्रित कुटुम्बीजनका जो पालन नहीं करता, वह महापापी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।३।
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।४।

सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ५।८

आज संध्या हरेराम शर्मा [illegible] आये।
पञ्चमी का [illegible] प्रसाद लिया। संध्याको [illegible] के [illegible] गये।
अभी तक उनको "लेटरपेड" [illegible] भी नहीं है। [illegible]
इसके पूर्ण के बाद [illegible] पहुँचा दिया जायेगा।
[illegible] के समिति [illegible] बंद है। [illegible] ने गाड़ी
[illegible] आरक्षण किया है। [illegible]

आसक्तिरहित मनुष्यसे स्वतः-स्वाभाविक प्राणिमात्रका हित होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता । मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।५।
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।६।

सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ५।७ ——— गोपाष्टमी

आज होटल को [illegible] ५ किलो [illegible] मंगाया।
५.५० [illegible] [illegible] मिश्री ५ किलो ..१४ [illegible] [illegible]।
[illegible] मंगाया [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] मंगाया।
[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible],

स्वयं आचरण करके कही गयी बात गोलीसे भरी बन्दूकके समान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।७।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्। अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।८।

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।७ —— अक्षयनवमी ——

आज [illegible] के सामने [illegible] गेहूं मैं
खरीदवार को दिया। [illegible] बजे -
[illegible] किया। [illegible] वासुदेव भगवान
भगवान की भक्ति [illegible] दिया।
आज देवीपुर से श्री राजेन्द्र शर्मा आदि और अनेक लोग
पहुँचे। [illegible] उन्होंने श्री राजेन्द्र
शर्मा की प्रेरणा से [illegible] कीर्तिकर [illegible]
के लिए दिए। उनको [illegible] देवी की [illegible] की एक
प्रति तथा [illegible] को
एक प्रति उन्हें सादर दिया। राजेन्द्र शर्मा जी [illegible]
[illegible] करेंगे।
उन्होंने [illegible] पूजास्थल दिया।

कर्तव्य-कर्म करनेमें आलस्य और प्रमाद नहीं करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः।११।
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान्।१२।

सूर्यो० ६।१५, सूर्या० ५।६ **प्रबोधिनी एकादशीव्रत, श्रीतुलसी-विवाह**

आज सभी एकादशी व्रत है। प्रमोद कुमार जी का इलाज भी है - [illegible] [illegible] आदि से [illegible] किया गया। बच्चों के लिए भोजन बना। [illegible] उन की माता जी [illegible]। [illegible] से [illegible] है। आज [illegible] के [illegible] [illegible] बने हैं [illegible] [illegible] दवा [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् । इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् । १३ ।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि । ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी । १४ ।

सूर्यो० ६ । १६, सूर्या० ५ । ६

आज प्रातः ८ बजे ही प्रमोद [illegible] आये।
वे पूर्णिमा या उसके [illegible] लेंगे। [illegible]
वे अपनी पत्नी से भी [illegible] की बात कह गये हैं।
आज [illegible] "ईश्वरीय [illegible]"
उसके [illegible] भी [illegible] गये हैं।
शेष [illegible] देंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः। १५।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ। १६।

सूर्यो० ६। १७, सूर्यां० ५। ५ — प्रदोषव्रत

आज रविवार व्रत रहा। पिसी सिंघाड़ा उपवास किया-
कराया। स्वाद वाली चटनी थी। (पीसी से कुछ भोजन किया।
रात में पीला दूध बनाकर ग्रहण किया
एक सौ रुपये बचा रखा था। साठ रुपये मजदूरों को
बच्चों की कम्प्यूटर फीस के लिये तथा शेष चालीस रुपये
दूध आदि के लिये दे दिये।

जो अपनी कुलीना पतिव्रता युवती पत्नीका संतानरहित अवस्थामें त्याग कर देता है, उसका धर्मसे पतन हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः । यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ।१७।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः । मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ।१८।

सूर्यो० ६ । १७, सूर्या० ५ । ५

आज [illegible] कोलकाता से इन्द्रकुमार राम
[illegible] संस्थान पहुँचे। वे राजनीति में भी हैं।
उन्हें [illegible]
श्रीमती [illegible] शर्मा [illegible]
पुस्तक "[illegible]" की [illegible] उनका
स्वागत किया।

"[illegible]"
[illegible] १२० वर्षों में [illegible]।

इसी प्रकार "[illegible]" की
[illegible] से प्रकाशित [illegible]
[illegible]
[illegible] — [illegible] के [illegible] हैं, [illegible]
[illegible]।

जो सदा गौ, ब्राह्मण, देवता, वैष्णव, श्रीहरि-कथा एवं श्रीहरिकी भक्तिसे द्वेष करते हैं, उनके भारसे पृथ्वी पीड़ित होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् । क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु । १९ ।
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि । मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् । २० ।

सूर्यो० ६ । १८, सूर्यां० ५ । १४ | पूर्णिमा, कार्तिकस्नान.समास, श्रीनानक-जयन्ती

आज देवगुरु मिश्र - सिजरी अपनी पत्नी आईं। राजेन्द्र शर्मा।
बेतीपुर आये। कुछ गेहूं मील आये। कूआ आदि देखे। उनकी
धर्मपत्नी [illegible] [illegible] [illegible] वे [illegible] होते हैं
वे [illegible] लिये आई थीं। वे [illegible] हैं। [illegible] [illegible] में
भिन्न हैं। सहयोगिनी एवं शांत एवं गंभीर हैं।
कुछ [illegible] लोग मिले। इनका नाम [illegible]
उसे दो रुपये लकड़ी [illegible] [illegible] [illegible] दिये।
दूसरे के लिये पैसे दिये। [illegible] है [illegible]
है। [illegible] लौटेंगे। [illegible] करेंगे। यह [illegible]
बिना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
यह [illegible] समाज है, जो है [illegible] [illegible]
ठीक नहीं। दोनों हम [illegible] नहीं [illegible] काम।

x x x

परसों [illegible] के सम्पादक [illegible]
प. [illegible] ([illegible]) को [illegible] [illegible]
के [illegible] में [illegible] - पं. परमेश्वर शर्मा
'शिवताण्डव स्तोत्र' की पुस्तक "[illegible] एवं अनुवाद" जो उनकी
यहांसे प्रकाशित होनी है, [illegible]। उनकी [illegible] मुझसे
सन्देश भेजने का आग्रह किया।
मैं [illegible] [illegible] [illegible] की दो पुस्तकें
[illegible] - [illegible] सांस्कृतिक [illegible] तथा
[illegible] एक सांस्कृतिक [illegible] चिन्तन
कर रहा हूं। [illegible] त्याग कर
दिया [illegible] सिद्ध होगा। यह सांस्कृतिक [illegible] का मार्ग है।

कर्तव्यपालनमें व्यक्तिगत स्वार्थका त्याग करना पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् । २१ ।
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः । आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् । २२ ।

सूर्यो० ६ । १९, सूर्या० ५ । ४

आज मनरो आया.. भाऊजी चिट्ठी का पैकेट दे गया
मैंने। पुस्तकालय का आदेश पारित कर दिया।
[illegible] नगर गया। पाण्डेय जी का इन्तजाम [illegible]।
लौट कर मैंने सुखी भाऊजी को पंचांग-व्याख्यान लिखकर दे
दिया। पांडेय जी आगे पास रखा.. बच्चों के लिए।

कर्तव्यपालनमें अधिकारकी प्रधानता नहीं रहती; प्रधानता रहती है त्यागकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः । दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ।५।
कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः । मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ।६।

सूर्यो० ६ । २२, सूर्या० ५ । ३

आज प्रमोद कुमार पाण्डेय सबको लेकर आये
एवं कल के प्रयाग में देवराज के [illegible] जाएंगे
[illegible] और एक रात [illegible] के बाद वापस आएंगे।
देवराज का जाना जरूरी है। वह उनकी पत्नी की [illegible] गयी हैं
तथा [illegible] की कमाई [illegible] भी चुके हैं।
गाड़ी [illegible] सकते हैं। [illegible] की
[illegible] की [illegible] हैं।
रविवार का [illegible] नहीं खाया।
रात में [illegible] किया। [illegible]
आज [illegible] की पत्नी [illegible]
को पहुँची। [illegible] है मेरे
[illegible] किया किये हैं।
आज [illegible] के [illegible] पर [illegible]
के [illegible] में गया। [illegible]
के [illegible] था। [illegible]
वापस आ गये। [illegible]
[illegible] में वापस आ गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः। यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु।७।
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः । रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।८।

सूर्यो० ६।२३, सूर्या० ५।३

आज प्रमोदकुमारजी के [illegible] मोटर में [illegible]
चला गया। प्राचीन [illegible] कुछ पैसे ले [illegible]। मैं तो [illegible]
हूँ जी। यह मठ में रहनेवाला कोई नहीं। [illegible] आये।
मंटू यहीं है। बीमार पड़े हैं। अन्नपूर्णा उसे [illegible] पिताजी [illegible]
ले गईं। लड्डू गोपाल यहीं आते जाते रहते हैं। रात में गिरिजा
के [illegible] लड़के के डेरे पर गया। बहुत लोग इलाहाबाद [illegible]
जाते आते रहते हैं। [illegible] की।
पं. [illegible] को तथा डॉ. [illegible] मैंने [illegible] दिया।
पाण्डेय सुखदेव शर्मा आये। [illegible] पत्रपत्रिकाओं के अपने
[illegible] लोगों को [illegible] संबंध में [illegible]
प्रेषित किया। [illegible] आते जाते रहते हैं। [illegible] का
कभी मेला नहीं होता।
मेरे चेले [illegible] - [illegible] हैं।
[illegible] मर्यादा [illegible] जायेगा।

महापुरुषोंकी प्रताड़ना भी कल्याणके लिये ही होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः। ९।
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् । उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।१०।

सूर्यो० ६।२४, सूर्या० ५।३ आज प्रभात कुमार [illegible] के पास आए। वकील को लेके
प्रस्थान नहीं था उनके। वे कृष्णबिहारी जी के आने के समय में
उनके कोर्ट में प्रतीक्षा करते रहे। किन्तु सम्भवतः कृष्णबिहारी
शर्मा २ दिसम्बर को आवेंगे। वे प्रयाग [illegible]
उनके [illegible]।
आज १०.३० के लगभग [illegible] के विश्वनाथ [illegible]।
किसी प्रकार [illegible] भोजन किया।
[illegible] नहीं [illegible] है।

त्याग–वैराग्यका गर्व धनवानोंके धन–मदकी अपेक्षा बहुत अधिक खराब है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

३३२ दिन] **मार्गशीर्ष कृष्ण ९, सं० २०५९, गुरुवार, NOV. 28. 2002** **[गीता**

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते। १३।
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते। १४।

सूर्यो० ६। २५, सूर्या० ५। ३

आज त्रिशूलियामें पकड़कर बनारसको
और शीघ्र स्वयं चले गये। प्रमोद कुमार मुझे पहुँचा कर
घर वापस चले गये। मैं ना सेवा और आराम की इच्छा से
वहीं रहता हूँ। जलपान किया [illegible]
तथा मामले का मुख्य। शाम में [illegible]
[illegible] [illegible] भोजन किया। बाद में [illegible]
[illegible] आये। [illegible] [illegible] कुमार [illegible]
[illegible] [illegible]। उन्होंने [illegible] [illegible] समाज में
[illegible] की बातें कहीं। मैंने उन्हें [illegible]
कि मैं [illegible] स्वयं [illegible] पढ़ूँगा।
[illegible] [illegible] [illegible] पाखंड नहीं है।

निन्दनीय कर्मसे डरना चाहिये न कि निन्दासे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् । स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते। १५।
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः । भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते। १६।

सूर्यो० ६। २६, सूर्या० ५। ३

आज प्रातः दस बजे अस्पताल पहुँचे। रामपुर के श्री मनमोहनलाल मिले। वे वहाँ के स्थानीय ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष हैं। वहाँ से कचहरी नाजिर के कार्यालय में गये। दिन भर बैठे रहे। पर नाजिर कार्यालय वाले राय मिश्रा जी नाजिर को कहते रहे देने में [illegible] वकील की उपस्थिति लगी। पर पैसा नहीं प्राप्त हो सका। नाजिर ने कहा कि शनिवार को पैसे मिलेंगे। शनिवार को भी नाजिर की हाजिरी कचहरी पर पैसा नहीं मिल सका। फिर [illegible] पावती का हस्ताक्षर बनाना तथा बैंक की पुस्तिका भी देना बाकी रहा। [illegible] पैसा प्राप्त करके [illegible] सोमवार को वाराणसी में पुस्तकालय बैठक में आयेंगे। रास्ते में [illegible] से ही [illegible] १०० रुपये [illegible] ७० रुपये की पापड़ी [illegible] बच्चों तथा अतिथि सत्कार के लिये। प्रयाग [illegible] पकड़कर काशी पहुँच गये। राजगुरुमठ में आकर, यहाँ श्री रामप्रसाद पाण्डेय ने झगड़ा [illegible] साथ [illegible] के ही [illegible] गये। वे कन्या के विवाह की [illegible] में [illegible] रहे हैं। [illegible] पर [illegible] कुछ नहीं [illegible] पर [illegible] बीमार हो गये।

प्रेय अविद्या है और श्रेय विद्या।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते। १७।
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्। क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्। १८।

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।३ — **उत्पन्ना एकादशीव्रत**

आज एकादशी पी. गुड्डू [illegible] - [illegible] हुआ।
[illegible] [illegible] भामी ले गये। उसको [illegible] [illegible]
उपयोग करता हूँ। विशेषतः [illegible] के लिये रखता हूँ।
स्वामी [illegible] आया हुये हैं। उन्होंने अपना [illegible]
कहा समझाया।

भगवान् आत्माके भी आत्मा, परमात्मा हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्। १९।
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्। २०।

सूर्यो० ६। २८, सूर्या० ५। ३ आज भी इन्द्रजीत शर्मा रामप्रसाद पाण्डेय राजगुरु मठ में ही रहे। आज भोजन के स्थान से कुछ लोगों को ही जलपान हुई तथा भीमाचार्य मिश्र जी ने जलपान किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥२२॥

सूर्यो० ६।२९, सूर्या० ५।३ — सोमप्रदोष

आज रामदत्त इन्द्रजीत शर्मा आदि सकटमोचनकी ओर
श्री तुलसी मानस मन्दिर गये दर्शन किया। प्रसाद लेकर
[illegible] आये। उधे प्रमोदकुमार बच्चों तथा [illegible]
को बाट दिया। [illegible] के ओर से [illegible]
की बात [illegible] हुई।
श्री रामलाल बड़ा आगे कल्याणजी कुछ [illegible]
[illegible] आदि लाना चाहते हैं। [illegible]
आप तो मशीनों में संलग्न होगा। उनके [illegible]
[illegible] बड़ा [illegible] नहीं। [illegible]
[illegible] है। टुकड़े टुकड़े दो तीन बार में [illegible]
किया जा सकता है।
श्री [illegible] चन्द्र भी [illegible] से आ गये हैं। वे भी
[illegible] के ओर से मिलेंगे।
दूध आदि उन्होंने मंगाये। [illegible] दूध आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा। २३।
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्। २४।

सूर्यो० ६। २९, सूर्या० ५। ३

आज भोर में चार बजे के श्री रामप्रसाद पाण्डेय हवड़ा [illegible] डिलक्स से प्रस्थान कर गये। वे [illegible] बड़े साथ रमेश के गये।

पश्चात हमने प्रमोद को जेनरेटर के लिये दिया फिर हमने [illegible] अन्नपूर्णा के तेल के लिये दिये। फिर हमने [illegible] के लिये पांच सौ [illegible] बड़े बड़े हमने मैंने [illegible] एवं [illegible] को।

पश्चात हमने अन्नपूर्णा के [illegible] का प्रबन्ध [illegible] दिये। दिया। फिर हमने [illegible] [illegible] [illegible]।
फिर हमने [illegible] श्री [illegible] [illegible] को [illegible] किया।

पश्चात हमने प्रमोद को [illegible] - [illegible] की [illegible] से फोटो [illegible]: [illegible] के [illegible] को [illegible] दिया। [illegible] में [illegible] वह [illegible] के लिये दिया।

निरन्तर आसक्तिरहित रहते हुए जो विहितकर्म सामने आ जाय, उसे कर्तव्यमात्र समझकर कर लेना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते। त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः। १०।
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः। यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते। ११।
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्। भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित्। १२।

सूर्यो० ६। ३३, सूर्या० ५। ३ **श्रीराम-विवाह**

आज मठ के पुनर्निर्माण की जगह समाज के वरिष्ठ लोगों। श्री [illegible] प्रमोद कुमार दीक्षित की [illegible] पर [illegible] गई थी। [illegible] श्री कृष्ण बिहारी शर्मा, [illegible] के [illegible] वगैरे तथा स्थानीय [illegible] [illegible] [illegible] सभ्य लोग, तथा महामहोपाध्याय [illegible] शर्मा, साधु [illegible] आदि पधारे। कोई [illegible] नहीं हुआ। [illegible] [illegible] बातें हुई। सभा विसर्जित की। अन्त में श्री कृष्ण बिहारी जी अस्वस्थ होकर चले गये। अतः [illegible] पहले मठ में [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे । साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्।१३।
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्। विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्।१४।
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः। न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः।१५।

सूर्यो० ६।३४, सूर्या० ५।३

आज [illegible] भी [illegible] थे और। [illegible] की
[illegible] तथा [illegible]
दिये। मैंने आज [illegible] शर्मा जी को [illegible] दिया है
[illegible] में दिये। [illegible]
[illegible]" को भेज दिया। [illegible]
[illegible] उनको [illegible] दवा [illegible] लिया।
इसके [illegible] नहीं [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible]
दिया। [illegible] मैंने श्री [illegible]
[illegible] दिया।
सायंकाल [illegible] आ गये। [illegible]
[illegible]।
रात्रि को घंटे गीता-उपनिषद् तथा अन्य धार्मिक [illegible]
का विवेचनात्मक सत्संग होता रहा।

[illegible] आया। [illegible]
दे गया। [illegible] "[illegible]
का इतिहास" [illegible] प्रकाशनार्थ [illegible]
[illegible]।

संसारके सभी सम्बन्धी एक-दूसरेकी सेवा (हित) करनेके लिये ही हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः। पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः।१६।
यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते। हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते।१७।
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना। करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः।१८।
सूर्यो० ६।३५ सूर्या० ५।३

आज [illegible] दुर्गा भगवती [illegible]
को - मैं मैत्री गार्गी को [illegible] [illegible]। राजगुरु मठ से राम
को दिये गये गोरखपुर [illegible] १०० ग्राम की [illegible]
तथा आया मिली छोहाड़ा [illegible] के लिये।
स्वामी परमप्रकाशानन्द को रात में ओढ़ने के लिये ऊनी
ऊनी चादर दिया वे प्रातः मैं [illegible] में [illegible]
में था तो वे ओढ़ते [illegible]। प्रातः [illegible]
[illegible] डेरे पर उन्हें [illegible]
नहीं [illegible] [illegible]। [illegible]
[illegible] है वे [illegible] की [illegible]
है। [illegible] तथा [illegible] रहते हैं।

सत्का अनुभव करके निःसंदिग्ध होकर कर्तव्यका पालन करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छृणु तान्यपि। १९।
ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः। अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्। २०।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते। अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्। २०।
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्। वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्। २१।
सूर्यो० ६। ३६, सूर्यां० ५। ४

याद रके विना कष्ट होता है। [illegible] लोग
रहते हैं। कुछ सेवा करते हैं तथा मठकी प्रबन्ध-व्यवस्थामें
भी कुछ हाथ बंटाते हैं। किसप्रकार से भी [illegible] मदद मिलती
है। हेरफेर [illegible] चल जाने से शून्य-सा लगता
है। मठ नहीं रहना पड़ता है. अतः प्रातःकाल आते जाते
रहते हैं। पूज्य गुरुजन शर्मा-बादर अपने मिलाप से
ओकार [illegible] लौटते रहते हैं।
वफाती को [illegible] "शिवाली पावन गंगा के काशी विहार"
प्रकाशनार्थ दे दिया। पं० गुरुश्याम जी ने कहा कि ७०० कॉपियां
[illegible] राम आदम अपने बाए प्रकाशित पुस्तक का
हिसाब देंगी तब आगे पता दीजिएगा।
आज कन्नौज के [illegible] जी [illegible]
की [illegible] और [illegible]
[illegible] ले आये। [illegible] सेवा [illegible]
को [illegible] पहुँचेगा।

मनुष्यलोक मोक्षका खुला द्वार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। ३७।
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम्। परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्। ३८।
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्। ३९।

सूर्यो० ६।४०, सूर्या० ५।६

आज लिफाफा मंगाया। पांच और पोस्टकार्ड
१ दर्जन मालवीय साहित्य। पांच दर्जन साहित्य [illegible]
दो पत्र लिखाये मैं। डा० गोविन्द नाथ शर्मा जी को लिखा।
तथा राष्ट्र प्रबोध ग्रंथमाला कार्यालय के अधिष्ठाता
श्री [illegible] शर्मा जी को। [illegible] के संबंध
में तथा [illegible] प्रकाशक [illegible]
एवं [illegible] के संबंध में।
[illegible] शर्मा।
[illegible]
[illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः। नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति।४९।
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे। समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा।५०।
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च। शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च।५१।

सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।८ आज रविवार व्रत रहा। दूध कोलिथ्री
जोस [illegible] पिये। दिन में कुछ कुछ भोजन किया। रात में कुछ नहीं
शरीर में कष्ट था। देर रात के बाद निकली आँधि।
विनय कुमार बंगलोर चले गये हैं। मंगलवार को लौटेंगे।
श्री स्वामी करुणानन्द जी [illegible]। उनके [illegible] पैर में [illegible]
[illegible] रहा। उन्हें [illegible]।
देर रात में [illegible] स्वामी [illegible] के [illegible] में
[illegible] श्रीमद्भागवत [illegible] में गये हैं।
उन्हें [illegible]
लोक भाषा [illegible] की ऐतिहासिक [illegible]
[illegible]
[illegible] तथा [illegible] के हिसाब [illegible]
[illegible] देंगे।
उनसे [illegible] से कुछ [illegible]।

ईश्वरप्रीत्यर्थ कोई कर्म किया जाय तो वह कर्म बन्धनकारक नहीं हो सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः। ५२।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्। विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते। ५३।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्। ५४।

सूर्यो० ६। ४२, सूर्या० ५। ९ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज दो लिफाफे २८ [illegible] (पोस्टकार्ड दो लिफाफे तथा [illegible])
भेजे दो तथा. मैंने पत्रिका को [illegible]। गोदावरी लिफाफे में मंगाना।
इच्छा - राज्य के एक पोस्टकार्ड पर पत्र [illegible] दिया [illegible] लौटने हेतु
संकेत किया। सहयोगी [illegible] पत्र द्वारा उत्तर।
स्वामी नन्दकिशोरानन्द जी महाराज को लिफाफे में विशेष पत्र लिख भेजा।
भारत भूषण - शिवबालक शर्मा - श्री शिवचरण [illegible] के पुत्र
श्री रामचरण [illegible] को लिफाफे में - [illegible] पत्र
पत्र लिखकर छोड़ा। श्री [illegible] में
[illegible] हैं। वे कहते हैं। स्थिति [illegible]
यह पत्र नहीं [illegible] अतः [illegible] है।
इच्छा राम प्रसाद पाण्डेय को पोस्टकार्ड पर एक पत्र [illegible]
भेजा। विवाह के लिए - [illegible] (ओम्प्रकाश शर्मा) के पुत्र के लिए
शुभकामना संकेत किया।

अपने ऊपर कर्तृत्वका अभिमान न लादा जाय तो मनुष्य कर्मसे बँध नहीं सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः। ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।५५।
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः। मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्।५६।
चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः। बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।५७।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।१

आज विजय दिवाकर में जल्दी उठ गये। मैंने दिये हैं बैंक [illegible] के लिये कुछ लेने को आये तथा [illegible] दो किलो आटा ले आये। पांच पाव दूध मंगाया पन्द्रह रुपये लगे। रात में मछली खाने को मिली और प्रायः अनुकूल नहीं होती। रात में उठकर पानी पीना पड़ा।

प्रो० कुमार जी उनके [illegible] के क्रम में डिक्टेट कुछ प्रारम्भ [illegible] डिक्टेट तक चला। हर्ष-चरित - एक सांस्कृतिक अध्ययन - डा० वासुदेवशरण अग्रवाल कृत का अध्ययन [illegible] करता रहा। अर्थात् संस्कृत [illegible]

मंगल का इतिहास [illegible] के प्रसंग में कुछ और [illegible] रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।५८।
यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे। मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।५९।
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा। कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।६०।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।१०

आज इस भाग को आदि मंगाये फुल आज तक लिखा।

× ×

मेरी हस्तलिखित पुस्तक "चौधरी परिवार मगरावें की ऐतिहासिक चरित गाथा" – क

~~[illegible]~~

× × ×

"चौधरी परिवार मगरावें की ऐतिहासिक चरित गाथा".

विनम्र शील के संस्कार से अनुप्राणित, लोक-मंगल के कार्यों में अपने अनमोल जीवन को होम देने वाले भ्राता श्री राम नगीना-राम-दास, वाराणसी के सुत,
श्री रामचन्द्र राय एवं रामप्रसाद राय, श्री जगनारायण राय, मगरावें तथा श्री अशोक पाण्डेय-रामपट्टी-सिमरी की पुण्य-स्मृति में उनकी कीर्ति-पताका फहराते रहने के लिये समर्पित है। जिनके लिए मेरे अन्तःकरण में भारी ममता है।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।६१।
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।६२।
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया। विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।६३।

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।१०

आज मध्याह्न साढ़े बारह बजे [illegible]
श्री उदयीभ राय शर्मा का शोकसूचक पत्र। चिरंजीव
श्री कमलाकान्त शर्मा श्री [illegible] का प्राप्त हुआ।
एक समवेदना पत्र लिखकर तैयार किया। [illegible] भेजने वाले
[illegible] दो लिफाफे मँगाया। एक लिफाफे में
श्री प्रमोद कुमार दीक्षित ने पता लिखा।
श्री शारदा प्रसाद राय - बहुत सज्जन आ पहुँचे। उन्होंने [illegible]
का [illegible]। पाँच रुपये लिफाफा, पाँच रुपये [illegible] स्कूटर,

संसारके जितने भी नेह-नाते हैं, सभी क्षणभङ्गुर हैं, इस शरीरके साथ नष्ट हो जानेवाले हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection